The Indian Press Series of New Geographies

THE ANGLO-VERNACULAR MIDDLE GEOGRAPHY

PART III

PRELIMINARY GEOGRAPHY OF ASIA

For Class VI of Anglo Vernacular Schools in the United Provinces

BY

L. V. NOBLE OJHA B.A. Hons (Lond) L.T. (A

Sometime Gilchrist Student University College London
Professor and Head of the Department of Geography
Ewing Christian College Allahabad

[REVISED HINDI EDITION]

ALLAHABAD
THE INDIAN PRESS, LTD
[illegible]

Price [illegible] annas

PRINTED AND PUBLISHED BY K. MITTRA, AT
THE INDIAN PRESS, LIMITED, ALLAHABAD

PREFACE

This series provides a course in Geography suitable the Anglo-Vernacular Middle Schools according to syllabus laid down in the school curriculum

The main objects that I have kept in view in the paration of this series may be set down as follows

I have endeavoured to awaken the interest of young pils in the study of the world by treating of the th as the home of man The human side of graphy has been emphasized throughout I have pted the narrative form and have described as fully the space in the different volumes has allowed, the erent means of livelihood, and industrial processes that such expressions as 'farming,' 'lumbering,' silk ture, etc may be properly understood

The treatment is progressive becoming more ailed and bringing in more difficult ideas as the pils advance from one class to another

A large number of simplified relief maps, climatic ps and maps showing the distribution of natural etation economic products and human occupations, ether with a large number of pictorial illustrations e been added to help the pupils in forming correct ntal pictures of the various parts of the world and life therein

ILAHABAD
uary 1934

I. V N O



An Arab

विषय-सूची

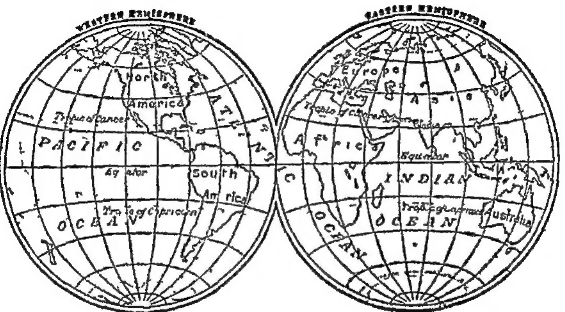
एशिया का प्रारम्भिक भूगोल

पहला प्रकरण

एशिया की स्थिति, सीमा और विस्तार

दुनिया के नक्शे या पृथ्वी के गोले को गौर से देखो तो मालूम होगा कि सारा स्थल भाग दो बड़े समूहों में बँटा हुआ है। पहला समूह नई दुनिया (New World) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें उत्तरी अमरीका (North America) और दक्षिणी अमरीका (South America) ये दो महाद्वीप हैं। दूसरे समूह में, जिसको पुरानी दुनिया (Old World) कहते हैं, स्थल के तीन टुकड़े हैं। इनमें से दो अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के महाद्वीप हैं और तीसरे टुकड़े का नाम यूरेशिया (Eurasia) है, जिसमें योरप और एशिया (Europe and Asia) ये दो महाद्वीप हैं।

आओ, हम पहले यह देख लें कि ये दोनों महाद्वीप एक दूसरे से अलग हैं या नहीं। यूरेशिया के प्राकृतिक नक्शे में एशिया और योरप के मध्य की सीमा को देखो। यह सीमा यूराल पर्वत (Ural Mountain) और यूराल नदी (Ural River) के बराबर बराबर चली गई है। इस सीमा के दो तरफ़ एक ही चौड़ा और बड़ा मैदान फैला हुआ है। यूराल



The World in Hemispheres

इतना नीचा है कि उस पर से होकर एक तरफ के लोग आसानी से दूसरी तरफ आते जाते रहते हैं, इसलिए एशिया के पश्चिम में स्थल की कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। इस सीमा के दोनों ओर के निवासी एक ही जाति के हैं और एक ही राज्य के अधिकार में हैं।

एशिया महाद्वीप के दक्षिणी और पश्चिमी सिलसिले योरप के दक्षिण में अटलांटिक महासागर (Atlantic Ocean) तक फैले हुए हैं। इसलिए बनावट के अनुसार एशिया और योरप को एक ही महाद्वीप कहना ज्यादा ठीक होगा। परन्तु इन दोनों के इतिहास और सभ्यता में बहुत बड़ा अन्तर होने के कारण आरम्भ से ही ये दोनों महाद्वीप एक दूसरे से पृथक माने गये हैं।

विस्तार में एशिया सब महाद्वीपों से बड़ा है। सारे स्थल के एक तिहाई भाग में केवल यही महाद्वीप फैला हुआ है। जन सख्या की दृष्टि से तो एशिया सारे स्थल भाग का आधा है क्योंकि ससार के आधे लोग यहीं बसे हुए हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि एशिया के प्रत्येक भाग में घनी आबादी है। वास्तव में एशिया के कुछ भाग—जैसे ऊँचे पहाड, और रेगिस्तान—प्राय निर्जन हैं परन्तु कुछ भाग—जैसे नदी के किनारे के मैदान—अधिक उपजाऊ होने के कारण बहुत घने आबाद हैं।

एशिया महाद्वीप १° ~~उत्तर~~ दक्षिणी अक्षांश से लेकर ७७° उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। यानी एशिया का दक्षिणी भाग विषुवत् रेखा से बहुत समीप और उत्तरी भाग उत्तरी महासागर तक फैला हुआ है। उत्तर से दक्षिण तक यह ५,००० मील से अधिक लम्बा है इसलिए इसमें हर तरह का जल वायु पाया जाता है। एशिया ही में दुनिया के सबसे अधिक गर्म और सबसे अधिक ठण्डे स्थान पाये जाते हैं। किसी स्थान के पेड़ पौधे उस

स्थान के जल-वायु पर निर्भर होते हैं इसलिए यहाँ लगभग हर प्रकार के पेड-पात, और पैदावार पाई जाती है। एशिया में दुनिया का सबसे विस्तृत साइबेरिया का नीचा मैदान है। सबसे ऊँचा एवरेस्ट पर्वत (Mt Evcrest) और सबसे ऊँचा तिब्बत (Tibet) का पठार भी इसी में स्थित है।

एशिया में और महाद्वीपों की अपेक्षा अधिक जातियों के लोग पाये जाते हैं। चीन और जापान के लोग मंगोल जाति के हैं। दक्षिण पूर्व में मलायन और दक्षिण पश्चिम में काकेशियन तथा मेडीटेरेनियन जाति के लोग हैं।

दुनिया के सभी बडे बडे मतों का आरम्भ इसी महाद्वीप से हुआ है। बौद्ध, हिन्दू, मुसलमान, अग्नि-पूजक (पारसी) और मसीही आदि मत यहां से आरम्भ हुए हैं। बौद्ध-मत माननेवालों की संख्या एशिया में सबसे अधिक है, ये अधिकतर पूर्वी देशों में रहते हैं।

यदि हम एशिया महाद्वीप को सभ्यता की जननी कहें तो अनुचित न होगा, क्योंकि संसार की सभ्यता का पहले पहल यहीं जन्म हुआ। इसी की सीमा के अन्दर पहले पहल लोगों ने खेत बोना, जानवरों को सुधारना, शहर बनाना, फौज तैयार करना और कानून बनाना सीखा। दर्शन, ज्योतिष और गणित इत्यादि प्राचीन विद्याओं का आरम्भ भी यहीं हुआ।

जिस समय सारी दुनिया असभ्य और जंगली थी, इस महाद्वीप में असूरिया, बाबुल और फारस इत्यादि बडे बडे राज्य मौजूद थे और इन राज्यों में बडे बडे शक्तिशाली राजा राज्य करते थे। ये राजा लोग अपनी राज्य सीमा बढाने के लिए दूसरी जातिवालों पर प्राय आक्रमण किया करते और युद्ध में पराजित करके उन्हें अपने अधीन कर लिया करते थे। एशिया के बडे बडे शहरों में

बड़ी बड़ी इमारत और प्रसिद्ध बाजार थे जिनमें हर प्रकार का आराम की चीज मिल सकती थी, इसलिए दूसरी जातियाँ दूर दूर से यहाँ व्यापार के लिए आती थी। पुराने जमाने में भारतवर्ष में सिन्ध नदी और चीन में ह्वागह्वो नदी के निचले मैदानों के भागों में एक उत्तम सभ्यता विद्यमान थी।

यद्यपि इस महाद्वीप में सभ्यता, रहन सहन और शासन पद्धति अन्य महाद्वीपों की अपेक्षा कई हजार वर्ष पहले आरम्भ हुई थी, परन्तु यह अद्भुत बात है कि कुछ समय के बाद यह उन्नति या तो एक सीमा तक आकर रुक गई अथवा उसमें अवनति आ गई। इसी बीच योरप महाद्वीप के देश उन्नति करके एशिया के देशों से बहुत बढ़ गए। वहाँ के रहनेवालों ने केवल यहाँ की विद्या और उद्योग धन्धों को ही नहीं सीखा वरन इनसे कहीं अधिक उन्नति भी कर ली। बिजली द्वारा बात्ती तथा बिना तार के सवाद दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक भेजना, बाइसिकिल, मोटर, रेल, हवाई जहाज और स्टीमर तथा बड़े बड़े कारखानों में बिजली के द्वारा बड़ी बड़ी मशीन और कलें चलाकर चीजें तैयार करना इत्यादि—इन सब बातों का आविष्कार पश्चिमी देशों में हुआ।

सीमा—एशिया महाद्वीप उत्तर, दक्षिण और पूर्व की ओर बड़े बड़े महासागरों से घिरा हुआ है। केवल पश्चिम की ओर यह योरप और अफ्रीका के महाद्वीपों से मिला हुआ है।

उत्तर—एशिया के उत्तर में उत्तरी महासागर या आर्कटिक महासागर (Arctic Ocean) है, विषुवत् रेखा से बहुत दूर होने के कारण वह बहुत सर्द रहता और लगभग १० महीने तक उसके पानी की सतह पर बर्फ जमी रहती है इसलिए एशिया के उत्तरी तट पर व्यापार नहीं हो सकता।

स्थान के जल-वायु पर निर्भर होते हैं इसलिए यहाँ लगभग हर प्रकार के पेड़-पौधे और पैदावार पाई जाती है। एशिया में दुनिया का सबसे विस्तृत साइबेरिया का नीचा मैदान है। सबसे ऊंचा एवरेस्ट पर्वत (Mt Everest) और सबसे ऊँचा तिब्बत (Tibet) का पठार भी इसी में स्थित है।

एशिया में और महाद्वीपों की अपेक्षा अधिक जातियों के लोग पाये जाते हैं। चीन और जापान के लोग मंगोल जाति के हैं। दक्षिण पूर्व में मलायन और दक्षिण पश्चिम में काकेशियन तथा मेडीटेरियन जाति के लोग हैं।

दुनिया के सभी बड़े बड़े मतों का आरम्भ इसी महाद्वीप से हुआ है। बौद्ध, हिन्दू, मुसलमान, अग्नि पूजक (पारसी) और मसीही आदि मत यहीं से आरम्भ हुए हैं। बौद्ध-मत माननेवालों की संख्या एशिया में सबसे अधिक है, ये अधिकतर पूर्वी देशों में रहते हैं।

यदि हम एशिया महाद्वीप को सभ्यता की जननी कहें तो अनुचित न होगा, क्योंकि संसार की सभ्यता का पहले पहल यहीं जन्म हुआ। इसी की सीमा के अन्दर पहले पहल लोगों ने खेत बोना, जानवरों को सुधारना, शहर बनाना, फौजें तैयार करना और कानून बनाना सीखा। दर्शन, ज्योतिष और गणित इत्यादि प्राचीन विद्याओं का आरम्भ भी यहीं हुआ।

जिस समय सारी दुनिया असभ्य और जंगली थी, इस महाद्वीप में असूरिया, बाबुल और फारस इत्यादि बड़े बड़े राज्य मौजूद थे और इन राज्यों में बड़े बड़े शक्तिशाली राजा राज्य करते थे। ये राजा लोग अपनी राज्य सीमा बढ़ाने के लिए दूसरी जातिवालों पर प्रायः आक्रमण किया करते और युद्ध में पराजित करके उन्हें अपने अधीन कर लिया करते थे। एशिया के बड़े बड़े शहरों में

बड़ी बड़ी इमारतें और प्रसिद्ध बाजार थे जिनमें हर प्रकार का आराम की चीज़ मिल सकती थी, इसलिए दूसरी जातियां दूर दूर से यहाँ व्यापार के लिए आती थीं। पुराने जमाने में भारतवर्ष में सिन्ध नदी और चीन में ह्वांगहू नदी के निचले मैदानों के लोगों में एक उत्तम सभ्यता विद्यमान थी।

यद्यपि इस महाद्वीप में सभ्यता, रहन सहन और शासन पद्धति अन्य महाद्वीपों की अपेक्षा कई हजार वर्ष पहले आरंभ हुई थी, परन्तु यह अद्भुत बात है कि कुछ समय के बाद यह उन्नति या तो एक सीमा तक आकर रुक गई अथवा उसमें अवनति आ गई। इसी बीच योरप महाद्वीप के देश उन्नति करके एशिया के देशों से बहुत बढ़ गये। वहाँ के रहनेवालों ने केवल यहाँ की विद्या और उद्योग धन्धों को ही नहीं सीखा वरन् इसमें बहुत अधिक उन्नति भी कर ली। बिजली द्वारा तार तथा बिना तार के खबरें दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक भेजना, बाइसिकिल, मोटर, रेल, हवाई जहाज और स्टीमर तथा बड़े बड़े कारखानों में बिजली के द्वारा बड़ी बड़ी मशीन और कलें चलाकर चीज़ तैयार करना इत्यादि—इन सब बातों का आविष्कार पश्चिमी देशों में हुआ।

सीमा—एशिया महाद्वीप उत्तर, दक्षिण और पूर्व की ओर बड़े बड़े महासागरों से घिरा हुआ है। केवल पश्चिम की ओर यह योरप और अफ्रीका के महाद्वीपों से मिला हुआ है।

उत्तर—एशिया के उत्तर में उत्तरी महासागर या आर्कटिक महासागर (Arctic Ocean) है, विषुवत् रेखा से बहुत दूर होने के कारण यह बहुत सर्द रहता और लगभग १० महीने तक उसके पानी की सतह पर बर्फ जमी रहती है इसलिए एशिया के उत्तरी तट पर व्यापार नहीं हो सकता।

और महासागरों का अपेक्षा आर्कटिक महासागर बहुत छोटा है। अगर उसे हम अटलांटिक महासागर (Atlantic Ocean) का एक टुकड़ा या खाड़ी कह तो अनुचित न होगा। वह लगभग चारों ओर पृथ्वी से घिरा हुआ है। उसके एक तरफ तो यूरेशिया का भाग है और दूसरी ओर उत्तरी अमरीका का उत्तरी भाग है। उसके चारों तरफ की जमीन यद्यपि नीची है पर सर्द होने के कारण बिलकुल निर्जन है।

पूर्व—एशिया के पूर्व में प्रशान्त महासागर या पेसिफिक महासागर (Pacific Ocean) है, जो सब महासागरों से अधिक चौड़ा है। उत्तर में बेरिंग जलडमरूमध्य (Bering Strait) पेसिफिक महासागर और आरटिक महासागर को मिलाता है। यह जलडमरूमध्य बहुत तंग है और केवल ३६ मील चौड़ा है। इससे दक्षिण की ओर पेसफिक महासागर चौड़ा होता चला गया है। ग्लोब को देखो तो तुमको मालूम होगा कि अगर सिंगापुर से, जो विषुवत रेखा के समीप स्थित है, तुम अमरीका जाना चाहो तो तुम्हें आधी दुनिया का सफर करना पड़ेगा।

एशिया के पूर्व में कई प्रायद्वीप हैं जैसे कमस्कटका (Kamaschatka), कोरिया (Korea) और इंडो-चीन (Indo China)। इसके किनारे से कुछ दूरी पर द्वीपपुंज हैं, जैसे क्यूराइल द्वीपसमूह (Kurile Islands), जापान द्वीपसमूह (Japan Islands), फारमूसा द्वीप (Formosa), लूचू द्वीपसमूह (Luchu Islands), फिलीपाइन द्वीपसमूह (Philippine Islands) और पूर्वी हिन्द द्वीपसमूह (East Indies)। महाद्वीप, प्रायद्वीप और उसके द्वीपसमूहों के बीच कई सागर हैं। पूर्वी किनारे पर कई उपजाऊ मैदान हैं। किनारा कटा हुआ है, उसके समीप ही बहुत-से द्वीप हैं जिनमें खूब व्यापार होता है।

पैसिफिक महासागर बहुत विस्तृत है, इसलिए पहले अमरीका से कोई व्यापार न होता था, केवल कुछ समय से स्टीमरों के कारण थोड़ा-बहुत व्यापार होने लगा है।

दक्षिण—एशिया के दक्षिण में हिन्द महासागर (Indian Ocean) स्थित है, जिसके पश्चिम में अफ्रीका और पूर्व में आस्ट्रेलिया महाद्वीप हैं। यानी यह महासागर तीन ओर पृथ्वी से घिरा हुआ है। एशिया के दक्षिण में मलाया (Malaya), हिन्दुस्तान (India) और अरब (Arabia) ये तीन प्रायद्वीप स्थित हैं। हिन्दुस्तान का प्रायद्वीप हिन्द महासागर के उत्तरी भाग को दो भागों में, यानी बंगाल की खाड़ी (Bay of Bengal) और अरब सागर (Arabian Sea) में विभाजित करता है। एशिया का दक्षिणी भाग न तो बहुत कटा हुआ है और न इसमें बहुत से द्वीपसमूह हैं। भारत के दक्षिण में केवल एक बड़ा द्वीप लंका (Ceylon) है, जो पाक (Palk Strait) नामक एक बहुत ही कम गहरे जलडमरूमध्य से अलग होता है।

पश्चिम—तुम पहले पढ़ चुके हो कि एशिया पश्चिम में योरप और अफ्रीका से मिला हुआ है। एशिया और योरप के बीच में तीन सागर भी स्थित हैं। उनके नाम कास्पियन सागर (Caspian Sea), काला सागर (Black Sea) और रूम सागर (Mediterranean Sea) हैं। एशिया को अफ्रीका से एक बहुत तंग स्थलडमरूमध्य जिसको स्वेज (Suez) कहते हैं, मिलाता है और लाल सागर (Red Sea) अलग करता है। परन्तु अब स्वेज स्थलडमरूमध्य की जगह स्वेज की नहर बना दी गई है, जिसके द्वारा लाल सागर और रूम सागर को जहाज आसानी से जा सकते हैं।

प्रश्न

१—दुनिया के नक़्शे को देखकर कुल महाद्वीपों के नाम बताओ।
२—प्रत्येक महाद्वीप किन महासागरों से घिरा है।
३—एशिया और योरप के बीच की सीमा प्राकृतिक (स्वाभाविक) सीमा क्यों नहीं मानी जाती ?
४—एशिया किन बातों में दूसरे महाद्वीपों से बढ़कर है ?

अभ्यास

१—एशिया का एक नक़्शा बनाओ और उसके चारों ओर खाड़ियों, समुद्रों और जलडमरूमध्यों के नाम लिखो।
२—इस नक़्शे में सब बड़े बड़े द्वीप और प्रायद्वीप दिखाओ।

दूसरा प्रकरण

एशिया का धरातल

एशिया के प्राकृतिक नक्शे को ध्यान से देखो। इसका कुछ भाग हरे रंग से रंगा है। कुछ में पीला और कुछ में गुलाबी या गहरा भूरा रंग है। ये कई तरह के रंग क्यों काम में लाये गये हैं और इनके कारण कौन सी विशेषता आ गई है? नक्शे के कोने में रंगों की जो व्याख्या दी गई है उसको देखने से समझ में आ जायगा कि कई प्रकार के रंग भिन्न भिन्न प्रकार की ऊँचाई प्रकट करते हैं। नक्शे का जो भाग हरे रंग से रँगा है वह समुद्र तल से १,००० फुट तक ऊँचा है। ये भाग निचले मैदान हैं। १,००० फुट से लेकर २,५०० फुट तक ऊँचे मैदान या पठार पीले रंग से दिखाये गये हैं। वे पहाड़ी हिस्से और ऐंठा, जो २,५०० फुट से ५,००० फुट तक ऊँचे हैं गुलाबी रंग में रँगे गये हैं। और इससे भी अधिक ऊँचे भाग भूरे या गहरे भूरे रंग में प्रकट किये गये हैं। इस तरह नक्शे में रंगने का यह अभिप्राय है कि हमें यह मालूम हो जाय कि एशिया के भिन्न भिन्न भागों का धरातल कहाँ कितना ऊँचा और कहाँ कितना नीचा है। इस बात को ध्यान में रखने के लिए इस नक्शे को देखते हुए तुम यह कल्पना करो कि मैं एक गुब्बारे या हवाई जहाज में बैठकर धरातल से इतनी ऊँचाई पर चढ़ गया हूँ कि यहाँ से एशिया महाद्वीप एक चित्र की भाँति दिखाई पड़ता है।

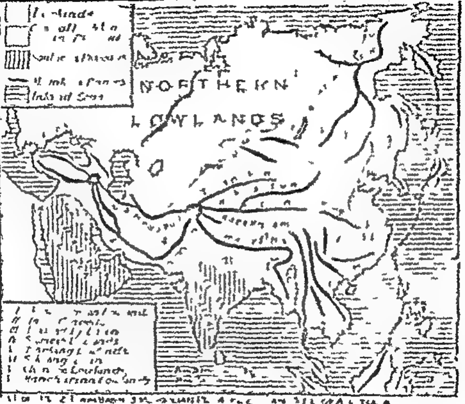
नीले रंग से पहली बात तुम यह देखोगे कि एशिया महाद्वीप तीन बड़े बड़े महासागरों से घिरा हुआ है। इसके उत्तर में

आर्कटिक महासागर, पूर्व में पैसिफ़िक महासागर और दक्षिण में हिन्दमहासागर है। पश्चिम की ओर यह योरप से मिला हुआ है। एक तंग स्थलडमरूमध्य द्वारा यह अफ्रीका से भी मिला हुआ है परन्तु लाल सागर द्वारा यह उससे अलग है।

दूसरे तुमको उसके धरातल की स्वाभाविक दशा मालूम हो जायगी और तुम निम्नलिखित भागों को देखोगे।

(१) उत्तर में बड़ा मैदान दूर तक फैला हुआ है।
(२) इस मैदान के दक्षिण में एक बहुत बड़ा पहाड़ी भाग है जो रूम सागर से पैसिफ़िक महासागर (Pacific Ocean) तक फैला हुआ है।
(३) इस पहाड़ी हिस्से के दक्षिण में अरब, दक्खिनी भारत और इंडोचीन के प्लेटो हैं, जो प्रायद्वीपों की तरह हिन्द महासागर में चले गये हैं।
(४) पूर्व और दक्षिण में कुछ नदियों के मैदान हैं।
(५) एशिया के पूर्व की ओर पैसिफ़िक महासागर में पहाड़ी द्वीपों की एक क़तार है।

उत्तरी मैदान (Northern Plains or Lowlands).—अगर हम कास्पियन सागर से उत्तर-पूर्व की ओर बेरिंग जलडमरूमध्य के समीप तक एक रेखा खींचे तो यह रेखा एशिया को दो भागों में विभाजित करेगी। इसके दक्षिण में तो एशिया का मध्यम पहाड़ी स्थल और उत्तर में साइबेरिया का बड़ा मैदान होगा। यह मैदान दुनिया के सबसे अधिक चौड़े मैदानों में से है और पश्चिम में योरप से होकर अटलांटिक महासागर के मध्य तक चला गया है तथा दोनों महाद्वीपों के बीच की रेखा पर बहुत चौड़ा हो गया है। एशियाई उत्तरी मैदान की शकल एक बड़े त्रिभुज की सी है। नक़शे में मालूम होगा



Asia—Physical divisions.

कि इस मैदान में ओबी (R Obi), येनेसी (R Yenesei), और लीना (R Lena) नाम की तीन बडी नदियाँ हैं। ये मध्य के पहाडी भाग से निकल कर और उत्तर की तरफ बहकर आर्कटिक महासागर में गिरती है। इससे हम यह फल निकाल सकते हैं कि इस मैदान का ढाल उत्तर की ओर है। केवल दक्षिण पश्चिमी भाग में, जिसको तूरान (Turan) कहते हैं, इसका ढाल पश्चिम की ओर है। यहाँ अमू (Amu Daria) और सर (Syr Daria) नाम की दो नदियाँ अरल सागर (Aral Sea) में गिरती हैं।

२—*एशिया का मध्यम पर्वतीय भाग*—उत्तरी मैदान के दक्षिण में और एशिया के मध्य में पूर्व से पश्चिम तक एक बहुत चौडा पहाडी भाग है जो ऊँची पहाडियों और पठारों से घिरा हुआ है। परन्तु ये सब ऊँचाई में अलग अलग हैं। इस भाग में पर्वतश्रेणियाँ इतना अधिक हैं कि शायद तुम यह समझो कि इनमें परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु इन्हीं को फिर से ध्यानपूर्वक देखने से मालूम होगा कि ये श्रेणियाँ एक दूसरी से अलग नहीं हैं, बल्कि एक ऊँचे और अगम केन्द्र से, पहिये के आरों की तरह, चारों तरफ फैली हुई हैं। इस ऊँचे भाग को पामीर (Pamir Plateau) का पठार कहते हैं। यह तूरान और हिन्द के मैदानों के बीच में स्थित है। यहाँ पर मध्यम पहाडी भाग बहुत सँकरा हो गया है।

इस जगह पर एशिया का मध्यम पहाडी भाग दो भागों में विभाजित हो गया है। छोटा भाग पश्चिम की ओर है, जिसमें ईरान (Iran) और अनाटोलिया (Anatolia) के पठार हैं।

ईरान के उत्तर में हिन्दूकुश (Hindu Kush) और एल्बर्ज (Elburz) पर्वत हैं जो पामीर से निकले हुए हैं।

दक्षिण पश्चिम में सुलेमान पर्वत किरथार और जागरस (Sulaiman, Kirthar and Zagros) हैं जो ईरान की पूर्वी, दक्षिणी और पश्चिमी सीमा बनाते हैं। ये तीनों पर्वतश्रेणियाँ ईरान के उत्तर पश्चिम में फिर आरमीनिया (Armenia) के पठार पर, जो एशिया के पश्चिम में एक दूसरा पहाड़ी केन्द्र है, मिलती हैं। आरमीनिया के पठार की सबसे ऊँची चोटी अरारात पर्वत है। अनाटोलिया के पठार का पश्चिम की ओर टारस (Taurus) और पान्टस (Pontus), जो आरमीनिया से निकले हुए हैं, घेरे हुए हैं।

आरमीनिया पठार के उत्तर में काफ पर्वत काकेशस (Caucasus) नामक एक पर्वत श्रेणी है, जो कास्पियन सागर से काले सागर तक चली गई है। यह इतनी ऊँची है कि पश्चिम के भागों में इसकी चोटियाँ बर्फ से ढकी रहती हैं।

अब नक्शे में पामीर से पूर्व की ओर के पहाड़ी भाग को देखो। पामीर से पूर्व की ओर चार बड़े पहाड़ की श्रेणियाँ निकलती हैं। उनमें सबसे ज्यादा उत्तर की ओर थियान शान पर्वत (Thian Shan Mountains) हैं जो उत्तर-पूर्व की ओर घूम जाता है। उससे आगे के यावलूनाय (Yablonoi Mountains) और स्तानोवाय (Stanovoi Mountains) उत्तर पूर्व की ओर बेरिंग जलडमरूमध्य तक चल गये हैं। दूसरी श्रेणी क्यूनलान (Kuenlun Mountains) है। यह बिलकुल पूर्व की ओर चीन तक चला गई है और उसके आगे चीन के और पहाड़ पैसिफिक महासागर के समीप तक चले गये हैं। थियान-शान और क्वानलन श्रेणियों के बीच में तारिम (Tarim Basin) का ऊँचा बेसिन है। यह तीन ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है और इसमें जहाँ-तहाँ खारा पानी की बहुत-सी झील स्थित हैं। तारिम नदी पश्चिम की ओर पहाड़ों से निकली है

और पूर्व की ओर पहुँचकर सूख जाती है, क्योंकि यह बेसिन एक बहुत सूखा रेगिस्तान है।

तारिम के बेसिन के पूर्व में गोबी (Gobi) का रेगिस्तान है। इसमें स्थान स्थान पर रेत के पहाड़ और टीले हैं। यह इतना सूखा है कि सैकड़ों मील तक एक भी पेड़ पौधा नहीं दिखाई पड़ता।

पामीर के पूर्व के पर्वतों की तीसरी श्रेणी कराकुरम (Karakoram) है। यद्यपि यह और श्रेणियों से लम्बाई में छोटी है, परन्तु बहुत ऊँची है। इसमें एशिया की कई बहुत ऊँची चोटियाँ और चौड़े ग्लेशियर हैं, जो बराबर बरफ़ से ढके रहते हैं। दो ग्लेशियर तो लगभग ४०, ५० मील लम्बे हैं। गाडविन आस्टिन (Godwin Austin) या केटू (K_2) पहाड़ की चोटी समुद्र के तल से २८,००० फुट ऊँची है। एवरेस्ट (Mount Everest) पर्वत के बाद यह दुनिया में सबसे अधिक ऊँची चोटी है। पामीर से पूर्व की ओर निकली हुई श्रेणियों में चौथी श्रेणी हिमालय पर्वत (Himalaya Mountains) की है। यह १,५०० मील लम्बी और २०० मील चौड़ी है। वास्तव में यह एक श्रेणी नहीं है, वरन इसमें कई श्रेणियाँ हैं जो एक-दूसरी के बराबर चली गई हैं, जिनके बीच में नदियों की गहरी घाटियाँ स्थित हैं। 'हिमालय' शब्द का असली अर्थ 'बर्फ़ का घर' है। यह दुनिया के पहाड़ों में सबसे अधिक ऊँचा है। इसकी चोटियाँ सदा बर्फ़ से ढकी रहती हैं। एवरेस्ट पर्वत जो दुनिया में सबसे ऊँची चोटी है, समुद्र के तल से २९,१५० फुट यानी लगभग ५½ मील ऊँची है। ४० चोटियाँ ५ मील तक ऊँची हैं।

हिमालय-पर्वतश्रेणी और क्वीनलन पर्वत के मध्य में तिब्बत (Tibet) का पठार है जो संसार में सबसे ऊँचा और बड़ा है। इस पठार की सतह पर बहुत-सी पर्वत-श्रेणियाँ हैं,

जो पूर्व की ओर अधिक ऊंचा है। यहां से दक्षिण की ओर मुड़कर ये इंडोचीन प्रायद्वीप के दक्षिणी सिर तक चली गई हैं।

३—नदियों के मैदान—मध्य एशिया के पहाड़ी भाग के दक्षिण और पूर्व में कई नदियों के बड़े मैदान हैं, जो समुद्रतल से बहुत ऊँचे नहीं हैं। नक्शे में ये मैदान हरे रंग से दिखाये गये हैं। इन मैदानों में बड़ी बड़ी नदियाँ बहती हैं। इन्हीं नदियों की लाई हुई मिट्टी से ये मैदान बने हैं, इससे बहुत उपजाऊ हैं। दक्षिण की ओर जो दो मैदान हैं उनमें पहला मैदान दजला (Tigris) और फरात (Euphrates) से बना है जो आरमीनिया से निकलती हैं और एक साथ मिलकर फ़ारस की खाड़ी में गिरती हैं। इसको मैसोपोटामिया का मैदान कहते हैं। दूसरा मैदान भारतवर्ष का है, जो सिंध, गंगा, ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों से बना है। दो मैदान इंडोचीन में हैं—एक तो दक्षिणी ब्रह्मा का मैदान, दूसरा स्याम का मैदान। इसी तरह जो नदियाँ मध्य के पहाड़ी भाग से निकलकर पूर्व की ओर चीन में बहती हैं उनसे भी कई मैदान बने हैं। उनमें से एक ह्वांग हो (R Hoang-Ho) से बना हुआ उत्तरी चीन का मैदान है और दूसरा यांग टिसी-क्यांग (R Yang-tse Kiang) से बना हुआ मध्य चीन का मैदान। नदियों से लाई हुई मिट्टी से बने होने के कारण ये मैदान बहुत उपजाऊ हैं और इसी लिए इनमें आबादी भी बहुत घनी है।

४—दक्षिणी प्रायद्वीप—एशिया के दक्षिण में तीन प्रायद्वीप हिन्द महासागर में चले गये हैं।

(१) इंडोचीन (Indo China) के पहाड़ी प्रायद्वीप में कई पर्वत श्रेणियाँ एक दूसरी के बराबर, उत्तर से दक्षिण की ओर, फैली हुई हैं। इन श्रेणियों के बीच लम्बी घाटियों में नदियाँ बहती हैं। इस प्रायद्वीप का उत्तरी भाग अधिक चौड़ा है।

इसमें ब्रह्मा, स्याम, अनाम और कम्बोडिया के देश हैं। दक्षिण भाग का मलाया प्रायद्वीप कहते है, यह बहुत-तग हो गया है।

(२) दक्खिन का पठार (Deccan) भारतवर्ष के मैदान के दक्षिण म स्थित है। यह पठार पश्चिम की ओर बहुत ऊँचा है। इसकी नदियाँ पश्चिमी घाट से निकलकर पूर्व की ओर बहती हैं, क्योंकि इस पठार का ढाल पूर्व की ओर है। इसका सविस्तर वर्णन तुम पहली किताब में पढ चुके हो।

(३) अरब (Arabia) का पठार मसोपोटामिया मैदान के दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है। यह भी पश्चिम की ओर ऊँचा और पूर्व को ओर ढाल है। परन्तु यह बहुत सूखा है, इसलिए इसमें नदियाँ नही हैं।

५—पूर्वी द्वीपसमूह (Eastern Islands)—एशिया के पूर्व मे महाद्वीप से कुछ दूरी पर द्वीपों की कई श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण की ओर चली गई हैं। उनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध जापान के टापू (Japan Islands) हैं जिनको जापान सागर (Sea of Japan) एशिया से अलग करता है। इन द्वीपों के उत्तर में एलोशियन द्वीपसमूह (Aloutian Islands) और क्यूराइल द्वीपसमूह (Kurilo Islands) हैं और दक्षिण में लूचू द्वीपसमूह (Luchu Islands) हैं, जो फारमोसा द्वीप (Formosa) तक चले गये हैं। एशिया के दक्षिण-पूर्व में हिन्द पूर्वी द्वीपसमूह (East Indies Islands) स्थित हैं, जिनको दक्षिणी चीन सागर (South China Sea) इंडोचीन प्रायद्वीप से अलग करता है। इस समूह के मुख्य द्वीप फिलीपाइन (Philippine Islands), बोरनियो (Borneo) सेलीबिस (Celebes), जावा (Java) और सुमात्रा (Sumatra) हैं। ये सब द्वीप पहाड़ हैं।

प्रश्न

१—अगर तुम किसी हवाई जहाज़ में बैठकर लंका से ओबी नदी के मुहाने तक सफ़र करो तो रास्ते में किन किन पर्वत, पठार, मैदान और नदियों के ऊपर से होकर जाओगे? सिलसिलेवार बताओ।

२—पामीर के पठार को पर्वत का केन्द्र क्यों कहते हैं? यहाँ से कौन कौन से पर्वत चारों ओर फैले हुए हैं?

३—क्या तुम धागे से नापकर बता सकते हो कि एशिया का सबसे लम्बा समुद्र-तट कौन-सा है?

अभ्यास

१—एशिया के नक्शे में एशिया के प्राकृतिक भाग दिखाओ। उनको अलग अलग रंगों में रँगो और उनके नाम लिखो।

२—एशिया के एक और नक्शे में पहाड़ी श्रेणियाँ और नदियाँ दिखाओ और उनके नाम लिखो।

तीसरा प्रकरण

एशिया के समुद्र-तट

अच्छे समुद्र-तट की विशेषतायें—समुद्र-तट किसे कहते हैं ? स्थल का वह भाग जो समुद्र के किनारे होता है समुद्र तट कहा जाता है, क्योंकि यहाँ पर जल स्थल-विभाग मिलते हैं। समुद्र के किनारे स्थल के समीप ऐसे स्थान होने चाहिए जहाँ से जहाजों को आने-जाने में सुगीता हो। यदि समुद्र-तट सीधा हो और समुद्र की लहरें किनारे पर आकर टकराती हों तो जहाजों के लिए किनारे पर आकर ठहरना खतरनाक होगा। परन्तु तट कटा हुआ हो तो किनारे की दरारों में पानी रुका रहे। वहाँ हवा और लहरों का अधिक प्रभाव न पड़ेगा। इसलिए यहाँ जहाज निर्भयता से ठहर सकते हैं।

१—अच्छा समुद्र तट होने के लिए बहुत आवश्यक बात यह है कि वह कटा हुआ हो, यानी वहाँ खाड़ियाँ हों, जिससे उसमें जहाज निर्भयता से ठहर सकें। खाड़ी में, जिसके पास चारों ओर स्थल होता है, हवा और लहरें इतनी तेज नहीं होतीं जितनी कि खुले समुद्र में। इसलिए यह बन्दरगाहों के लिए अत्यन्त लाभदायक है, यहाँ जहाज सरलता से बिना भय के लंगर डाल सकते और माल असबाब उतारने या लादने के लिए कुछ दिनों तक बिना हिले रुक सकते हैं। दुनिया के प्रायः सभी बंदरगाह खाड़ियों में या नदियों के मुहानों पर स्थित हैं। अगर तट के समीप कोई द्वीप हो तो उसके द्वारा

भी हवाओं और लहरों का जोर कम हो जाता है इसलिए ऐसे किनारे भी बन्दरगाहों के लिए अधिक उपयोगी हैं। जैसा पढ़ाया जा चुका है कि बम्बई का प्रसिद्ध बन्दरगाह समुद्र-तट और द्वीप के बीच में स्थित है। नक़शे में देखो कि एशिया का पूर्वी किनारा बहुत कटा हुआ है।

२—दूसरी आवश्यक बात यह है कि तट के समीप समुद्र अधिक गहरा हो, जिससे बड़े जहाज सरलता से उन बन्दरगाहों में आ सकें क्योंकि आज-कल व्यापारिक यात्रा करने के लिए बड़े बड़े जहाज समुद्रों को पार करते रहते हैं। अगर तट का पानी अधिक गहरा न हो तो जहाज बन्दरगाह तक न पहुँच सकेंगे और उनको बन्दरगाह से दूर समुद्र में लंगर डालना पड़ेगा। ध्यान रहे कि बड़े बड़े जहाजों के लिए कम से कम चालीस फुट गहरे पानी की आवश्यकता है। हिन्दुस्तान के प्राकृतिक नक़शे को देखने से शायद तुम समझो कि कच्छ की खाड़ी बन्दरगाहों के लिए बहुत अच्छी है। परन्तु यह खाड़ी इतनी छिछली है कि इसमें जहाज तो क्या बड़ी नावें भी नहीं आ सकतीं इसी लिए इसमें कोई बन्दरगाह नहीं है। मद्रास के तट के समीप समुद्र बहुत कम गहरा है इसलिए जहाज वहाँ से लगभग एक मील की दूरी पर ठहरते थे और वहाँ से लोग नावों पर बैठकर मद्रास के तट पर आते थे। परन्तु अब सरकार ने मद्रास के समीपवाले समुद्र के भाग को गहरा करके बन्दरगाह को इस योग्य बना दिया है कि उसमें जहाज सरलता से आ जा सकते हैं।

Hinterland

३—तीसरी आवश्यक बात यह है कि तट के पीछे के भाग में आबादी अच्छी हो। या तो मुल्क उपजाऊ हो, जिससे वहाँ अच्छी तरह से खेती-बारी हो सके और बड़े बड़े शहर पाये जायँ, या उसके समीप खानें हो जिससे वहाँ की कारीगरी प्रसिद्ध

तीसरा प्रकरण

एशिया के समुद्र-तट

अच्छे समुद्र-तट की विशेषतायें—समुद्र-तट किसे कहते हैं? स्थल का वह भाग जो समुद्र के किनारे होता है समुद्र तट कहा जाता है, क्योंकि यहाँ पर जल स्थल-विभाग मिलते हैं। समुद्र के किनारे स्थल के समीप ऐसे स्थान होने चाहिए जहाँ से जहाज़ों को आने जाने में सुबीता हो। यदि समुद्र तट सीधा हो और समुद्र की लहरें किनारे पर आकर टकराती हों तो जहाज़ों के लिए किनारे पर आकर ठहरना ख़तरनाक होगा। परन्तु तट कटा हुआ हो तो किनारे की दरारों में पानी रुका रहे। यहाँ हवा और लहरों का अधिक प्रभाव न पड़ेगा। इसलिए यहाँ जहाज़ निर्भयता से ठहर सकते हैं।

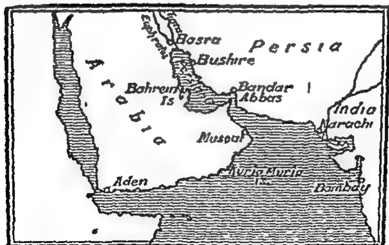
१—अच्छा समुद्र-तट होने के लिए बहुत आवश्यक बात यह है कि वह कटा हुआ हो, यानी वहाँ खाड़ियाँ हों, जिससे उसमें जहाज़ निर्भयता से ठहर सकें। खाड़ी में, जिसके पास चारों ओर स्थल होता है, हवा और लहरें उतनी तेज़ नहीं होतीं जितनी कि खुले समुद्र में। इसलिए यह बन्दरगाहों के लिए अत्यन्त लाभदायक है, जहाँ जहाज़ सरलता से बिना भय के लंगर डाल सकते और माल असबाब उतारने या लादने के लिए कुछ दिनों तक बिना हिले रुक सकते हैं। दुनिया के प्रायः सभी बंदरगाह खाड़ियों में या नदियों के मुहानों पर स्थित हैं। अगर तट के समीप कोई द्वीप हो तो उसके द्वारा

अच्छे तट की विशेषताएँ मालूम हो गई हैं इसलिए आओ अब हम एशिया के तटों को सैर कर।

पिछली पुस्तक में तुम हिन्दुस्तान के तटों का वर्णन पढ चुके हो, इसलिए हम अपना सफर कराची मे आरम्भ करेंगे और पहले पश्चिम की तरफ चलेंगे। इसके बाद रंगून से इस महाद्वीप के पूर्वी किनारे पर यात्रा करेंगे।

एशिया के समुद्र-तट (१)

कराची से स्वेज नहर (Suez Canal) तक बल्कि उससे भी और आगे तक बंजर और रेगिस्तानी तट मिलेंगे। ये वास्तव में एक बडे चौडे रेगिस्तान के किनारे हैं। इन सब किनारो के



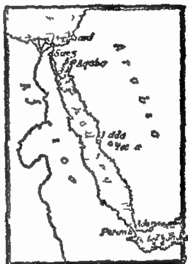
चाहे जिस ओर देखो, झुलसी हुई पहाडियो या गरम रेत के किनारे के सिवा कुछ भी न दिखाई देगा। हाँ कहीं कहीं पर खजूर और ताड के पेडो की क़तार दिखाई पडती है।

हो। खेती-बारी के लिए जमीन तभी अच्छी हो सकती है जब वहाँ काफी पानी बरसता हो और जमीन पहाड़ी न हो। हिन्दुस्तान और चीन के तटों पर जहाँ जहाँ नीचे मैदान हैं और अधिक वर्षा होती है, आबादी बहुत घनी है। अगर किसी किनारे के पीछे की जमीन भी घनी बसी हुई है तो वहाँ के लोग जहाजों के द्वारा माल असबाब लादते और ले जाते हैं। परन्तु यदि कहीं की जमीन बंजर और देश उजाड़ हैं तो फिर वहाँ न तो समुद्र के किनारे नगर बस सकते हैं और न व्यापार के लिए दूसरे देशों से मनुष्य ही आते हैं। एशिया के नक़्शे में देखो, बिलोचिस्तान और अरब के तट उजाड़ हैं इसलिए वहाँ अदन के सिवा कोई बड़ा बन्दरगाह नहीं है। साइबेरिया के उत्तर का मैदान कड़ी सर्दी के कारण उजाड़ है इसलिए वहाँ भी कोई प्रसिद्ध बन्दरगाह नहीं है।

अच्छे बन्दरगाह अधिकतर नदियों के मुहाने पर या उसके समीप होते हैं। कारण यह है कि एक तो नदी के मुहाने पर या डेल्टा पर नदी की लाई हुई मिट्टी से भूमि बना होती है, इसलिए उपजाऊ होती है और यहाँ अधिकतर आबादी भी घनी पाई जाती है। दूसरे, नदी के मुहाने पर जहाजों के लिए समुद्री रास्ता यहाँ से आरम्भ होता है और नदी के द्वारा देश के भीतर भी आना जाना लगा रहता है। इसलिए देश के भीतर बेचने और खरीदने के लिए चीजें नाव या जहाज के द्वारा बन्दरगाह तक आसानी से लाई जा सकती हैं। अगर किसी जगह में नदी का मुहाना चौड़ा या गहरा न हो तो उसे खोदकर गहरा कर लेते हैं, जिसमें बड़े जहाज आसानी से आकर ठहर सकें और फिर नदियों की लाई हुई मिट्टी काम में बराबर निकालते रहते हैं। जैसे कलकत्ता का बन्दरगाह हुगली नदी के मुहाने पर है, जो गंगा नदी की एक धार है। अब तुमको

दिया है, किसी जहाज के टकराकर टूटने की खबर नहीं सुनी गई।

अदन से पोर्ट सईद तक का समुद्र-तट—लाल सागर पर जिद्दा (Jiddah) के सिवा कोई बड़ा बन्दरगाह नहीं है। हज के लिए मक्का (Mecca) जानेवाले हजारों मुसलमान हर साल इस बन्दरगाह पर उतरते हैं। मक्का में ही मुसलमानों के पैगम्बर मुहम्मद साहब पैदा हुए थे।



नक्शे में देखो, लाल सागर दो रेगिस्तानों के बीच में स्थित है इसी कारण गर्मी की ऋतु में पेरम से स्वेज नहर तक जहाज के अन्दर बहुत गर्मी लगती और कष्ट होता है। लाल सागर इन रेगिस्तानों को काटता हुआ दूर तक स्थल में चला गया है फिर भी उसका पानी ठण्डा नहीं है और वह यहाँ के जलवायु में कोई परिवर्तन नहीं पैदा करता।

लाल सागर का उत्तरी भाग दो सँकरी खाड़ियों में विभाजित हो गया है। पश्चिमी खाड़ी पर स्वेज नगर (Suez) है। इसी नगर से उत्तर की ओर स्वेज नहर पोर्ट सईद (Port Said) को गई है।

स्वेज नहर (Suez Canal) १८६९ ई० में बनाई गई। इससे पहले समुद्र के द्वारा इँगलिस्तान से हिन्दुस्तान आने के लिए दक्षिणी अफ्रीका से घूमकर आना पड़ता था और इस

कराची से अदन तक का समुद्र-तट—कराची के बाद हम उमान की खाड़ी (Gulf of Oman) को पार करके फारस की खाड़ी (Persian Gulf) में जाते हैं। उस खाड़ी का पानी कम गहरा है। कारण यह है कि दजला (Tigris) और फरात (Euphrates) नदियाँ इस खाड़ी की गहराई को रेत और मिट्टी से धीरे धीरे कम कर रही हैं और इन दोनों नदियों के सम्मिलित मुहाने पर बसरा नगर बसा हुआ है। यह नगर किसी समय एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था परन्तु अब समुद्र से दूर हो गया है। इस सारे किनारे पर इस नगर के सिवा कोई बड़ा नगर या बन्दरगाह नहीं है।

अरब के दक्षिण में रेगिस्तानी किनारे पर अदन (Aden) का प्रसिद्ध बन्दरगाह क्यों स्थित है?

अदन का बन्दरगाह एशिया के दक्षिण पश्चिम तट पर, एक रेगिस्तान के कोने में, छोटे से बंजर प्रायद्वीप पर, स्थित है। यह बन्दरगाह बहुत खूबसूरत और मजबूत बना हुआ है। अदन के बन्दरगाह से दो लाभ हैं। एक तो यह लाल सागर से बाहर आनेवाले जहाजों की रक्षा करता है, दूसरे इस मार्ग से जानेवाले जहाजों के लिए यहाँ कोयले का गोदाम रहता है। इन्हीं कारणों से यह बन्दरगाह रेगिस्तानी किनारे पर बहुत प्रसिद्ध हो गया है। लाल सागर में जाने के लिए एक सँकरा जलडमरूमध्य है, जिसको बाबुल मन्दब (Babel Mandeb) कहते हैं। बाबुल मन्दब का अर्थ आँसुओं का दरवाजा है। परन्तु यहाँ बीच में पेरम द्वीप (Perim Island) पड़ जाने से दो जलसंयोजक बन गये हैं। पुराने जमाने में इस द्वीप से टकराकर बहुत-से जहाज टूट जाया करते थे इसी लिए इस जलडमरूमध्य को बाबुल मन्दब कहने लगे। परन्तु जिस समय से अँगरेजों ने इस पर प्रकाश स्तम्भ बनवा

मार्ग के तय करने मे कइ महीने लग जाते थे। अब स्वेज नहर के मार्ग द्वारा इँगलिस्तान से हिन्दुस्तान तक का सफर केवल २ हफ्ता का हो गया है। स्वेज नहर में जहाज बहुत धीरे धीरे चलाया जाता है। कारण यह है कि यदि जहाज पूरी चाल से चलाया जावे तो लहरें बहुत उठेगी और उन लहरों से नहर के किनारे, जिनमें रेत ही रेत है, कटकर पानी में गिर जायगे इससे नहर की गहराई कम हो जावेगी। और जहाजों को आने-जाने में कठिनता पड़ेगी। इस नहर से होकर प्राय हर साल ५,००० जहाज आते-जाते हैं, इसी कारण पोर्ट सईद बड़े कारबार का स्थान हो गया है। जहाजों को कोयला देने के लिए यह स्थान बहुत प्रसिद्ध है।

पोर्ट सईद के बाद रूम सागर है। नक्शे में देखो, पृथ्वी के भीतरी सागरों में यह सागर सबसे बड़ा है। इसके किनारो पर बहुत-से देश हैं और उनका जलवायु बहुत अच्छा है।

पोर्ट सईद से कुछ पूर्व की ओर घूमकर हम फिलस्तीन देश (Palestine) और शाम देश (Syria) के किनारे ही किनारे कुछ छोटे छोटे बन्दरगाहों से होकर उत्तर की ओर टर्की देश तक चले जायँगे और इसके बाद पश्चिम की ओर मुड़ जायँगे इस मोड़ के पास साइप्रस टापू (Cyprus Island) है। टर्की का एशियाई तट अधिकतर पहाड़ी है, जिन पर छोटे छोटे पेड़ों के जंगल दिखाई देंगे। -

... बाद फिर उत्तर की ओर एशियाई टर्की की पश्चिमी ... छोटे छोटे प्रायद्वीप और इजिअन सागर (Aegean ... बहुत-से टापू मिलेंगे। इस भाग में समुद्र की गहराई ... यहाँ स्पञ्ज भी पाया जाता है, इसलिए यहाँ पर ... वालों की नावें बहुत अधिकता से दिखाई देती हैं। ... निकालनेवाले स्थानों में इसका दूसरा नम्बर है।



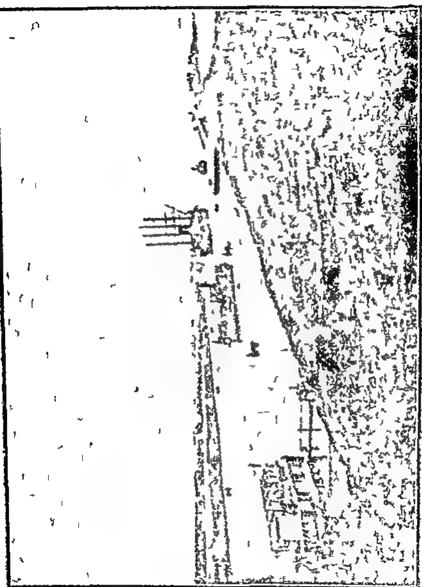
Suez Canal

मार्ग को तय करने में कई महीने लग जाते थे। अब स्वेज नहर के मार्ग द्वारा इँगलिस्तान से हिन्दुस्तान तक का सफ़र केवल २ हफ्ता का हो गया है। स्वेज नहर में जहाज बहुत धीरे धीरे चलाया जाता है। कारण यह है कि यदि जहाज पूरी चाल से चलाया जावे तो लहरें बहुत उठेंगी और इन लहरों से नहर के किनारे, जिनमें रेत ही रेत है, कटकर पानी में गिर जायँगे इससे नहर की गहराई कम हो जावेगी। और जहाजों को आने-जाने में कठिनता पड़ेगी। इस नहर से होकर प्रायः हर साल ५,००० जहाज आते-जाते हैं, इसी कारण पोर्ट सईद बड़े कारबार का स्थान हो गया है। जहाजों को कोयला देने के लिए यह स्थान बहुत प्रसिद्ध है।

पोर्ट सईद के बाद रूम सागर है। नक्शे में देखो, पृथ्वी के भीतरी सागरों में यह सागर सबसे बड़ा है। इसके किनारों पर बहुत-से देश हैं और उनका जलवायु बहुत अच्छा है।

पोर्ट सईद से कुछ पूर्व की ओर घूमकर हम फिलस्तीन देश (Palestine) और शाम देश (Syria) के किनारे ही किनारे कुछ छोटे छोटे बन्दरगाहों से होकर उत्तर की ओर टर्की देश तक चले जायँगे और इसके बाद पश्चिम की ओर मुड़ जायँगे इस मोड़ के पास साइप्रस टापू (Cyprus Island) है। टर्की का दक्षिणी तट अधिकतर पहाड़ी है, जिस पर छोटे छोटे पेड़ों के जंगल दिखाई देंगे।

इसके बाद फिर उत्तर की ओर एशियाई टर्की की पश्चिमी खाड़ियाँ, छोटे छोटे प्रायद्वीप और इजिअन सागर (Ægean Sea) के बहुत-से टापू मिलेंगे। इस भाग में समुद्र की गहराई कम है और यहाँ स्पंज भी पाया जाता है, इसलिए यहाँ पर स्पंज निकालनेवालों की नावें बहुत अधिकता से दिखाई देती हैं। दुनिया में स्पंज निकालनेवाले स्थानों में इसका दूसरा नम्बर है।



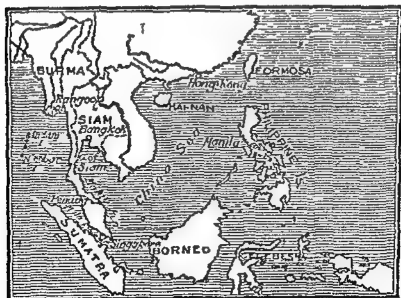
Suez Canal

तेल पीपों में भरकर रेल के द्वारा थातूम पहुँचाया जाता है जहाँ से जहाजों द्वारा दूसरे देशों को रवाना कर दिया जाता है।

एशिया के समुद्र-तट (२)

अब तुमको एशिया के दूसरी ओर के तटों का हाल बतलाया जाता है। आओ हम रंगून से, जो भारतवर्ष का एक बहुत बड़ा पूर्वी बन्दरगाह है, चलें।

बंगाल की खाड़ी के पूर्व में मलाया प्रायद्वीप स्थित है। रंगून से दक्षिण की ओर की यात्रा मलाया प्रायद्वीप के



किनारे किनारे होती है। यह प्रायद्वीप एक पर्वतश्रेणी है जो घने जंगलों से घिरी हुई है। इसका तट जगह जगह से कटा

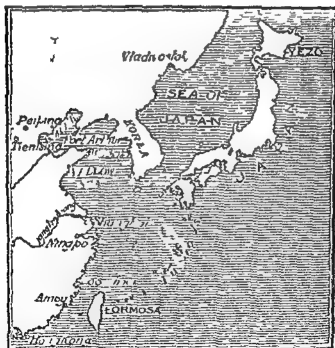
टर्की का यह समुद्र-तट बहुत हरा-भरा है। इस पर बहुत-से छोटे छोटे बन्दरगाह हैं, जिनमें फलों का व्यापार बहुत होता है। इनमें से एक बड़ा बन्दरगाह पुराने जमाने से प्रसिद्ध है, जिसको स्मरना (Smyrna) कहते हैं। दरदानियाल (Dardanelles) और बासफ़ोरस (Bosphorus) नामो जलडमरूमध्यों के द्वारा योरपीय रूम एशिया से अलग हो गया है। इन दोनो जलडमरूमध्यों के बीच में मारमरा सागर (Sea of Marmora) स्थित है। बासफोरस जलडमरूमध्य के योरपीय भाग पर अस्तम्बूल नगर (Constantinople) स्थित है। इन दोनों जलडमरूमध्यों में होकर व्यापार बहुत होता है।



इसके बाद काला सागर (Black Sea) है। टर्की का उत्तरी तट भी पहाड़ी है जिस पर घने जंगल हैं। नदियों के मुहानों पर कुछ छोटे बन्दरगाह स्थित हैं, जिनमें सिनोपी (Sinope) और तर्बीजान (Trebezond) अधिक प्रसिद्ध हैं। काला सागर के दक्षिण पूर्वी कोने पर जार्जिया देश (Georgia) में बातूम (Batum) बन्दरगाह स्थित है। यहाँ से एक रेल की सड़क बाकू (Baku) को गई है। बाकू कास्पियन सागर (Caspian Sea) पर स्थित है, यहाँ कुओं से मिट्टी का तेल निकाला जाता है। यह

बहुत सुन्दर और मनोहर है और पूर्वी एशिया में व्यापार का सबसे बड़ा स्थान है। सिंगापुर की तरह हाँग काँग भी व्यापार की बड़ी मंडी है। दूसरे देशों से जो माल यहाँ आता है, वह यहाँ से चारों ओर बँटता रहता है।

हाँग-काँग से उत्तर की ओर चीन के समुद्र तट का रूप अर्धवृत्त के समान है और जगह-जगह से कटा हुआ है। इस तट पर बहुत-से छोटे छोटे द्वीप और बन्दरगाह स्थित हैं।



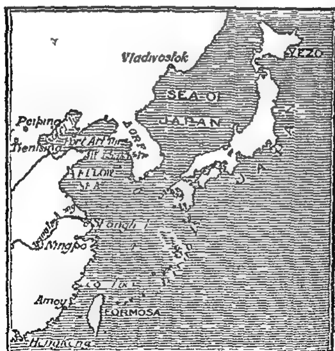
इस समुद्र-तट के बन्दरगाहों में अमोय (Amoy), फूचू (Foochow) और निंगपो (Ningpo) अधिक सुन्दर हैं। चीन से कुछ दूरी पर फारमूसा द्वीप (Formosa) है जो जापान के

हुआ है। इस प्रायद्वीप के पश्चिम के किनारे पर मरगोइ द्वीपसमूह (Mergui Archipelago) स्थित है और इसके दक्षिण भाग और सुमात्रा के बीच में मलक्का (Malacca Strait) जलडमरूमध्य स्थित है। इस प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे पर एक छोटे-से द्वीप में सिंगापुर (Singapore) का प्रसिद्ध बन्दरगाह स्थित है। यह बन्दरगाह अँगरेजों के अधिकार में है और दुनिया के अच्छे बन्दरगाहों में से है। रेल के जंक्शन की तरह यह भी समुद्री मार्गों का केन्द्र है। यहाँ चारों ओर से माल आता और एक तरफ का माल दूसरी तरफ को रवाना कर दिया जाता है। जैसे, यदि कोई बड़ा जहाज चीन से इँगलिस्तान जा रहा हो तो वह अपना माल यहाँ उतार देगा और यहाँ से चारों ओर, जहाँ जहाँ इस माल की आवश्यकता होगी, छोटे जहाज पहुँचा देंगे।

सिंगापुर से फिर उत्तर की ओर मलाया प्रायद्वीप के दूसरे किनारे किनारे यात्रा करने के बाद स्याम की खाड़ी (Gulf of Siam) मिलती है। यहाँ मीनाम नदी के किनारे बैंकाक नगर (Bangkok) स्थित है। इस खाड़ी के उत्तर में मीनाम और मीकांग नदी के मैदान स्थित हैं। इन मैदानों के बाद अनाम की पहाड़ी के किनारे किनारे यात्रा करने से चीन मिलता है। चीन में सिक्यांग नदी (Sikiang) के मुहाने पर वहाँ का प्रसिद्ध बन्दरगाह कान्टन (Canton) है। इसी कान्टन बन्दरगाह के बिलकुल सामने हांग कांग (Hong-kong) है जो ब्रिटिश साम्राज्य का एक बड़ा महत्त्व-पूर्ण द्वीप है। इसी द्वीप के कारण चीन और पूर्व के दूर दूर देशों से व्यापार की रक्षा होती है। यह द्वीप क़िले की तरह बहुत मजबूत बना हुआ है। यहाँ अँगरेज और हिन्दुस्तानी सिपाहियों का पहरा रहता है। अँगरेजों की उस सामुद्रिक सेना का केन्द्र भी यही द्वीप है जो इस भाग की रक्षा के लिए नियत है। इस द्वीप का बन्दरगाह

बहुत सुन्दर और मनोहर है और पूर्वी एशिया में व्यापार का सबसे बड़ा स्थान है। सिंगापुर की तरह हाँग काँग भी व्यापार की बड़ी मंडी है। दूसरे देशों से जो माल यहाँ आता है, वह यहाँ से चारों ओर बँटता रहता है।

हाँग-काँग से उत्तर की ओर चीन के समुद्र तट का रूप अर्धवृत्त के समान है और जगह-जगह से कटा हुआ है। इस तट पर बहुत से छोटे छोटे द्वीप और बन्दरगाह स्थित हैं।

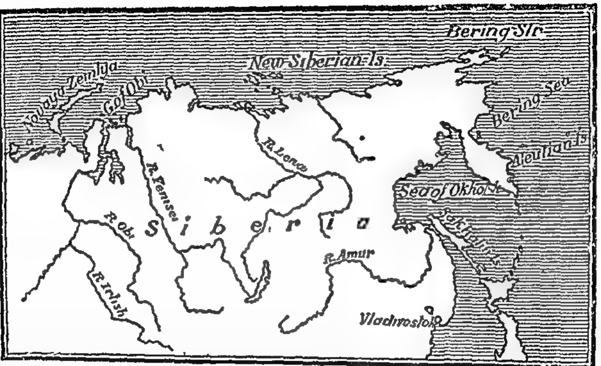


इस समुद्र तट के बन्दरगाहों में अमाय (Amoy), फूचू (Foochow) और निंगपो (Ningpo) अधिक सुन्दर हैं। चीन से कुछ दूरी पर फारमूसा द्वीप (Formosa) है जो जापान के

अधिकार मे है। चीन मे किनारे के भागो मे हजारो गाँव और कसबे मिलते हैं और बहुत-से स्थानो पर नगर और बन्दरगाह हैं। समुद्र-तट का सारा भाग या तो खेतो का मैदान है या पहाड़ी ढाल है जहाँ चाय, रेशम और धान इत्यादि की खेती होती है। शघाई (Shanghai) यॉगटिसीक्याँग नदी के मुहाने पर प्रसिद्ध बन्दरगाह है। शघाई बन्दरगाह से उत्तर की ओर पीला सागर (Yellow Sea) और पिचली की खाड़ी (Gulf of Pechili) का किनारा है। यह किनारा बहुत उपजाऊ मैदान है। पिचली की खाडी मे हागहो (R Hoang-Ho) और पीहो (R Peiho) नदियाँ गिरती हैं। पीहो नदी के चालीस मील ऊपर टिन्टसिन (Tientsin) नामक बन्दरगाह है। इस बन्दरगाह के द्वारा चीन की पुरानी राजधानी पेकिन (Pekin) का व्यापार होता है। पिचली की खाडी के उत्तर में पोर्टआर्थर (Port Arthur) बन्दरगाह है। यह जापान के अधिकार में है।

पीले सागर के उत्तर में कोरिया (Korea) प्रायद्वीप को नक़्शे मे देखो। यह पहाडी प्रायद्वीप पूर्वी चीन सागर को जापान सागर से अलग करता है। जापान के सागर में जापानी लोग मछलियों का बडा व्यापार करते हैं।

कोरिया प्रायद्वीप से उत्तर का जलवायु बहुत बदल जाता है। इस परिवर्तन का प्रभाव किनारे को देखकर भी मालूम हो जाता है क्योकि कोरिया प्रायद्वीप के आगे उत्तर की ओर पेड़ो से हरे-भरे किनारो और व्यापारिक कार-बार के बदले किनारों पर बंजर और सूखे स्थान तथा चट्टान दिखाई पडती हैं। कहीं कहीं पर छोटे छोटे कस्बे और गाँव अवश्य हैं। साइबेरिया (Siberia) के किनारे का बहुत बडा भाग रेगिस्तानी है परन्तु अरब की तरह गर्मी की अधिकता और वर्षा की कमी से उसकी यह दशा नही हुई है, बल्कि अधिक सर्दी पडने के कारण


Bering Str.
New Siberian Is.
Novaya Zemlya
G. of Obi
Bering Sea
Aleutian Is.
Sea of Okhotsk
R. Lena
R. Yenisei
R. Obi
R. Irtish
Siberia
R. Amur
Vladivostok

चि० ३

हो गई है। ब्लाडीवोस्टक (Vladivostok) बन्दरगाह को देखो। उसमें जाड़े की ऋतु में बर्फ जम जाने के कारण दो महीने तक आना-जाना बन्द रहता है। फिर भी यह पैसिफिक महासागर में रूस का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। इसी सड़क से यह रेल की सड़क आरम्भ होती है, जो साइबेरिया में होकर रूस के बन्दरगाह लेनिनग्रेड (Leningrad) तक चली गई है।

अमूर नदी के मुहाने तक का समुद्र तट कड़ी चट्टानों का बना हुआ है। नकशे में देखकर उस द्वीप का नाम बताओ, जो इस नदी के मुहाने के सामने स्थित है और उस अन्दरूनी समुद्र का नाम बताओ, जिसके अन्दर अमूर नदी गिरती है। सबसे आखिरी अन्दरूनी समुद्र बेरिंग सागर (Bering Sea) है। यह सागर सील और ह्वेल मछलियों तथा बर्फ के पहाड़ों के लिए प्रसिद्ध है। इस समुद्र का जितना भाग एशिया में है उतना ही अमरीका में है। बहुत से द्वीपों की उन श्रेणियों का जो इस समुद्र को कई ओर से घेरे हुए हैं, एशिया से कोई भी सम्बन्ध नहीं है।

एशिया के उत्तरी किनारे पर बहुत ठंडक पड़ती है और यह साल में अधिकांश बर्फ से ढका रहता है।

प्रश्न

१—समुद्र-तट किसे कहते हैं ?

२—बन्दरगाह क़ायम होने के लिए किनारे पर कौन कौन-सी बातें होनी चाहिएँ ?

३—एशिया के कौन से तट बीरान और रेगिस्तान हैं, कौन से पहाड़ी और कौन से नीचे उपजाऊ मैदानों पर स्थित हैं ?

४—एशिया का उत्तरी किनारा काफी कटा हुआ है। इस किनारे पर कई बड़ी नदियों के मुहाने हैं और इसके पीछे की ज़मीन में नीचे मैदान हैं। लेकिन फिर भी यहाँ बन्दरगाह नहीं हैं। इसका कारण बताओ।

५—कराची से पश्चिम की ओर यदि काले सागर तक यात्रा करें तो किन समुद्रों, जलसंयोजकों तथा किन किन देशों से होकर जाना होगा और रास्ते में कौन कौन से बन्दरगाह तथा द्वीप मिलेंगे?

६—इसी तरह रंगून से पूर्व की ओर समुद्र के किनारे यात्रा करने से किन किन स्थानों से जाना होगा?

७—चीन के पूर्वी किनारे पर कई बड़े बन्दरगाह क्यों स्थित हैं?

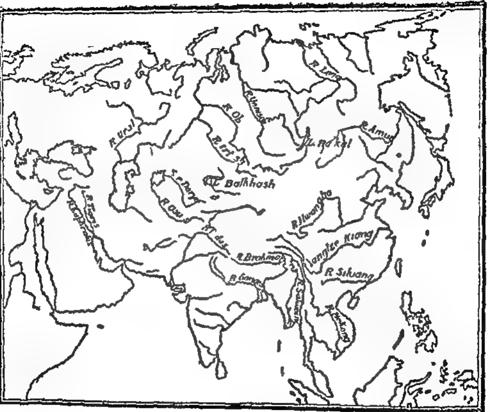
चौथा प्रकरण

एशिया की नदियाँ

एशिया के मध्य में जो पर्वतमालाओं का केन्द्र है, वहीं से एशिया की प्राय सभी बडी बडी नदियाँ निकली हैं। पहिये की धुरी से जैसे चारो ओर छड जाती हैं, वैसे ही एशिया की नदियाँ इस मध्यवर्ती केन्द्र से चारों ओर फैली हुई हैं। यद्यपि इस स्थान मे शीत की अधिकता और भोजन की कमी के कारण अधिक प्राणी नहा रह सकते, तथापि उससे जो नदियाँ निकलती हैं वे लाखा मनुष्यो का उपकार करती हैं।

एशिया में इतनी अधिक नदियाँ हैं कि उनके अलग अलग वर्ग कर लेना अच्छा है। नक़्शे मे देखने से तुमको नदियों के चार वर्ग स्पष्ट दिखाई देंगे। एक वर्ग आर्कटिक महासागर में गिरता है, दूसरा पैसिफ़िक महासागर मे और तीसरा हिन्द-महासागर में गिरता है। चौथे वर्ग मे वे नदियाँ हैं जो किसी समुद्र में नहीं गिरतीं। अब हम क्रम से इन नदियों का वर्णन करते हैं।

१—आर्कटिक महासागर में गिरनेवाली नदियाँ—साइबेरिया में तीन मुख्य नदियाँ ओबी, येनीसी और लीना (Obi, Yenisei and Lena) हैं। यह तो तुम जानते हो कि इन नदियों के नीचे का भाग लगभग वर्ष भर जमा रहता है, इसी लिए ये कभी कभी अपने किनारों से बाहर निकलकर बहने लगती हैं, और बडे बडे दलदल पैदा हो जाते हैं। उस हिस्से में इन नदियो से कोई लाभ नही होता। हाँ, दक्षिण की ओर जहाँ का जलवायु अधिक ठंडा नहीं



Asia—Rivers

है वहाँ इन नदियों की घाटियों में बहुत-सा गेहूँ पैदा होता है। ये और इनकी सहायक नदियाँ आने-जाने के लिए अच्छे मार्ग बनाती हैं। इनमें नाव आसानी से चलती हैं। उत्तर की ओर, जहाँ बर्फ जमी रहती है वहाँ, नाव नहीं चल सकती और, वहाँ कोई व्यापार भी नहीं होता। अपने नक़शे में ओबी-येनीसी और लीना नदियों के मार्गों को देखो।

नक़शे में देखने से तुम्हें येनीसी नदी के बेसिन में बैकाल झील (Lake Baikal) दिखाई देगी। यह एशिया में मीठे पानी की सबसे बड़ी झील है। गहरी भी यह बहुत है। जाड़े में यह कई सप्ताह तक बर्फ से ढकी रहती है।

२—प्रशान्त महासागर में गिरनेवाली नदियाँ—अमूर नदी (R Amur) मंगोलिया के पहाड़ों से निकलती है। यह सैकड़ों मील तक मंगोलिया और साइबेरिया की सीमा पर बहती हुई अंत में साइबेरिया के भीतर से बहती है। यद्यपि इसका पहाड़ी मार्ग बहुत लम्बा है, किन्तु मनुष्य के बहुत कम काम का है। हाँ, नीचे उतरने पर इसके द्वारा एक बड़े मैदान की सिंचाई होती है और लगभग वर्ष के आधे समय में, अर्थात् जब तक यह जम नहीं जाती, लोग नावों पर माल लाते और भली भाँति व्यापार करते हैं। इसकी एक सहायक नदी सुन्गारी (R Sungari) है जो मंचूरिया (Manchuria) के मैदानों को सींचती है जहाँ गेहूँ की खेती होती है।

ह्वांग हो नदी (R Hoang-Ho) उत्तरी चीन की पीली मिट्टी के प्रसिद्ध मैदान में होकर बहती है। इसमें नावों के द्वारा व्यापार करना असम्भव है, क्योंकि कहीं तो यह इतने वेग से बहती है कि नाव डाली जाने पर उसका पता न लगे और कहीं इतनी कम गहरी है कि नाव चल ही नहीं सकती। परन्तु इसके द्वारा उन मैदानों को जल तथा उपजाऊ मिट्टी मिल

जाता है, जा दुनिया में सबसे अधिक घने बसे हुए हैं। इसमे बाढ आती है। मुहाने के निकट यह विशेष कर बाढ़ पर रहता है। चीन निवासी कहते हैं कि यह भिन्न भिन्न मार्गों से बहकर समुद्र मे गिरी है और जब कभी इसने किनारों को तोडकर अपना मार्ग बदला है तब इसने बहुत हानि पहुँचाई है। इसी लिए चीन-निवासी इस नदी को 'चीन की आपत्ति' के नाम से पुकारते हैं।

यांग टिसी-क्याग चीन मे सबसे बडी नदी है। यह तिब्बत के मध्य से निकलती है और चीन के मध्यवर्ती भागों को सींचती है। यही कारण है कि चीन का मध्यवर्ती मैदान बहुत उपजाऊ और घना बसा हुआ है। इसके अतिरिक्त यह नदी बहुत लाभदायक है, क्योंकि इसके द्वारा व्यापार बहुत होता है।

सी-क्याग (Si-Kiang) वैसी प्रसिद्ध नदी नहीं है जैसी याग टिसी-क्याग और ह्वाग हो हैं। इसके कई मुहानों में से एक मुहाने पर कान्टन (Canton) का बडा बन्दरगाह स्थित है। कान्टन में लाखो मनुष्य नदी मे नावो पर घर बनाकर रहते हैं।

इंडोचीन की मेकाग और मेनाम नदियाँ भी प्रशान्त महासागर मे गिरती हैं। पहली तिब्बत से निकलती है, दूसरी एक छोटी नदी है। नक़शे को देखकर बतलाओ कि मेकाग किन किन प्रदेशो को एक दूसरे से अलग करती है। ये नदियाँ अपने पहाडी भाग के सघन वनों में वेग से बहती हैं किन्तु नीचे चलकर इन्होंने अपने मुहाने पर जो मैदान बनाये हैं वे बहुत ही उपजाऊ और अत्यन्त घने बसे हुए हैं।

३—हिन्द महासागर में गिरनेवाली नदियाँ—शातल अरब (Shat el Arab) नदी को छोड कर जितनी नदियाँ हिन्द महासागर मे गिरती हैं, वे सब भारतीय साम्राज्य की हैं। नकशा को देखकर बह्मा की दो नदियों, उत्तरी भारतवर्ष की तीन नदियो और दकन (Deccan) की नदियो के मार्गों को

फरात और दजला (Euphrates and Tigris) नाम की दो नदियाँ आरमीनिया के पठार से निकल कर मेसोपोटामिया (Mesopotamia) में बहती हुई फारस की खाड़ी में एक साथ मिलकर गिरती हैं, और उनके संगम से शातल-अरब बनता है। इन नदियो मे कोई प्रसिद्ध सहायक नदी नहीं गिरती, इसी से उन प्रान्तों मे कृषि के लिए नहरों की बड़ी आवश्यकता है। दजला नदी म बगदाद शहर तक जहाज चले जाते हैं परन्तु फरात मे व्यापार बहुत कम होता है।

४—समुद्रों में न गिरनेवाली नदियाँ—या तो रेगिस्तानों में पाई जाती हैं या ऐसी जगह म हाकर बहती हैं जिसके आस पास की भूमि उनके बहाव स ऊँची है।

थियान-शान और क्वेन लन पहाडों के बीच एक बेसिन है जिसमें तारिम (R Tarim) नदी बहती है। यद्यपि यह नदी लम्बाई में गगा से बडी है, तथापि यह लोब नार (Lob Nor) नाम की एक झील मे गिरती है। गर्मी के दिना में इस नदी में खूब पानी रहता है क्योंकि बर्फ पिघलती रहती है। किन्तु जाडे में यह कई जगह सूख जाती है। काशगर (Kashgar) और यारकन्द (Yarkand) के शहर इसी नदी के किनारे बसे हुए हैं।

अब ईरान के सटो को देखो। हम पहले लिख चुके हैं कि यह प्याले की तरह है। क्या इसकी कोई नदी समुद्र तक पहुँचती है? सबस बडी नदी का नाम हेलमन्द (R Helmand) है। अफगानिस्तान का दूसरे नम्बर का शहर कन्दहार (Kandhar) इसी के किनारे पर बसा हुआ है। काबुल नदी इस पठार के उत्तरी पूर्वी भाग का पानी हिन्दुस्तान की सिन्ध नदी मे बहा लाती है।

अब उस बडे मैदान को ढूँढो जिसमें केस्पियन सागर (Caspian Sea), अरल सागर (Aral Sea) और बाल्काश

झील (L Balkash) है। ये सभी झीलें खारी हैं। कास्पियन सागर समुद्र की सतह से ८६ फीट नीचा है। कैस्पियन सागर में गिरनेवाली नदियाँ उत्तर से आती हैं और अरल सागर में गिरनेवाली दक्षिण पूर्व से। बालकश झील में जो नदियाँ गिरती हैं वे पूर्व से आती हैं। नक्शे में इन नदियों की खोज करो।

हम एक और नदी तुम्हें बताना चाहते हैं। वह है तो छोटी परन्तु मार्के की है। नक्शे में पेलिस्टाइन (Palestine) को ढूँढो। यह भू-मध्य सागर के पूर्व में है। यहाँ समुद्री किनारे से कुछ दूर जार्डन (R Jordan) नदी बहती है जो मृतक सागर (Dead Sea) में गिरती है। धरातल का कोई भाग इस झील के इतना नीचा नहीं है। इसकी सतह समुद्र तल से १,३०० फीट नीची है।

प्रश्न

१—उत्तरी एशिया के बड़े मैदान का वृत्तांत लिखो। वहाँ की नदियों का भी हाल लिखो।

२—नदियों से मनुष्य के कौन कौन से बड़े काम निकलते हैं? ये काम साइबेरिया की नदियों से क्यों नहीं निकलते?

३—एशिया की किन नदियों से बहुत बड़ी जन-संख्या का निर्वाह होता है और क्यों?

४—नक़्शे में देखकर बताओ कि एशिया की कौन-कौन-सी नदियाँ समुद्र में नहीं गिरतीं। ये किन झीलों और सागरों में गिरती हैं?

अभ्यास

एशिया का एक ख़ाका खींचो और उसमें उसकी बड़ी बड़ी नदियाँ, पहाड़ और बन्दरगाह दिखलाओ।

पाँचवाँ प्रकरण

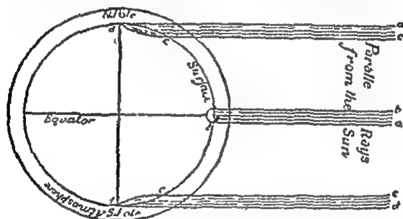
जलवायु

हिन्दुस्तान का भूगोल पढने से तुमको भली भाँति ज्ञात हो गया होगा कि इसके प्रत्येक स्थान का जलवायु एक-सा नहीं है। किसी भाग में वर्षा अधिक होती है और किसी भाग में बहुत कम, कुछ स्थान बहुत सर्द रहते हैं और कुछ बहुत गर्म, और कोई कोई स्थान ऐसे भी हैं जो कभी सर्द रहते हैं और कभी गर्म। यही दशा दुनिया के और भागों के जलवायु की है। भिन्न भिन्न भागों का जलवायु भी भिन्न होता है।

किसी स्थान का जलवायु मालूम करने के लिए हमें पहले नीचे लिखी हुई बातों का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। एक तो यह कि उस स्थान का वायु कितना गर्म या सर्द है, और उसकी सर्दी या गर्मी साल भर बराबर रहती है अथवा वर्ष के कुछ महीनों तक सर्द रहता है और कुछ महीनों में गर्म हो जाती है। दूसरे यह कि उस स्थान की हवा नम है या खुश्क अर्थात् वहाँ पानी बरसता है या नहीं, और यदि बरसता है तो कम या अधिक और साल के किस भाग में। तीसरे यह कि उस स्थान पर हवायें किस तरफ से आती हैं, और साल भर हवायें एक ही तरफ से आती रहती हैं या उनका रुख़ बदलता रहता है। किस समय में हवायें वेग से चलती हैं और कब हलकी। बात यह है कि किसी स्थान के जलवायु से हमारा मतलब हवा की उस हालत से है जो गर्मी या नमी के कारण होती रहती है।

इन बातों को मालूम करने के लिए हम निम्नलिखित बातें भली भाँति समझ लेनी चाहिए, क्योंकि जलवायु इन्हीं बातों पर निर्भर रहता है—

१—भूमध्य रेखा से दूरी—जो स्थान भूमध्य रेखा के निकट हैं वे उन स्थानों की अपेक्षा गर्म होते हैं जो भूमध्य रेखा से अधिक दूर होते हैं। इसका कारण यह है कि भूमध्य



रेखा के निकटवर्ती स्थानों पर सूर्य्य की किरणें अधिक सीधी पड़ती हैं, और अधिक तेजी से चमकती हैं। ध्रुवों की ओर ये किरणें अधिकाधिक तिर्छी होती जाती हैं, इस कारण ये स्थान अधिक ठण्डे होते हैं।

चित्र को ध्यान से देखो, AB और CD दोनों बराबर मोटी किरणें पृथ्वी की गोल सतह पर पड़ रही हैं। भूमध्य रेखा पर AB किरणें सीधी पड़ रही हैं और उनकी कुल गर्मी धरातल के थोड़े से ही भाग पर पड़ रही है, इसलिए वह भाग खूब गर्म हो जाता है। इसके विरुद्ध, CD किरणें ध्रुवों के समीपवर्ती स्थानों पर तिर्छी और पृथ्वी के अधिक भाग पर पड़ती हैं,

इसलिए उनकी गर्मी धरातल के अधिक भाग पर फैलकर कम हो जाती है और ये भाग अधिक ठण्डे रहते हैं।

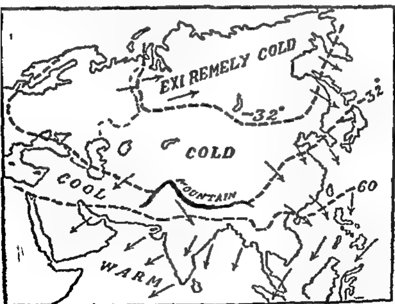
एशिया महाद्वीप विषुवत रेखा से लेकर लगभग उत्तरी ध्रुव तक फैला हुआ है, यही कारण है कि उसमें हर तरह की जलवायु पाया जाता है। इसके सबसे उत्तरी भाग में कड़ी सर्दी और दक्षिणी भाग में कड़ी गर्मी पड़ती है। बीच के भागों की जलवायु साधारण है।

नक्शे में विषुवत् रेखा से भिन्न भिन्न स्थानों की दूरी अक्षांश रेखाओं के द्वारा दिखलाई जाती है, इससे हम कह सकते हैं कि पृथ्वी के वे स्थान, जिनका अक्षांश कम वहाँ अधिक गर्म रहते हैं, और जिनका अक्षांश अधिक है उनमें कम गर्मी होती है। जैसे, हिन्दुस्तान के ये चारो शहर—(१) कोलम्बो, (२) मद्रास, (३) बम्बई और (४) कलकत्ता—यद्यपि समुद्र तट पर स्थित हैं पर सबमें बराबर गर्मी नही पड़ता। कोलम्बो में सबसे अधिक गर्मी पड़ती है, क्योंकि उसका अक्षांश कम (७½°) है। मद्रास का अक्षांश १३° है, इस कारण वहाँ यहाँ से भी कम गर्मी पड़ती है। बम्बई का अक्षांश १९° उत्तर है इसलिए वह इन दोनो स्थानो से कम गर्म है। कलकत्ते में तो इन सबसे कम गर्मी पड़ती है क्योंकि उसका अक्षांश २४½° है। इसी प्रकार एशिया में साइबेरिया सबसे अधिक ठण्डा है। मध्य के देश जैसे चीन, तुर्किस्तान आदि कम सर्द हैं और हिन्दुस्तान, मलाया और अरब आदि दक्षिणी देश सबसे अधिक गर्म हैं।

२—समुद्र से धरातल की ऊँचाई—एक ही अक्षांश के ऊँचे स्थान नीचे स्थानों से अधिक ठण्डे रहते हैं। जो स्थान जितना ही ऊँचा होगा वह उतना ही अधिक सर्द होगा। जैसे, शिमला और लाहौर भूमध्य रेखा से लगभग बराबर दूरी पर हैं, इसलिए शायद तुम ख्याल करो कि इन दोनों स्थानों पर बराबर गर्मी होनी

चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है, क्योंकि शिमला लाहौर से कहीं अधिक ऊँचा है। इसी से यह गर्मियों की ऋतु में भी अधिक सर्द रहता है। हिमालय और दूसरे ऊँचे पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ सदा ही बर्फ से ढकी रहती हैं। इसका कारण यह है कि जब सूर्य चमकता है तो उसकी किरणें हवा को गर्म नहीं करतीं बल्कि उसमें प्रवेश करके पृथ्वी की सतह पर पड़ती हैं और उसे गर्म कर देती हैं। धरातल गर्म होकर अपने ऊपर की हवा की तह को गर्म कर देता है, पर अधिक ऊपर की तहें ठण्डी ही रह जाती हैं।

अब एशिया के प्राकृतिक नक्शे को देखकर बताओ कि तुम्हारी समझ में तुर्किस्तान अधिक गर्म है या तिब्बत।



Asia—January Temperature

३—समुद्र से दूरी—समुद्र से समीप के स्थान उन स्थानों

जाड़े में कम ठण्डे रहते हैं। उदाहरण के लिए बम्बई और नागपुर दो शहर ले लीजिए। बम्बई समुद्र के किनारे स्थित होने के कारण गर्मी में कम गर्म और जाड़े में कम सर्द रहता है, इसी तरह इलाहाबाद में गर्मी की ऋतु में अधिक गर्मी और जाड़े में कलकत्ते की अपेक्षा अधिक जाड़ा पड़ता है। इसका कारण यह है कि रेत या पत्थर की अपेक्षा पानी देर में गर्म या सर्द



Asia—July Temperature

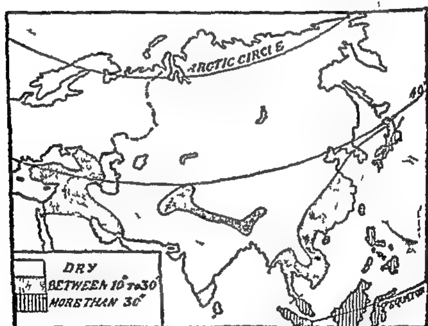
होता है। गर्मियों की ऋतु में समुद्र का जल गर्मी को ले लेता है और उसके ऊपर की हवा गर्म नहीं होने पाती। इसलिए जो हवायें समुद्र से पृथ्वी की ओर चलती हैं व समुद्र के निकटवर्ती स्थानों को कुछ ठण्डा कर देती हैं। जाड़े में समुद्र से दूर के स्थान शीघ्र ही ठण्डे हो जाते हैं पर समुद्र का पानी इतनी जल्दी

ठण्डा नहीं होता, इसलिए उसके ऊपर की हवा भी जल्दी ठण्डी नहीं होती और यही हवा तट पर के स्थानों को गर्म रखती है। इसलिए समुद्र के समीपवर्ती देशों की ग्रीष्म और शरद् ऋतुओं में अधिक अन्तर नहीं होता। ऐसे जलवायु को समान या समुद्री जलवायु कहते हैं। समुद्र से दूर के देशों में ग्रीष्म ऋतु अधिक गर्म और शरद् ऋतु अधिक ठण्डी होती है। अर्थात् वहाँ ग्रीष्म और शरद् ऋतुओं में अधिक अन्तर पड़ता है। ऐसे जलवायु को स्थलीय जलवायु कहते हैं। एशिया महाद्वीप का एक बड़ा मध्यवर्ती भाग समुद्र के प्रभाव से बहुत दूर है, इसलिए वह गर्मियों में अत्यन्त गर्म और शीतकाल में अत्यन्त ठण्डा रहता है। पर समुद्र तट का जलवायु भीतरी दूर के स्थानों के जलवायु की अपेक्षा अधिक समान होता है।

४—हवाओं का रुख और वर्षा—जो हवायें समुद्र की ओर से आती हैं वे जलवायु को कुछ समान बना देती हैं। इसके सिवा वे अपने साथ समुद्र से भाप लाती हैं, जिससे समुद्र की ओर के पहाड़ी ढालों पर पानी अधिक बरसता है। पहाड़ों के दूसरी ओर के ढाल और देश शुष्क रह जाते हैं। तुम पढ़ चुके हो कि जब मानसून हवायें ग्रीष्म ऋतु में हिन्द महासागर से चलकर हिमालय पहाड़ के दक्षिणी ढालों पर टकराती हैं तब वहाँ वर्षा बहुत अधिक होती है। और तिब्बत अत्यन्त शुष्क रह जाता है। किन्तु स्थल की ओर से समुद्र की तरफ चलनेवाली हवायें गर्मी में गर्म और शीतकाल में ठण्डी रहती हैं, इसलिए जिन स्थानों पर से ये गुजरती हैं उनको ऋतुओं के अनुसार, गर्म या ठण्डा कर देती हैं। साथ ही इन हवाओं के खुश्क रहने के कारण वर्षा बिलकुल नहीं होती।

अब एशिया की वर्षा और हवाओं के रुख को नक़्शे में ध्यान से देखो। ग्रीष्म ऋतु में एशिया महाद्वीप का मध्यवर्ती

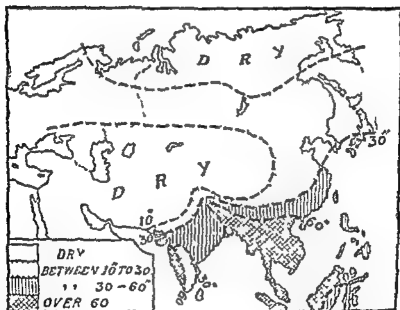
भाग बहुत गर्म हो जाता है। गर्मी के कारण यहाँ की हवा हलकी होकर ऊपर को उठ जाती है और उसकी जगह समुद्र से ठण्डी और भारी हवा आ जाती है। नक्शे में देखो कि हिन्द महासागर की हवायें दक्षिण-पश्चिम से धरातल की ओर जाती हैं और हिमालय, ब्रह्मा और इन्डोचीन के पर्वतों से टकराकर बहुत पानी बरसाती हैं। पर ये हवायें अरब और ईरान की



Asia—Winter Rainfall

ओर नहीं जातीं, जिससे वे भाग सदैव सूखे रहते हैं। इसी तरह प्रशान्त महासागर की हवायें दक्षिण पूर्व की ओर से महाद्वीप के मध्यवर्ती स्थानों की ओर जाती हैं, इसलिए एशिया के पूर्वी देशों में पर्याप्त पानी बरसाती हैं। दक्षिणी तटों पर वर्षा अधिक होती है और उत्तरी तटों पर कम।

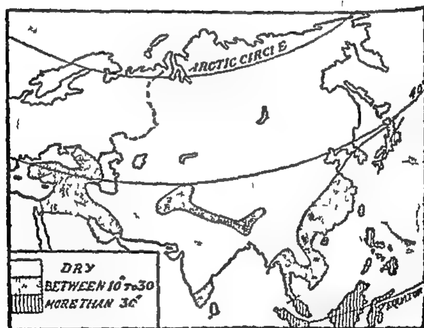
अब शीतकाल के नक्शे में हवाओं के रुख को ध्यानपूर्वक देखो। इस ऋतु में मध्य एशिया अधिक ठण्डा हो जाता है, इसलिए जाड़े के कारण यहां की हवा भारी हो जाती है और समुद्र की ओर चलने लगती है। ये हवायें एशिया के पूर्वी देशों को ठण्डा कर देती हैं, पर हिमालय पर्वत के कारण हिन्दुस्तान में नहीं



Asia—Summer Rainfall

आने पातीं। इन हवाओं के शुष्क होने के कारण पानी नहीं बरसता। एशिया में इन हवाओं को, जो प्रत्येक ऋतु में अपना रुख बदलती हैं, मानसूनी हवायें कहते हैं। एशिया के दक्षिण और पूर्वी भाग, जिन पर हवायें चलती हैं, मानसूनी प्रदेश कहलाते हैं। मानसूनी देशों में वर्षा केवल ग्रीष्म-ऋतु में

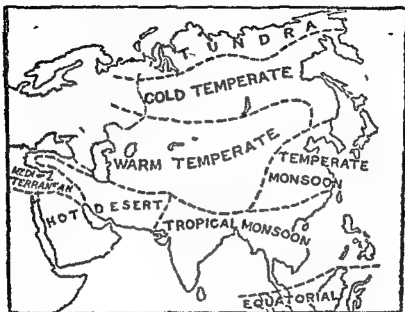
भाग बहुत गर्म हो जाता है। गर्मी के कारण यहाँ की हवा हलकी होकर ऊपर को उठ जाती है और उसकी जगह समुद्र से ठण्डी और भारी हवा आ जाती है। नक़्शे में देखो कि हिन्द महासागर की हवायें दक्षिण-पश्चिम से धरातल की ओर जाती हैं और हिमालय, ब्रह्मा और इंडोचीन के पर्वतों से टकराकर बहुत पानी बरसाती हैं। पर ये हवायें अरब और ईरान की



Asia—Winter Rainfall

ओर नहीं जाती, जिससे वे भाग सदैव सूखे रहते हैं। इसी तरह प्रशान्त महासागर की हवायें दक्षिण पूर्व को ओर से महाद्वीप के मध्यवर्ती स्थानों की ओर जाती हैं, इसलिए एशिया के पूर्वी देशों में पर्याप्त पानी बरसाती हैं। दक्षिणी तटों पर वर्षा अधिक होती है और उत्तरी तटों पर कम।

पश्चिम की ओर वह कम हो जाती है। इन हवाओं का रुख हिन्द तथा प्रशान्त महासागरों में देखो।



Asia—Climatic Regions

शीतकाल में दक्षिणी भाग गर्म रहता है लेकिन उत्तरीय प्रदेश ठण्डे रहते हैं। इस मौसिम में हवायें स्थल की ओर से जल की ओर चलती हैं, इस कारण वे शुष्क और ठण्डी रहती हैं, और पानी नहीं बरसातीं।

२—मध्य एशिया का पर्वतीय खण्ड—यह भाग हिमालय के उत्तर तथा चीन के पश्चिमी पहाड़ों के पश्चिम में स्थित है तथा समुद्र से बहुत दूर है इस कारण यहाँ, बहुत ऊँचे स्थानों के अतिरिक्त, और सब जगह ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी पड़ती है और शरद् ऋतु में सारा प्रान्त बहुत सर्द हो जाता है। इस

होती है। अनाम और मद्रास के तटों पर जाड़े में थोड़ी सी वर्षा हो जाती है।

एशिया के पश्चिम में रूम सागर के समीप के हिस्से को देखो। इस भाग में केवल शीतकाल में रूम सागर की ओर से पश्चिमी हवायें आती हैं, इसलिए रूम सागर के किनारे के देशों में जाड़ों में वर्षा होती है। गर्मी के मौसम में ये हवायें नहीं चलतीं, इसलिए यह मौसम सूखा रहता है।

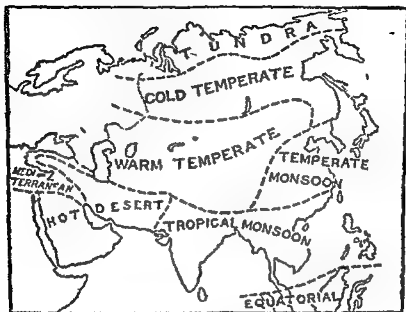
जलवायु के अनुसार एशिया के भाग—जलवायु के अनुसार एशिया महाद्वीप निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है—

१—विषुवत रेखा के समीप का गर्म व सीला भाग—इस भाग में एशिया के दक्षिण पूर्व के द्वीपसमूह और मलाया प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

एशिया के ग्रीष्म-ऋतु और शीतकाल के जलवायु के नक्शों में एशिया के दक्षिण-पूर्व के द्वीपसमूह और मलाया प्रायद्वीप को ध्यानपूर्वक देखो। इन स्थानों पर वर्ष भर अधिक गर्मी पड़ती और साल भर पानी बरसता है।

२—मानसून पवनों का खण्ड—यह भाग मध्य एशिया के पठारों के दक्षिण और पूर्व में स्थित है। इसमें हिन्दुस्तान, इंडोचीन, चीन और जापान आदि देश सम्मिलित हैं। जलवायु के नक्शे को देखने से ज्ञात होगा कि ग्रीष्म ऋतु में इन स्थानों पर अधिक गर्मी पड़ती है। इस महाद्वीप में इस मौसम में हवायें प्रशान्त और हिन्द महासागर की ओर से आया करती हैं। ये हवायें इन समुद्रों से अपने साथ खूब नमी लाती हैं और इस सम्पूर्ण प्रान्त में खूब मेह बरसाती हैं। इंडोचीन और उसके निकट के स्थानों में सबसे ज्यादा पानी बरसता है। इसके उत्तर और

पश्चिम की ओर वह कम हो जाती है। इन हवाओं का रुख हिन्द तथा प्रशान्त महासागरों में देखो।



Asia—Climatic Regions

शीतकाल म दक्षिणी भाग गर्म रहता है लेकिन उत्तरीय प्रदेश ठण्डे रहते हैं। इस मौसिम में हवायें स्थल की ओर से जल की ओर चलती है, इस कारण व शुष्क और ठण्डा रहते हैं, और पानी नहीं बरसातीं।

२—मध्य एशिया का पर्वतीय खण्ड—यह भाग हिमालय के उत्तर तथा चीन के पश्चिमी पहाड़ों के पश्चिम में स्थित है तथा समुद्र से बहुत दूर है इस कारण यहाँ, बहुत ऊँचे स्थानों के अतिरिक्त, और सब जगह ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी पड़ती है और शरद् ऋतु में सारा प्रान्त बहुत सर्द हो जाता है। इस

भाग में, जो हवायें ग्रीष्म ऋतु में हिन्द व प्रशान्त महासागरों से आती हैं वे किनारे के पहाड़ों से टकराकर पानी बरसाती हैं, और इस भाग में पहुँचते पहुँचते बिलकुल शुष्क हो जाती हैं। शरद्-ऋतु में इस प्रान्त से बाहर की ओर ठण्डी हवायें चलने लगती हैं, इसलिए वे बहुत ही शुष्क होती हैं। संक्षेप में इस प्रान्त में वर्षा बहुत कम या नहीं के बराबर ही होती है। इसी से इस प्रदेश का अधिकतर भाग रेगिस्तानी व उजाड़ है।

४—<u>पश्चिमी शुष्क पठार</u>—इस भाग में ईरान का पठार, अरब और एशियाई कोचक के ऊँचे प्रदेश आते हैं। इन स्थानों का जलवायु शरद्-ऋतु में समान रहता है अर्थात् यहाँ मामूली ठण्डक पड़ती है, किन्तु गर्मियों में इन भागों में अत्यधिक गर्मी पड़ती है। इसका कारण यह है कि इन भागों की ज़मीन बहुत रेतीली है और पानी बहुत ही कम बरसता है।

५—<u>रूम सागर का जलवायुवाला प्रान्त</u>—इस भाग में एशिया के पश्चिमी और रूम सागर के तटीय भाग सम्मिलित हैं। इन स्थानों में गर्मी और जाड़े, दोनों ही ऋतुओं में जलवायु समान रहता है। वर्षा केवल शीतकाल में होती है।

६—<u>उत्तरीय समान जलवायु का खण्ड</u>—इस खण्ड में साइबेरिया का वह भाग शामिल है, जो मध्यवर्ती पर्वतों के उत्तर में स्थित है। इस भाग में शीतकाल में इतनी अधिक ठण्डक पड़ती है कि पृथ्वी बर्फ से ढकी रहती है। ग्रीष्म ऋतु में गर्मी अधिक नहीं पड़ती, फिर भी बर्फ पिघल जाती है। गर्मियों में यहाँ पर थोड़ी सी वर्षा भी हो जाती है।

७—<u>स्टेप्स के जलवायुवाला प्रदेश</u>—यह भाग मध्यवर्ती पर्वतश्रेणियों के पश्चिम में स्थित है, अर्थात् इस भाग में साइबेरिया के दक्षिण-पश्चिमी निचले मैदान आते हैं। इन भागों में शरद्

ऋतु में अत्यधिक सर्दी और गर्मियों में अत्यन्त गर्मी पड़ती है। वर्षा केवल गर्मियों में, और वह भी बहुत थोड़ी-सी, होती है।

८—टुन्ड्रा—आर्कटिक महासागर के किनारे का जलवायु—इसमें साइबेरिया का आर्कटिक महासागर के किनारेवाला भाग शामिल है। यहाँ पर लगभग ९ महीने अत्यन्त शीत पड़ता है और बर्फ की मोटी तह से जमीन ढक जाती है। नदियों का जल जम जाता है। गर्मियों में यहाँ बहुत ही थोड़ी गर्मी पड़ती है और ग्रीष्म-ऋतु बहुत छोटी होती है। गर्मियों के दिन बहुत लम्बे होते हैं और रात बहुत छोटी होती है। इसके ठीक विपरीत, जाड़ों में दिन बहुत छोटा होता और रात बहुत बड़ी होती है।

प्रश्न

१—जलवायु से क्या तात्पर्य है? तुम्हारे नगर का जलवायु कैसा है? उसका कुछ बयान करो।

२—मंचूरिया के जलवायु से इंडोचीन के जलवायु की तुलना करो और अन्तर का कारण बताओ।

३—मानसूनी प्रदेश में केवल गर्मी में वर्षा क्यों होती है?

४—मध्य एशिया के पठार का जलवायु शुष्क क्यों है?

५—चीन और तुर्किस्तान के जलवायु में क्या अन्तर है और क्यों?

६—अरब के पठार में वर्षा क्यों नहीं होती?

अभ्यास

१—एशिया का नक़्शा खींचकर छोटे छोटे तीरों के द्वारा ग्रीष्म ऋतु की हवाओं का रुख़ दिखलाओ।

२—उसी ख़ाके में जलवायु के हिसाब से एशिया को भिन्न भिन्न भागों में बाँटो और प्रत्येक भाग में वहाँ के जलवायु का नाम लिखो।

छठा प्रकरण

वनस्पति

तुमने देखा होगा कि वर्षा ऋतु में जब पानी बरसता है, हर तरफ हरी हरी घास दिखाई देती है, किन्तु मई, जून के महीनों में हरियाली का कहीं नाम भी नहीं होता। यदि तुमसे पूछा जाय कि मई और जून के महीनों में घास क्यों नहीं उगती तो तुम तुरन्त उत्तर दोगे कि उन महीनों में गर्मी बहुत पड़ती है और पानी नहीं बरसता। इससे मालूम हुआ कि पानी ही के बरसने से घास-पौधे उगते हैं। तुमने वर्षा ऋतु में नदी के किनारे रेतीले भाग या पथरीली ज़मीन भी देखी होगी, जहाँ पानी बरसने पर भी घास या पौधे कम उगते हैं। क्या तुम इसका कारण जानते हो? बात यह है कि घास-पौधों के उगने के लिए अच्छी ज़मीन अत्यन्त आवश्यक है, पथरीली ज़मीन या बालू के अन्दर पौधों की जड़ें नहीं फैलतीं। इसी प्रकार यदि तुम किसी बहुत ठंडे देश में गये होगे तो तुमने देखा होगा कि वहाँ पेड़ या पौधे सर्दी की अधिकता के कारण नहीं बढ़ते, क्योंकि उनके बढ़ने के लिए गर्मी की भी आवश्यकता होती है। अब तुमको ज्ञात हो गया होगा कि पेड़ और पौधों के बढ़ने के लिए वर्षा, अच्छी मिट्टी और गर्मी की अत्यन्त आवश्यकता होती है। जब तक किसी स्थान पर ये तीनों चीज़ें अच्छी तरह न पाई जायँगी, पेड़-पौधे अच्छी तरह नहीं बढ़ सकते। यही कारण है कि जिन स्थानों पर वर्ष भर पानी बरसता है और गर्मी भी अधिक पड़ती है, वहाँ अधिक जङ्गल पाये जाते हैं, और उन जङ्गलों में बड़े

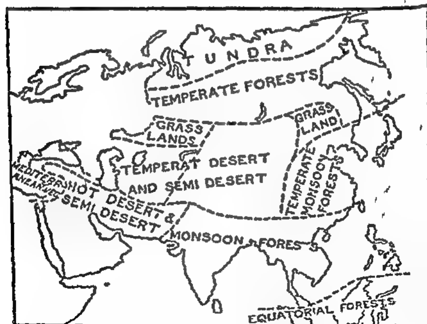
बड़े और घने पेड़ होते हैं। परन्तु जिन स्थानों पर वर्ष के किसी भाग में थोड़ा-सा वर्षा हो जाती है वहाँ वर्षा ऋतु में घास तो शीघ्र ही उग आती है किन्तु बड़े बड़े पेड़ नहीं हो सकते। ऐसे प्रदेश की घास भी शुष्क-ऋतु में सूख जाती है। ऐसे प्रदेश में यदि पेड़ लगाये जाते हैं तो उनके सींचने की भी अत्यधिक आवश्यकता होती है। सिंचाई के बिना वे शुष्क-ऋतु में शीघ्र ही मुरझा जाते हैं। इन्हीं सब बातों से हम कह सकते हैं कि किसी स्थान की वनस्पति वहाँ के जलवायु पर निर्भर है। घने जङ्गल उन्हीं स्थानों पर पाये जायँगे जहाँ वर्षा अधिक होगी। घास के मैदान उन्हीं स्थानों पर होंगे जहाँ वर्षा साल के केवल एक मौसिम में होती है। इसी से शुष्क और मरुस्थली प्रदेशों में ऊँटकटारा इत्यादि पाये जाते हैं। इससे पहलेवाले पाठ में तुम एशिया के भिन्न भिन्न जलवायु का वर्णन पढ़ चुके हो। इससे समझ सकते हो कि जिस प्रकार एशिया के भिन्न भिन्न भागों का जलवायु भिन्न है उसी तरह वनस्पति भी भिन्न होगी। मनुष्यों तथा पशुओं की जीवन-यात्रा वनस्पति पर ही निर्भर है, इसलिए हम अगले पाठ में यह भी बतलायेंगे कि इन भिन्न भिन्न भागों में कौन-कौन से ख़ास जीव पाये जाते हैं और वहाँ मनुष्य का जीवन कैसा है।

एशिया में वनस्पति-विभाग

वनस्पति के अनुसार भी एशिया के उतने ही भाग होंगे, जितने हमने इससे पहले के पाठ में जलवायु के अनुसार बतलाये हैं। इसलिए तुम्हें इससे पहले के पाठ को, जिसमें एशिया का जलवायु विभाग दिया गया है, दोहरा लेना चाहिए, और उसके बाद वनस्पति-विभाग का पाठ आरम्भ करना चाहिए। इस पाठ में हम प्रत्येक भाग की वनस्पति के साथ साथ वहाँ के मनुष्यों तथा जीव-जन्तुओं की रहन-सहन का भी कुछ हाल बतलायेंगे।

१—उष्ण कटिबन्ध के घने वन—इस भाग में वर्ष भर गर्मी पड़ती और वर्षा भी अधिक होती है। इसलिए यहाँ घने जङ्गल बहुत अधिक पाये जाते हैं। यहाँ के पेड़ अधिक ऊँचे, बड़े और पत्तियों से लदे होते हैं और वे इतने घने होते हैं कि सूर्य की किरण उनसे छनकर पृथ्वी तक नहीं पहुँच पातीं।

जीव-जन्तु—यहाँ के वनों में बन्दर, हाथी तथा कई प्रकार के दूसरे शिकारी जानवर भी रहा करते हैं। बड़ी जातिवाले जहरीले सर्प भी बहुत अधिक पाये जाते हैं। नदियों में मगर, मछलियाँ और घड़ियाल बहुत होते हैं। इस भाग में कीड़े-मकोड़े,



Asia—Natural Vegetation

मच्छड़ और पिस्सू इतने ज्यादा पाये जाते हैं कि यहाँ के निवासी पानी में लट्ठे गाड़कर उन पर अपने रहने के लिए

मकान बनाते हैं। कोई कोई तो पेड़ की शाखाओं पर ही मकान बना लेते हैं।

निवासी—इस भाग में तटीय मैदानों की रेत और नम पृथ्वी पर नारियल के वृक्ष अधिकता से पाये जाते हैं। कहीं कहीं मनुष्यों ने वनों को साफ़ कर दिया है और उन स्थानों पर धान और गन्ने की खेती का है, और मसालों के बाग लगाये हैं।

२—मानसूनी देश की वनस्पति—इस भाग में जिन स्थानों पर अधिकता से वर्षा होती है वहाँ घने वन पाये जाते हैं। ख़ास कर यहाँ के पहाड़ों की घाटियों पर बहुत घने जंगल हैं। इन जंगलों के सागौन के पेड़ बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ के पर्वतों और ऊँचे ढालों पर, जहाँ ठंडक अधिक पड़ती है, देवदार और चीड़ की भाँति के दूसरे पेड़ पाये जाते हैं। देवदार और चीड़ की किस्म के पेड़ केवल उन स्थानों पर होते हैं जहाँ की जलवायु ठंडा होता है। मानसूनी प्रदेशों में प्रत्येक स्थान पर बाँस पाया जाता है जो बहुत उपयोगी होता है। चीन में शहतूत और कपूर के पेड़ अधिक हैं। रेशम के कीड़े शहतूत के पेड़ों पर ही पाले जाते हैं। यहाँ की ख़ास पैदावार चावल है। इससे लोग बहुधा चावल से ही निर्वाह भी करते हैं। इस भाग के जिन मैदानों में वर्षा अधिक नहीं होती वहाँ के पेड़ एक दूसरे से दूर दूर पर होते हैं, किन्तु मानसूनी भाग के उत्तरी और पश्चिमी किनारों पर, जहाँ वर्षा और भी कम होती है,—जैसे उत्तरी चीन, मंचूरिया और पंजाब इत्यादि,—वहाँ जङ्गल की जगह घास के मैदान पाये जाते हैं। इन स्थानों पर चावल की पैदावार नहीं हो सकती, किन्तु गेहूँ, जौ बाजरा इत्यादि ख़ूब अच्छी तरह पैदा होते हैं।

जीव-जन्तु—मानसूनी वनों में प्रायः वे ही जीव होते हैं जो उष्ण कटिबन्ध में पाये जाते हैं। यहाँ के खुले और हरे मैदानों पर गाय-बैल भेड़-बकरी और हिरन पाये जाते हैं।

निवासी—इस भाग के निवासियों का ख़ास पेशा खेती है। इससे यह भाग घना आबाद है।



३—मध्यवर्ती पहाड़ों के रेगिस्तानों की वनस्पति—इस भाग के जलवायु को ध्यान में रख कर अनुमान करो कि यहाँ किस प्रकार की वनस्पति पाई जा सकती है। यहाँ गर्मी की ऋतु में,

केवल थोड़े से दिनो में भी, बहुत कम पौधे हरे रहते हैं। इस भाग में पेड बिलकुल नहीं होते। हाँ, घाटियों के बीच चरागाह मिलते हैं और उन्हीं स्थानो पर खेती भी होती है। इन स्थानो पर बहुधा मटर की खेती होती है और कहीं कहीं पर फलवाले पेड़ भी पाये जाते हैं।

जीव-जन्तु—इस भाग में जानवर बहुत कम पाये जाते हैं। यहाँ एक ख़ास तरह का बैल होता है, जिसके बाल लम्बे और झब्बेदार होते हैं। इसका नाम याक है। यहाँ बोझ लादने का काम याक और पहाड़ी टट्टू से लिया जाता है। इनके अतिरिक्त भेड और बकरियाँ भी पाली जाती हैं। इस भाग में जगली भेड़ और बकरियाँ भी पाई जाती हैं और रीछ, भेड़िये आदि कुछ जङ्गली जानवर भी होते हैं।

निवासी—जिन स्थानो पर कुछ खेती हो सकती है, वहाँ गाँव भी बसे हैं, किन्तु यहाँ के निवासी अधिकतर खाना-बदोश हैं और अपने बैल, भेड और बकरियों की ख़ूराक की खोज में एक चरागाह से दूसरे चरागाह में फिरते रहते हैं।

४—पश्चिम के गर्म रेगिस्तानो की वनस्पति—इस भाग में झाड झंखाड के सिवा कुछ नहीं उगता। इस भाग में जहाँ कहीं थोडा-सा पानी है वही एक गाँव बसा हुआ है। उसमें खजूर के हरे पेड और कुछ खेती भी दीख पडती है। यहाँ के इन उपजाऊ भागो को नख़लिस्तान (Oasis) कहते हैं।

जीव-जन्तु—इन गर्म रेगिस्तानो में जीव-जन्तु बहुत कम होते हैं। बोझ लादनेवाले जानवरों में यहाँ ऊँट अधिक पाये जाते हैं और अरब के घोड़े भी प्रसिद्ध हैं।

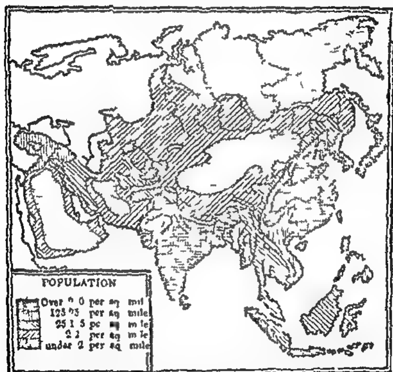
निवासी—रेगिस्तानी मुल्को में आबादी बहुत कम होती है केवल नख़लिस्तानों में थोडे-से निवासी स्थायी रूप से घर बना-कर रहते हैं, नहीं तो अधिकतर यहाँ के लोग ख़ेमो में रहते और

अपने जानवरों के चरागाह की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान में फिरा करते हैं। जैसे त्रिलाचिस्तान के बहुत-से निवासी सिन्ध प्रान्त में चले जाते हैं और शीतकाल बीत जाने तथा ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होने पर लौट आते हैं। रेगिस्तानों के निवासियों का मुख्य भोजन खजूर और ऊँटनी का दूध है। रेगिस्तानों के किनारे पर जो भाग फ़ारस व एशियाई कोचक (अनाटोलिया) में स्थित हैं, उनमें कुछ वर्षा होती है। इसलिए वहाँ के निवासी कुछ खेती करते हैं और उन स्थानों पर गाँव और छोटे शहर बसे हैं।

४—स्टेप्स की वनस्पति—तुम स्टेप्स का अर्थ जानते हो। यह शब्द रूसी भाषा का है, जिसका अर्थ है "बिना पेड़ों का शुष्क मैदान" यह देश अरब और ईरान के गर्म रेगिस्तानों के उत्तर में स्थित है। यहाँ ग्रीष्म-ऋतु बहुत छोटी होती है। गर्मियों में, जब जाड़े की बर्फ़ गल जाती है तब, मिट्टी में मिले हुए घास के बीज फूटने लगते हैं और यह देश सुन्दर हरी हरी घासों से जल्द ही हरा भरा हो जाता है और फूलों से सज उठता है। किन्तु शीतकाल की कठिन सर्दी और ग्रीष्म-ऋतु की अत्यन्त गर्मी के कारण यहाँ के पौधे बहुत जल्द मुर्झा जाते हैं। जाड़े भर हरियाली का कहीं चिह्न तक नहीं रहता। बड़े पेड़ तो यहाँ नाम का भी नहीं दिखाई देते। यदि कुछ पेड़ उगे भी, तो वे साल भर से अधिक जीवित नहीं रहते। इसका कारण यह है कि या तो वे सूर्य की गर्मी से झुलस उठते हैं या पाले से मुरझा जाते हैं। हाँ, जहाँ कहीं पानी के सोते हैं वहाँ थोड़ी-बहुत खेती होती है, परन्तु ऐसे भाग बहुत कम हैं।

जीव-जन्तु—इस भाग में अधिकतर पालतू जानवर जैसे ऊँट, घोड़े, भेड़, बकरी आदि होते हैं। ये ही जानवर यहाँ के निवासियों की कुल सम्पत्ति हैं।

निवासी—यहाँ के निवासी भी खानाबदोश चरवाहे हैं। ये लोग खेमों में रहते और भेड़ बकरी आदि जानवर पालते हैं। उनको अपने साथ लिये हुए ये लोग चरागाह की खोज में एक जगह से दूसरी जगह को फिरा करते हैं। ये अपने जानवरों



(Map Showing Distribution of Population in Asia)

को जाड़े में दक्खिन के मैदानों में चराते हैं और जब जाड़ा समाप्त हो जाता है तथा बर्फ गलने लगती है तब उत्तर के मैदानों में जाकर उन्हें चराते हैं। जाड़े के दिनों में यहाँ के निवासियों का प्रत्येक समूह अपनी घाटी में इकट्ठा हो जाता है। वे लोग अपने जानवरों के गिरोह को भी ले आते हैं। यहाँ जो सूखी हुई घास

गर्मियों में जमा की जाती है, उस जानवरों को खिलाते और घाटी का पानी पिलाते हैं। यहाँ के निवासी अधिकतर दूध, मक्खन, मट्ठा और मांस पर निर्वाह करते हैं और रहने के लिए खाल और ऊन के खेमे बनाते हैं।

६—रूम सागर के किनारे की वनस्पति—किनारे के समीप की जलवायु फलों की उपज के लिए बहुत अनुकूल है, इसलिए यह भाग जतून, अजार नारंगी, खुबानी तथा अंगूर की उपज के लिए अधिक प्रसिद्ध है। यहाँ जौ, गेहूँ इत्यादि कई प्रकार के अनाजों और तम्बाकू की खेती होती है। किनारे के समीप पर्वतों पर छोटे छोटे पेड़ों के वन दिखाई देते हैं। जितना ही भीतर प्रवेश करते हैं उतनी ही वर्षा कम होती जाती है, यहाँ तक कि अन्त में स्टेप्स या रेगिस्तान शुरू हो जाता है।

जीव-जन्तु—यहाँ पालतू जानवरों में भेड़-बकरियाँ बहुत पाली जाती हैं। इनके बालों से ऊनी कपड़े बनाये जाते हैं। यहाँ के भीतरी भागों के जंगलों और पहाड़ियों पर जंगली जानवर पाये जाते हैं।

निवासी—इस भाग के लोग अधिकतर खेती करते हैं। यहाँ गाँव और शहर दोनों बसे हैं। यहाँ के भीतरी भाग के लोग स्टेप्स और रेगिस्तानों के निवासियों की तरह खेमों में रहते हैं।

७—समशीतोष्ण कटिबन्ध के वन—यह टुन्ड्रा के दक्खिन में एक बड़े चौड़े वन का प्रदेश है। जंगल न केवल योरप तक बल्कि उत्तरी अमरीका तक चला गया है, इसलिए इसको शीतोष्ण कटिबन्ध के वन (Temperate forest belt) कहते हैं। यहाँ के वनों के पेड़ दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के पेड़ साल भर पत्तों से ढके रहते हैं। उन्हें सदाबहार पेड़ कहते हैं। दूसरे प्रकार के पेड़ केवल गर्मियों में हरे भरे रहते हैं। जाड़े में उनके पत्ते गिर जाते हैं। पहले प्रकार के पेड़ इस

प्रदेश के उत्तर में और दूसरे प्रकार के इस प्रदेश के दक्खिन में पाये जाते हैं। यहां के दक्षिणी भाग में, जिन स्थानों पर वन काटकर खेत बनाये गये हैं वहां, गेहूँ बहुत पैदा होता है।

जीव-जन्तु—इन वनों में अधिकतर जंगली जानवर पाये जाते हैं। साइबेरिया के वनों में अत्यन्त शीत पड़ने के कारण इन जानवरों के ऊपर बहुत सुन्दर समूर होता है। यह इतना मूल्यवान होता है कि केवल समूर के ही लिए इन जानवरों का शिकार किया जाता है। समूरवाले जानवरों में रीछ, लोमड़ी और एक प्रकार की बड़ी गिलहरी है। इन जानवरों के समूर से बने हुए कोट और लबादे योरप तथा अमरीका के शहरों में बड़े दामों पर बिकते हैं।

निवासी—इस जंगली देश के निवासी अधिकतर गाँवों में रहते हैं। इनके लकड़ी के मकान नदियों के किनारे खुली हुई जगह पर होते हैं। ये लोग कुछ जानवर भी पालते हैं और अपने निर्वाह के लिए जानवरों और मछलियों का शिकार करते हैं।

८—टुन्ड्रा की वनस्पति—इस भाग की भूमि शीतकाल में बर्फ से बिलकुल ढकी रहती है, केवल ग्रीष्म की छोटी ऋतु में यहाँ कुछ पौधे दिखलाई देते हैं। बर्फ के गलने और नदियों की बाढ़ से इस बड़े मैदान में बहुत दूर तक दलदल रहता है। इस दलदल के धरातल पर काई जम जाती है और रंग-बिरंगे फूल उग आते हैं। इसी कारण इसको टुन्ड्रा (Tundra) कहते हैं। टुन्ड्रा यूनानी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है "काईवाला दलदली मैदान"। यहाँ गर्मी की छोटी ऋतु के सिवा साल भर धरातल बर्फ से ढका रहता है। ऐसी दशा में यहाँ पेड़ बिलकुल नहीं उग सकते। यहाँ गर्मी में अनाज भी नहीं बोया जाता, क्योंकि उसके पकने के लिए काफी समय नहीं रहता।

जीव-जन्तु—वनस्पति के कम होने के कारण यहाँ
भी प्रकृति के अनुसार कम होते हैं। साधारण रूप से
बारहसिंगा या रेनडियर (Reindeer) होते हैं और ये भी
गर्मी की ऋतु में रह सकते हैं। ग्रीष्म-ऋतु में यहाँ काई
होती है जिसको ये जानवर बहुत पसन्द करते हैं। जाड़े
ये दक्षिण की ओर चले जाते हैं। यहाँ सफ़ेद रीछ
लोमड़ियाँ पाई जाती हैं। लोग ऊन और खालदार खाल
लिए उनका शिकार करते हैं। उत्तरी महासागर में ह्वेल
सील मछलियाँ भी पाई जाती हैं। इस भाग की नदियों
मछलियाँ बहुत होती हैं।

निवासी—तुम स्वयं समझ सकते हो कि इस देश में
आदमी साल भर नहीं रह सकता। इसी कारण यहाँ बहुत
लोग पाये जाते हैं और जो थोड़े-से लोग हैं भी वे खा
बदोश हैं। जाड़ा आरम्भ होने पर ये लोग अपने बारहसिं
को लेकर दक्षिण की राह लेते हैं और फिर गर्मी में बारहसिं
की खोज में उत्तर की ओर चले आते हैं। ये लोग बारहसिं
को अपने भोजन के लिए और अधिकतर अपने गल्लों के बढ़
के लिए पकड़ते हैं। प्रायः इन लोगों का जीवन-निर्वाह
मांस पर ही निर्भर है, यानी या तो ये लोग मछली खाते हैं
बारहसिंगे का मांस। केवल पालतू बारहसिंगे ही इन लोगों
पूँजी हैं। यही जानवर बर्फ़ पर इनकी गाड़ियाँ खींचते हैं
इनके भोजन के लिए मांस तथा दूध इकट्ठा करते हैं। इन
खालों से ये लोग अपने कपड़े, खेमे और कम्बल बनाते
इनकी हड्डियों के हथियार बनाते हैं।

सारांश यह कि टुन्ड्रा के लोग केवल शिकारी हैं या
और मल्लाह दोनों हैं। समुद्र के धरातल पर जमी हुई बर्फ़

मोटी तह से ढंके रहते। सील मछली का पकड़ना इनकी आजीविका का मूल है।

प्रश्न

१—पेड़ों तथा पौधों के उगने और बढ़ने के लिए किन किन वस्तुओं की आवश्यकता होती है?

२—साल की किस ऋतु में तुम्हारे शहर या गाँव में खेत खाली पड़े रहते हैं?

३—किस ऋतु में किसान खेत जोतते-बोते हैं और क्यों?

४—शुष्क गर्मी की ऋतु में घास क्यों नहीं उगती?

५—बड़े पेड़ शुष्क गर्मी की ऋतु में क्यों नहीं सूख जाते?

६—नदी किनारे की भूमि क्यों अधिक उपजाऊ होती है?

७—पहाड़ के ढालों पर खेती-बारी क्यों नहीं होती?

८—अधिक ठण्डे देशों में कैसी वनस्पति होती है? वहाँ किस प्रकार के जानवर जीवित रह सकते हैं? कारण सहित यह भी बताओ कि वहाँ के बहुत ही थोड़े निवासियों का क्या उद्यम है?

९—उष्ण कटिबन्ध के वनों का कुछ हाल लिखो। काम में लाई जानेवाली कौन-सी फसलें वहाँ पाई जाती हैं?

१०—मानसूनी प्रदेश में किस प्रकार की वनस्पति पाई जाती है और किन किन भागों में? वहाँ के निवासियों का मुख्य उद्यम क्या है? वहाँ कौन से जानवर पाये जाते हैं?

११—मध्यवर्ती रेगिस्तानों के चारों ओर पर्वतों के स्थित होने से भीतर के बेसिनों के जलवायु पर कौन-सा असर पड़ा?

१२—स्टेप्स के मैदानों के लोगों की दिनचर्या वर्णन करो।

१३—रूम सागर के किनारे के देशों का जलवायु कैसा है? वहाँ की वनस्पति का कुछ हाल लिखो।

१४—समशीतोष्ण कटिबन्ध के वन कहाँ स्थित हैं? वहाँ के वनों में तथा गर्म और नम देशों के जंगलों में क्या अंतर है?

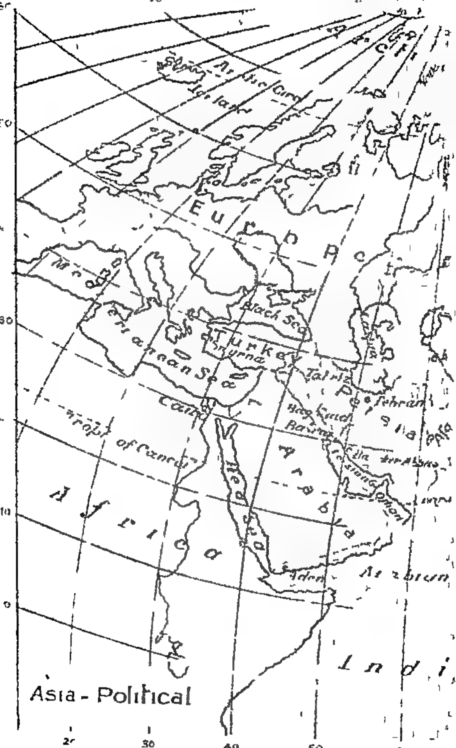
सातवाँ प्रकरण

एशिया के देशों का हाल

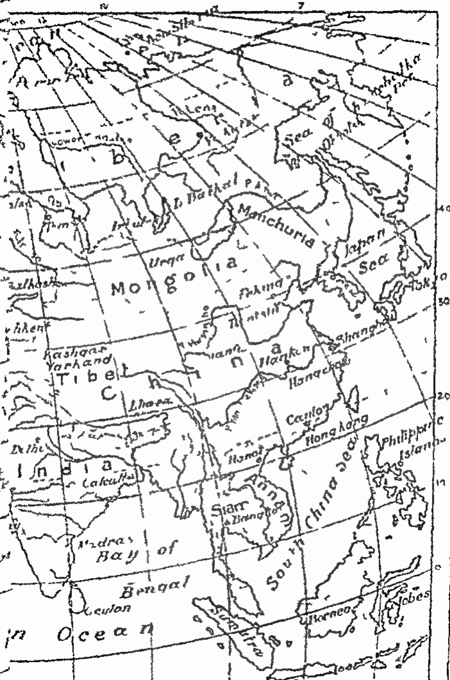
एशिया में विषुवत् रेखा के पास का भाग

पूर्वी द्वीपसमूह या मसाले का टापू (East Indies Islands)—समुद्र के दक्षिण-पूर्व में टापुओं की एक बहुत बड़ी श्रेणी आस्ट्रेलिया तक फैली हुई है। इन टापुओं में बोर्नियो और सुमात्रा (Borneo and Sumatra) सबसे बड़े टापू हैं। परन्तु जावा (Java) टापू इन टापुओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध है और सैलीबोस (Celebes) और मलाका (Moluccas Islands) भी बहुत प्रसिद्ध टापू हैं। अपने नक़्शे से इन टापुओं के नाम मालूम करो।

इन टापुओं का अधिकतर भाग पहाड़ी है। प्राय इन सब टापुओं में, खासकर सुमात्रा, जावा और बोर्नियो में, बहुत-से ज्वालामुखी पर्वत पाये जाते हैं, जिनके कारण इनमें भूडोल आया करते हैं। कभी कभी ये पहाड़ फट जाते हैं और इनसे अग्नि-वर्षा होती है। सुमात्रा और जावा टापुओं के बीच में सडा जलडमरूमध्य है। सन् १८८३ ई० में काकाटोआ (Krakatoa) टापू में, जो सडा जलडमरूमध्य में है, ज्वालामुखी का ऐसा भयानक उद्‌गार हुआ, जैसा दुनिया में कभी नहीं हुआ था। इस उद्‌गार में यह टापू तोप के गोले की भाँति उड़ गया और उसकी आवाज़ कई सौ मील तक सुनाई पड़ी। आस-पास के टापुओं के जङ्गल राख और जलते हुए



Asia - Political
Arctic Circle
Iceland
Europe
Black Sea
Turkey
Smyrna
Tabriz
Tehran
Baghdad
Cairo
of Cancer
Africa
Aden
Oman
30
40



Manchuria
Japan Sea
Tokyo
Urga
Mongolia
Peking
Shanghai
Hankow
Hangchow
Kashgar
Yarkand
Tibet
Lhasa
Canton
Hong kong
Philippine Islands
Delhi
India
Calcutta
Hanoi
Annam
Siam
Bangkok
Madras
Bay of Bengal
South China Sea
Ceylon
Ocean
Borneo
Celebes
40
30
20
10
0

पत्थरों से दब गये। आसमान के चारों ओर इसकी गर्द छा जाने के कारण इस टापू से सौ मील की दूरी तक बिलकुल अँधेरा हो गया। टापू के उड़ने से समुद्र की लहरें इतनी ऊँची उठीं कि आस पास के टापुओं के सैकड़ों गाँव और शहर बिलकुल तबाह हो गये। समुद्र में जो जहाज चल रहे थे, बोतल के काग की भाँति चक्कर खाने और उछलने लगे। इसका भयानक शब्द हिन्दुस्तान, चीन और आस्ट्रेलिया में भी धीरे से सुनाई पड़ा था।

नक्शे में ध्यान से देखो कि इस द्वीपसमूह को विषुवत् रेखा लगभग दो बराबर भागों में काटती है, इसलिए ये टापू दुनिया के उन भागों में हैं जहाँ साल भर तक गर्मी पड़ती है। केवल यहाँ के पहाड़ों की ऊँची ऊँची चोटियाँ सर्द रहती हैं। यहाँ पर साल भर बराबर वर्षा अधिक होती है। इसी से इन टापुओं के अधिकतर भागों में घने जङ्गल हैं। ये जङ्गल खास कर पहाड़ों के ढालों पर पाये जाते हैं। भूमध्य रेखा पर स्थित देशों में इतने घने जङ्गल होते हैं कि पेड़ों की ऊँची शाखाएँ और घनी पत्तियाँ एक दूसरी से उलझ जाती हैं। इसी कारण सूरज की रोशनी पृथ्वी पर नहीं पहुँचती और पेड़ों के तले सदा अँधेरा-सा रहता है। इन पेड़ों की जड़ों के पास बहुत सी लताएँ उगती हैं जो पेड़ों पर चढ़ कर एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक पहुँच जाती हैं। इन लताओं की लम्बी लम्बी जड़ें नीचे की तरफ रस्सियों की भाँति लटका करती हैं। इन जगहों के पेड़ बहुत ऊँचे होते हैं और उन पर रङ्ग बिरङ्गे फूल खिलते हैं, जिन पर हजारों तितलियाँ उड़ा करती हैं। इन पर हजारों किस्म के अच्छे और सुन्दर रङ्ग के पक्षी चहचहाते हैं। इसके अतिरिक्त कई तरह के साँप और बन्दर भी रहते हैं, जो एक डाली पर से दूसरी डाली पर उछलते और कूदते हैं। मच्छड़ों की तरह के करोड़ों प्रकार के विषैले कीड़े-मकोड़े गीली जमीन में पैदा होते हैं।

East Indies.

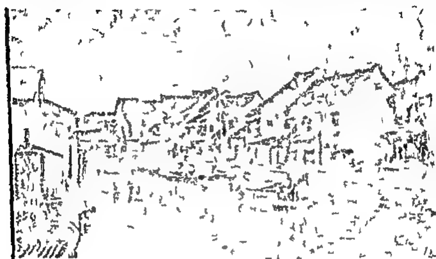
वर्षा अधिक होने से यहाँ के निचले मैदानों में चौड़ी और छिछली नदियाँ तथा दलदल पैदा हो गये हैं। प्रतिदिन दोपहर के बाद वर्षा होने के कारण ये दलदल कभी सूखने नहीं पाते। यहाँ की नदियाँ चौड़ी और छिछली हैं। इन नदियों और दलदलों में बहुत से कष्ट देनेवाले जानवर, जैसे मगर-मच्छ और घड़ियाल आदि पाये जाते हैं।

जङ्गलों से घिरे होने के कारण इन टापुओं की आबादी बहुत कम है, परन्तु समुद्री किनारे पर, जहाँ लोग बस गये हैं वहाँ, खेती होती और उपज भी अच्छी होती है। यहाँ की मुख्य उपज मसाले, चावल, मक्का, गन्ना, कहवा, चाय, तम्बाकू और रबर है।

ये सब वस्तुएँ यहाँ से दूसरे देशों को भी भेजी जाती हैं। जङ्गलों में अभी तक एक जगह से दूसरी जगह घूमने फिरनेवाले खानाबदोश लोग हैं। इन लोगों को अनायास केला, नारियल और साबूदाना इत्यादि बहुत सी खान पान की वस्तुएँ मिल जाती हैं।

उत्तरी बोर्नियो और फिलिपाइन टापू को छोड़ कर ये सब टापू डच लोगों के अधिकार में हैं। डच लोग योरप के एक छोटे से देश हालैंड के निवासी हैं। कई सौ वर्ष हुए, मसाले लेने के लिए ये लोग इन टापुओं में आये और इन पर उन्होंने अधिकार स्थापित कर लिया। इन टापुओं में जावा का टापू सबसे प्रसिद्ध और बहुत घना बसा है। डच लोगों के सुप्रबन्ध से इस टापू के लोग बहुत परिश्रमी किसान बन गये हैं। इन्हीं के परिश्रम से इन टापुओं में गन्ना, चावल, कहवा, चाय और सिनकोना आदि की पैदावार अधिक होती है। ये चीजें बटाविया (Batavia) और सुराबया (Surabya) के बन्दरगाहों से, जो यहाँ के मुख्य नगर

है, दूसरे देशों को भजो जाती हैं। हिन्दुस्तान में दूसरे देशों से जितनी शक्कर आती है वह प्राय मबको सब जावा से आती है। इन टापुओं में रबर की खेती अधिक होती है। सिनकोना से

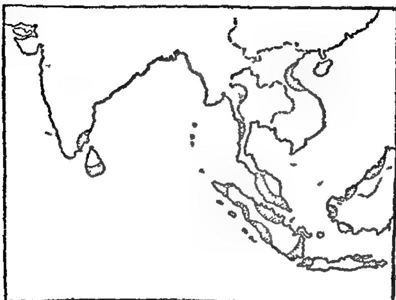


This is a canal in Batavia, the capital of Java

कुनैन बनती है जो मलेरिया ज्वर की एक उत्तम औषधि है। दुनिया में जितनी कुनैन उपयोग में आती है वह सब लगभग जावा से ही आती है। मलाका (Moluccas) और सैलीबीज (Celebes) टापु में गरम मसाले अधिक पैदा होते और दूसरे देशों को भेजे जाते हैं।

✓ बोर्नियो का उत्तरी भाग अँगरेजों के अधिकार में है। सरावक (Sarawak) एक रियासत है। वहाँ का राजा एक अँगरेज है। फिलिपाइन टापू अमरीका के अधीन रहा परन्तु सन् १९३३ ई० म यह स्वतत्र बना दिया गया। वहाँ तम्बाकू, सन, ...ला और बेंत अधिक पैदा होता है। तम्बाकू से चुरट और ... बनते हैं और सन से कागज को दफ्ती तथा रस्सियाँ

बनाई जाती हैं। मनीला (Manilla) इसका मुख्य नगर और राजधानी है। यहाँ से ये चीज़ बाहर भेजी जाती हैं।



Asia—Principal areas of Rubber Plantation

बोर्नियो (Borneo) का अधिकतर भाग पहाड़ों और जंगलों से ढका हुआ है। किनारे पर किसी किसी जगह खेती होती है। यहाँ की मुख्य चीज़, जो दूसरे देशों को भेजी जाती है, साबूदाना है। साबूदाना ताड़ जैसे एक ख़ास किस्म के पेड़ के गूदे से निकाला जाता है। इसके पेड़ों को काटकर तने के बीच से चीरकर अन्दर का गूदा निकाल लेते हैं, फिर उस गूदे के पतले पतले टुकड़े करके एक हौज़ में डाल देते हैं। इसके बाद हौज़ में थोड़ा सा पानी डालकर रौंदते हैं। अच्छी तरह रौंदने पर उस गूदे से सफ़ेद रङ्ग के दाने निकलकर हौज़ के नीचे की

छलनी-द्वारा बाहर निकल आते हैं। फिर उन दानो को धोकर सुखा देते हैं और बोरो में भर कर जहाज-द्वारा दूसरे देशों में भेज देते हैं। बीमारी में जो साबूदाना तुम खाते हो वह यही है और इसी जगह से आता है।

द्वीपसमूह के निवासी, भूमि की नमी के कारण, अपने मकान लकड़ियो के बनाते हैं। ये मकान पृथ्वी से कई गज ऊँचे लट्ठों पर बनते हैं। पहले पृथ्वी में लट्ठे गाड़ दिये जाते हैं। उन लट्ठों पर इनके मकान होते हैं। मकान के सामने लकड़ी का एक छज्जा होता है, जिस पर जमीन से, लकड़ी या रस्सी की सीढ़ी के द्वारा, चढ़ते और उतरते हैं। ये मकान इतने बड़े बनाये जाते हैं कि इनमें पचास साठ आदमी रह सकें। यहाँ की स्त्रियाँ धान काटती, खाना बनाती और कपड़े बुनती हैं, और पुरुष मछली पकड़ने के जाल बनाते, खेत जोतते और बोते हैं और शिकार के लिए तलवार-बर्छे और तीर-कमान बनाते हैं।

यहाँ के निवासियो का मुख्य भोजन चावल, नारियल, केला, साबूदाना, शिकार किये हुए जानवर और मछली आदि है। ये लोग कपड़े कम पहनते हैं, क्योंकि यहाँ गर्मी बहुत पड़ती है।

मलाया प्रायद्वीप (Malay Peninsula)—यहाँ का जलवायु, पैदावार, लोगों की रहन सहन और व्यवसाय पास के टापुओं का-सा है। इस प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग अँगरेजों के अधिकार में है और इसको स्ट्रेट सेटिलमेन्ट (Straits Settlements) कहते हैं। यहाँ के जगल अधिकतर रबर की उपज के लिए प्रसिद्ध हैं। दुनिया में जितना रबर खर्च होता है लगभग उसका $\frac{1}{2}$ भाग मलाया प्रायद्वीप और पूर्वी द्वीपसमूह से आता है।

रबर आज-कल बहुत अधिक काम में लाया जाता है। मोटर और बाईसिकिल के टायर रबर ही के बनते हैं। फुटबाल के अन्दर का भाग, गरम पानी रखने के लिए थैलियाँ, जूतों के तल्ले और मशीनों के पट्टे भी इसी से बनते हैं। गाड़ियों के पहियों पर भी रबर चढ़ाया जाता है। इसके अतिरिक्त सैकड़ों आवश्यक कामों में रबर का उपयोग किया जाता है।

इस प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग टीन की खानों के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गया है। खान के भीतर से मिट्टी में मिला हुआ टीन निकलता है। मिट्टी साफ करने के बाद गलाकर उसके पत्र बनाये जाते हैं। दुनिया में जितना टीन लगता है उसका आधा यहीं का होता है। यहाँ का मुख्य शहर सिंगापुर (Singapore) है। यह शहर इस प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे के पास एक टापू पर बसा है। यह एक बड़ा बन्दरगाह भी है। सारी दुनिया के जहाज़ यहाँ आकर ठहरते हैं। यहाँ पर अँगरेज़ों की जल-सेना भी रहती है। मलाया प्रायद्वीप और दूसरे पूर्वी टापुओं में पैदा होनेवाले रबर, मसाले, टीन, शक्कर, कहवा, बेंत और अनन्नास वगैरह इकट्ठा करके यहाँ से दूसरे देशों में भेजा जाता है।

प्रश्न

१—एशिया के पूर्वी द्वीपसमूह के बड़े टापुओं के नाम बताओ।

२—ज्वालामुखी पर्वत किसे कहते हैं? किसी ज्वालामुखी पर्वत के फटने और आग बरसाने का हाल वर्णन करो।

३—विषुवत् रेखा के पास के जङ्गलों के विषय में जो कुछ जानते हो वर्णन करो।

४—समतल मैदानों में जङ्गलों के नीचे दलदल क्यों बन जाते हैं?

५—इन जङ्गलों में पाये जानेवाले जीव-जन्तुओं का हाल लिखो।

६—पूर्वी द्वीपसमूह के निवासियों के जीवन निर्वाह का कुछ बताओ वे लोग कैसे कपड़े पहनते, कैसे घरों में रहते और काम करते हैं ?

७—रबर, गन्ना और मसाला किन किन स्थानों में अधिकता से पैदा जाता है ?

८—जावा टापू का कुछ हाल वर्णन करो।

९—फिलिपाइन टापू में क्या क्या लाभदायक चीजें पैदा की जाती हैं?

१०—इन टापुओं में कौन सा अनाज पैदा किया जाता है और क्यों?

११—सिंगापुर एक बड़ा प्रसिद्ध बन्दरगाह क्यों है?

१२—रबर से जितनी आवश्यक वस्तुएं बनती हैं उनके नाम बताओ।

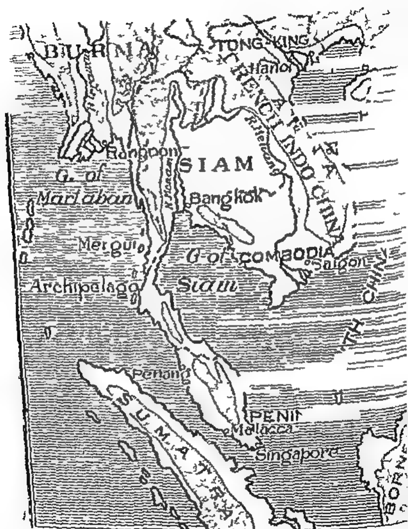
आठवाँ प्रकरण

मानसूनी हवाओं के देश

इस भाग में हिन्दुस्तान, इंडोचीन, चीन और जापान के द्वीप सम्मिलित हैं। हिन्दुस्तान का हाल तो तुम पिछली पुस्तक में पहले ही पढ़ चुके हो।

इंडोचीन (Indo China) बंगाल की खाड़ी और चीन सागर के दक्षिणी भाग के बीच एक बड़ा प्रायद्वीप है। इस प्रायद्वीप का उत्तरी भाग बहुत चौड़ा है और दक्षिणी भाग पतला हो गया है। इस भाग को मलाया प्रायद्वीप कहते हैं जिसका हाल तुम पिछले पाठ में पढ़ चुके हो। इसके उत्तरी भाग का नाम इंडोचीन है। यहाँ मानसूनी हवा से पानी बरसता है। इस भाग में ब्रह्मा (Burma), स्याम (Siam), अनाम (Annam) और कम्बोडिया (Cambodia) के देश स्थित हैं।

ब्रह्मा हिन्दुस्तान का एक भाग है और अँगरेज़ों के अधीन है। तुम हिन्दुस्तान के भूगोल में इसका हाल भी पढ़ चुके हो। अनाम और कम्बोडिया फ्रांसीसियों के अधीन हैं। केवल स्याम एक स्वतन्त्र देश है। इंडोचीन में मानसूनी आबहवा होने के कारण हिन्दुस्तान की तरह के मौसिम होते हैं। यहाँ गर्मी के मौसिम में वर्षा अधिक होती है। अधिकतर पहाड़ों के ढालों पर इस भाग का जलवायु वनस्पति और यहाँ के निवासियों के व्यवसाय बिलकुल ब्रह्मा के समान हैं।



Indo-China—Physical

स्याम (Siam)—इसका उत्तरी भाग पहाड़ी प्रदेश है। पहाड़ों पर मानसूनी हवाओं से वर्षा अधिक होने के कारण यह भाग जंगलों से ढका है। इन जंगलों में सागौन और बाँस के पेड़ अधिक होते हैं। यहाँ के पहाड़ी स्थानों से लट्ठ काटकर मीनाम नदी (R Menam) में बहा दिये जाते और बेंकाक (Bangkok) में जमा कर लिये जाते हैं। यहाँ केले के भी बड़े बड़े जंगल हैं।

इन जंगलों में बड़े बड़े जंगली जीव-जन्तु, जैसे हाथी और चीता आदि, पाये जाते हैं। यहाँ सफ़ेद हाथी भी होते हैं, जिन्हें यहाँ के बादशाह बहुत आदर के साथ रखते हैं। वास्तव में ये हाथी सफ़ेद नहीं होते बल्कि इनका रंग और हाथियों से कुछ हलका होता है, इसलिए इनको सफ़ेद हाथी कहते हैं। इन हाथियों के शरीर के किसी किसी भाग पर हलके रंग के बड़े बड़े दाग भी होते हैं। ब्रह्मा की भाँति स्याम में भी लकड़ी के शहतीरों को इकट्ठा करने या एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए हाथी पाले जाते हैं।

स्याम का अधिकतर भाग नीचा मैदान है, जो मीनाम नदी की लाई हुई मिट्टी से उपजाऊ बन गया है। यहाँ चावल की खेती खूब होती है। यहाँ के लोगों का मुख्य भोजन चावल ही है। यहाँ चावल आवश्यकता से अधिक पैदा होता है इसलिए वह चीन और दूसरे देशों को भेज दिया जाता है। बेंकाक (Bangkok) स्याम की राजधानी है। यह एक बड़ा शहर है और मीनाम नदी के मुहाने से कुछ ऊपर बसा हुआ है। यहाँ बहुत से लोगों ने नावों पर लकड़ी के मकान बना लिये हैं और ये नावें एक स्थान से दूसरे स्थान को जाती हैं। शहर की दूकानें भी इन्हीं किश्तियों के मकानों में हैं। बेंकाक में चावल साफ़ करने और लकड़ी चीरने के कई कारख़ाने हैं।



Indo China—Products

स्याम के निवासी ब्रह्मा के निवासियों की तरह पीली जाति के हैं और बौद्धमत को मानते हैं।

फ्रांसीसी इंडोचीन (French Indo China)—इस देश की मुख्य नदी मीकांग (Mekong) है। यह अधिकतर पहाड़ी भागों से होकर बहती है। इसके मुहाने पर एक चौड़ा उपजाऊ मैदान बन गया है। इसका पूर्वी भाग अनाम (Annam) कहलाता है और अधिकतर पहाड़ी है। इन पहाड़ों के ढाल पर भी घने जंगल हैं।

यहाँ के निवासियों के गाँव समुद्र के किनारे पर बने हैं जिनमें अधिकतर मल्लाह रहते हैं। किसी किसी भाग में चाय, रेशम और कहवा की पैदावार होती है। ये वस्तुएँ दूसरे देशों को भेज दी जाती हैं। अनाम का मुख्य नगर हनोई (Hanoi) सोनका नदी (R Songka) पर बसा है और यही सारे फ्रांसीसी इंडोचीन की राजधानी है। मीकांग नदी का उपजाऊ मैदान कम्बोडिया कहलाता है। यहाँ पर आबादी भी अच्छी है और चावल अधिक पैदा होता है। इस भाग का मुख्य नगर सैगोन (Saigon) है। यह नगर मीकांग नदी के डेल्टा की एक धार पर है। यहाँ से चावल दूसरे देशों को भेजा जाता है। स्याम और फ्रांसीसी इंडोचीन दोनों स्थानों के निवासी, ब्रह्मा के निवासियों की भाँति, पीली जाति के हैं।

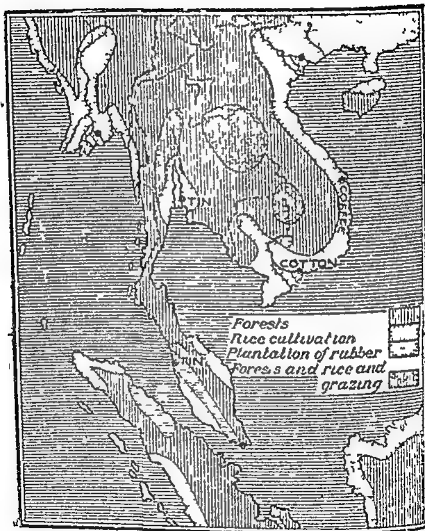
प्रश्न

१—इंडोचीन में कौन-कौन से देश मिले हुए हैं?

२—ब्रह्मा के जंगलों में सबसे अधिक काम में लाने योग्य पेड़ क्या है?

३—इंडोचीन के जंगलों का कुछ वर्णन करो।

४—स्याम के सफ़ेद हाथी के विषय में जो कुछ जानते हो, वर्णन



Indo China—Products

स्याम के निवासी ब्रह्मा के निवासियों की तरह पीली जाति के हैं और बौद्धमत को मानते हैं।

फ्रांसीसी इंडोचीन (French Indo China)—इस देश की मुख्य नदी मीकांग (Mekong) है। यह अधिकतर पहाड़ी भागों से होकर बहती है। इसके मुहाने पर एक चौड़ा उपजाऊ मैदान बन गया है। इसका पूर्वी भाग अनाम (Annam) कहलाता है और अधिकतर पहाड़ी है। इन पहाड़ों के ढाल पर भी घने जंगल हैं।

यहाँ के निवासियों के गाँव समुद्र के किनारे पर बसे हैं जिनमें अधिकतर मल्लाह रहते हैं। किसी किसी भाग में चाय, रेशम और क़हवा की पैदावार होती है। ये वस्तुएँ दूसरे देशों को भेज दी जाती हैं। अनाम का मुख्य नगर हनोई (Hanoi) सोनका नदी (R Songka) पर बसा है और यही सारे फ्रांसीसी इंडोचीन की राजधानी है। मीकांग नदी का उपजाऊ मैदान कम्बोडिया कहलाता है। यहाँ पर आबादी भी अच्छी है और चावल अधिक पैदा होता है। इस भाग का मुख्य नगर सैगोन (Saigon) है। यह नगर मीकांग नदी के डेल्टा की एक धार पर है। यहाँ से चावल दूसरे देशों को भेजा जाता है। स्याम और फ्रांसीसी इंडोचीन दोनों स्थानों के निवासी, ब्रह्मा के निवासियों की भाँति, पीली जाति के हैं।

प्रश्न

१—इंडोचीन में कौन-कौन से देश मिले हुए हैं?

२—ब्रह्मा के जंगलों में सबसे अधिक काम में लाने योग्य पेड़ क्या है?

३—इंडोचीन के जंगलों का कुछ वर्णन करो।

४—स्याम के सफ़ेद हाथी के विषय में जो कुछ जानते हो, वर्णन करो।

५—इंडोचीन में नदियों के मैदान और डेल्टा कहाँ कहाँ पर हैं ? इन स्थानों की मुख्य पैदावार क्या है ?

६—बैंकाक कहाँ बसा है और क्यों प्रसिद्ध है ?

७—सिंगापुर एक बड़ा बन्दरगाह क्यों बन गया है ?

८—अनाम की आबादी स्याम से कम क्यों है ?

अभ्यास

इंडोचीन का एक खाका खींचकर उसमें बड़ी नदियाँ, नगर और मुख्य मुख्य पैदावार दिखलाओ।

नवाँ प्रकरण

चीन का राज्य (Chinese Empire)

दुनिया के सारे राज्यों में चीन के राज्य से अधिक आकर्षक कदाचित् ही कोई राज्य हो। विस्तार के ख्याल से यह राज्य तीसरे दर्जे का है। इसमें दुनिया की लगभग एक चौथाई आबादी पाई जाती है। चीन के लोग हिन्दुस्तान के निवासियों की तरह एक बहुत पुरानी जाति के हैं। ये लोग प्राचीन काल में बहुत उन्नतिशील जाति के समझे जाते थे, क्योंकि इन लोगों ने उस समय बहुत सी वस्तुएँ ईजाद कीं, जब दूसरे देशवाले उन वस्तुओं को या तो बिलकुल न जानते थे, या बहुत ही कम जानते थे। कागज सबसे पहले चीन ही में बनाया गया था। इसी प्रकार पुस्तकों के छापने और बारूद बनाने का आविष्कार इन्हीं लोगों ने किया। परन्तु यही चीननिवासी, भारतवासियों की भाँति, आजकल दुनिया की सभ्यजातियों में बहुत पीछे रह गये हैं। इसका ख्याल अब इन्हें स्वयं हो गया है और उन्नतिशील जातियों का मुकाबला करने के लिए वे कोशिश भी कर रहे हैं। किसी हद तक अपनी कोशिशों में उन्हें सफलता भी मिली है।

चीनी राज्य दुनिया के सबसे प्राचीन राज्यों में से है। यह राज्य पाँच भागों में बँटा हुआ है—(१) चीन (China), (२) मञ्चूरिया (Manchuria), (३) मंगोलिया (Mongolia), (४) तिब्बत (Tibet), (५) चीनी तुर्किस्तान या सिनक्याङ्ग (Sin kiang or Chinese Turkistan) चीनी तुर्किस्तान और मंचूरिया



China—Physical

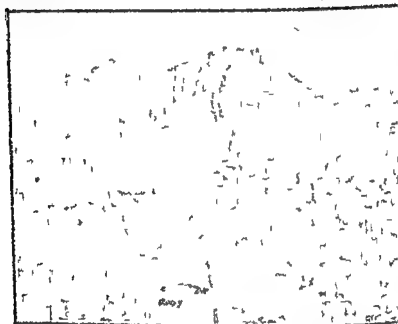
की स्थिति मानमून की हवाओं के भाग में है, यानी चीन एशिया के मध्यवर्ती सूखे पहाड़ी भाग में है।

चीन का राज्य हजारों बरस तक एक बादशाह के हाथ में रहा, परन्तु १९१२ में यहाँ क्रान्ति का प्रारम्भ हुआ जिसके बाद हर एक भाग स्वतंत्र हो गया। अब यहाँ कोई बादशाह नहीं होता बल्कि प्रजा स्वयं राज्य के प्रबन्ध के लिए कौन्सिल या पंचायत चुनती है। इस पंचायत का एक प्रधान चुना जाता है जिसको प्रेसीडेण्ट कहते हैं। यही प्रेसीडेण्ट बादशाह का काम करता है और यह पंचायत मिलकर क़ानून बनाती है जिससे राज्य का प्रबन्ध ठीक रहे। इसी पंचायती हकूमत के तरीक़ का दूसरा नाम प्रजातंत्र राज्य है।

चीन ख़ास (China Proper)

इस राज्य के भागों में ख़ास चीन सबसे अधिक लाभदायक और प्रसिद्ध भाग है। इस भाग की आबादी बहुत अधिक और घनी है। बाक़ी दूसरे भागों में बहुत थोड़े-से लोग बसे हुए हैं। यह एशिया के बहुत उपजाऊ देशों में से है। यह एशिया के मध्यस्थ पहाड़ी भाग और पैसिफ़िक महासागर के बीच में स्थित है। इसका क्षेत्रफल हिन्दुस्तान के बराबर है और आबादी भी हिन्दुस्तान की घनी आबादी से कुछ अधिक है, यानी यहाँ की जन-संख्या ४२ करोड़ है। परन्तु इसका कुल हिस्सा उष्ण कटिबन्ध के उत्तर में है। नकशा देखने से मालूम होगा कि कर्क रेखा हिन्दुस्तान के मध्य से होकर जाती है, परन्तु चीन के दक्षिणी भाग में होकर जाती है। चीन इस रेखा के उत्तर में ४०° अक्षांश तक फैला हुआ है। इसके पूर्व में पैसिफ़िक महासागर है और इसका अर्द्धवृत्तरूपी किनारा लगभग २,००० मील लम्बा है पर जगह जगह पर कटा फटा है।

इसके दक्षिण में फ्रेंच इंडोचीन, पश्चिम में तिब्बत और उत्तर में मंचूरिया तथा मंगोलिया हैं। चीन खास और मंगोलिया की सीमा पर 'चीन की दीवार' स्थित है। जिसकी गिनती दुनिया की अद्भुत चीजों में की जाती है। इस दीवार की लम्बाई हिमालय पर्वत की श्रेणियों के बराबर अर्थात् १,६००



This is a portion of the Great Chinese Wall It is 1600 miles long and was begun more than 2,000 years ago

मील है, ऊँचाई २५ से ३५ फुट तक और चौड़ाई इतनी है कि इस पर चार घोड़े बराबर बराबर आसानी से दौड़ सकते हैं। यह दीवार पत्थर और मिट्टी से बनाई गई है, परन्तु मजबूती के लिए इसका बाहरी हिस्सा ईंटों से बनाया गया है। इस दीवार पर, थोड़े थोड़े फ़ासले पर, दो-तीन मंज़िल

क बुर्ज बनाये गये हैं। चीनियों ने प्राचीन काल में तातारियों के हमलों से सुरक्षित रहने के लिए यह दीवार बनाई थी। तातारी लोग मंगोलिया के रहनेवाले थे, जो समय समय पर चीन के हरे भरे उपजाऊ स्थानों पर चढ़ाई किया करते थे। यह दीवार पिचली की खाड़ी से आरम्भ होकर तिब्बत में समाप्त हुई है। यह दीवार जिस प्रकार मैदानों में स्थित है, उसी तरह उन बड़े ऊँचे पहाड़ों, गहरी घाटियों तथा नदियों में भी है, जो पिचली की खाड़ी तथा तिब्बत तक स्थित है। पुराने ज़माने में जब गोली, बारूद और तोप आदि का प्रयोग न होता था, यह दीवार वैरियों से बचने के लिए बहुत लाभदायक और बड़ी मानी थी।

चीन का मुल्क जो पश्चिम से पूर्व को बहनेवाली तीन बड़ी नदियों (१) हाग हो (Hoang Ho) (२) याग टिसी क्याग (Yang tse kiang) और (३) सीक्याग (Sikiang) के बेसिनों में बँट गया है।

ये नदियाँ तिब्बत के पहाड़ों से निकलकर पूर्व की ओर पैसिफिक महासागर में गिरती हैं। तिब्बत के ऊँचे पठार से पूर्व की ओर बढ़े हुए पहाड़ी भाग उपर्युक्त तीन बेसिनों को अलग करते हैं।

उत्तरी चीन हाग हो नदी का बड़ा मैदान है। यह भाग संसार में सबसे अधिक घना बसा है और इसका अधिकांश भाग पीले रंग की मिट्टी से ढका हुआ है। उसको लोयस (Loess) कहते हैं। यह मिट्टी मङ्गोलिया के रेगिस्तान की है जो तेज़ आँधियों द्वारा लाई जाकर यहाँ बिछ गई है। इसी कारण उत्तरी चीन में पृथ्वी, नदी और समुद्र पीले ही पीले दिखाई पड़ते हैं। हाग हो शब्द का अर्थ भी "पीला नदी" है। इसी से यह नदी जिस समुद्र में जाकर गिरती है, उसका भी

पीला सागर कहते हैं। उत्तरी चीन में, पश्चिमी भागों में, जहाँ-तहाँ इस मिट्टी की २,००० फीट मोटी तह है। इस मिट्टी के कारण उत्तरी चीन का नीचा मैदान बहुत उपजाऊ हो गया है। इस भाग में जहाँ जहाँ वर्षा होती है वहाँ हजारों वर्ष से खेती की जा रही है, फिर भी मिट्टी की शक्ति बढ़ाने के लिए खाद की आवश्यकता नहीं पड़ती।

ह्वांग हो नदी हर साल बहुत-सी मिट्टी पहाड़ों से बहा लाती है जिससे पीले सागर की गहराई कम होती जाती है। नीचे मैदान में आने पर नदी की चाल धीमी पड़ जाने के कारण बहुत-सी मिट्टी इस नदी की तह में बैठती जाती है जिससे यह स्वयं भी छिछली होती जाती है। फलतः बाढ़ के समय इसका पानी मैदानों में फैल जाता है। बाढ़ से देश को बचाने के लिए नदी के दोनों ओर सैकड़ों मील तक मजबूत बाँध बनाये गये हैं और जैसे जैसे नदी की तह ऊँची होती जाती है, वैसे वैसे बाँध अधिक ऊँचे कर दिये जाते हैं। अब तो मैदान की सतह से नदी का तल अधिक ऊँचा हो गया है जिससे बाढ़ के समय अक्सर बाँध टूट जाते हैं और हजारों गाँव तथा शहर डूब जाते और लाखों जीव जान से चले जाते हैं। इसी से इस नदी को "चीन का संकट" कहते हैं। अधिकतर बाढ़ में तेजी के कारण इसका रास्ता भी बदल जाता है। १८५२ ई० से पहले यह पीले सागर में गिरती थी, परन्तु उसी सन् से इसने अपना रास्ता बदल दिया और पिचली की खाड़ी में जा गिरी जिसके कारण हजारों गाँव डूब गये और लाखों जानें गईं। पिछले २,५०० वर्षों में इस नदी ने लगभग ग्यारह बार अपना मुहाना बदला।

उत्तरी चीन का जलवायु जाड़े में बहुत सर्द रहता और गर्मी में खूब गर्म हो जाता है। वर्षा पंजाब की भाँति होती है।

यह जलवायु गेहूँ की खेती के लिए बड़ा सुविधाजनक है। यहाँ की खास पैदावार गेहूँ ही है।

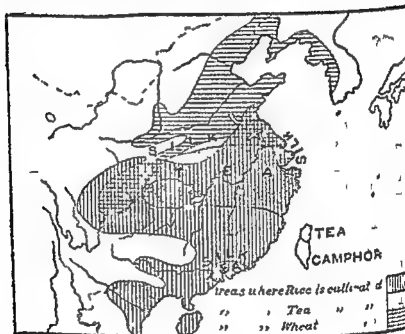
यांग-टिसी-क्याग नदी तिब्बत से निकलकर चीन के मध्य में बहती हुई अपने पूर्वी भाग में कई झीलों से होकर पैसिफ़िक



China—Political

महासागर में गिरती है। जिस समय इस नदी के ऊपरी भाग में बाढ़ आती है, इसका पानी इन झीलों में भर जाता है। इससे नदी के मैदान को कोई हानि नहीं होती। यांग टिसी-क्याग चीन की सबसे बड़ी नदी है। यह बहुत चौड़ी है। इसका

मदान भी बहुत उपजाऊ है। इसी कारण मध्य चीन बहुत घना बसा हुआ है। इस भाग में आमदरफ्त इसी नदी और इसके सहायक नदियों द्वारा होती है। समुद्र से हांको (Hankow) तक बहुत बड़े बड़े जहाज आसानी से चले आते हैं और छोटे छोटे जहाज तो उसके मुहाने से १,००० मील आई



China—Products

चग (Ichang) के सँकरे दर्रे तक जा सकते हैं। नावें उससे कई सौ मील और आगे तक जा सकती हैं। याग टिसी-क्याग के नेसिन के दक्षिण में चीन की कुल जमीन पहाड़ी है। इस पहाड़ी भाग में सी क्याग नदी ने एक चौडी उपजाऊ घाटी बना दी है।

नक्शा देखने से मालूम होगा कि कर्क रेखा दक्षिणी चीन और बंगाल दोनों भागों में जाती है, इसलिए दक्षिणी चीन

जलवायु बंगाल की तरह गर्म और नम है। इसी से बंगाल की तरह यहाँ के मैदानों और किनारों की खास पैदावार चावल है। इसके सिवा गन्ने और शहतूत के पेड़ भी बोये जाते हैं। यहाँ के पहाड़ी ढालों पर चाय बहुतायत से पैदा की जाती है। चीन के लोग चाय बहुत पसन्द करते हैं। कोई कोई तो दिन भर पानी की जगह चाय ही पिया करते हैं। पहाड़ी जङ्गलों में कपूर के पेड़ भी पाये जाते हैं जिनसे कपूर पैदा किया जाता है। मध्य चीन में गर्मी और वर्षा दोनों कम होती हैं, इसी लिए संयुक्त प्रान्त आगरा अवध की तरह यहाँ गेहूँ और चावल दोनों पैदा होते हैं। गेहूँ की खेती जाड़े में और चावल की गर्मी में की जाती है। इस भाग में भी गन्ना और कपास की खेती होती है। रेशम के लिए शहतूत के पेड़ भी बहुतायत से होते हैं। उत्तरी चीन में मध्य चीन से वर्षा और गर्मी कम होती है, इसलिए यहाँ चावल नहीं पैदा हो सकता, परन्तु पंजाब की भाँति गेहूँ, जौ, कपास और तम्बाकू बहुतायत से होती है। सारे चीन में जाड़े में खूब ठंड पड़ती है, क्योंकि मध्य एशिया से ठण्डी हवायें बिना किसी रुकावट के चलती हैं। उत्तरी चीन में तो इतनी सर्दी पड़ती है कि नदी, तालाब और घड़ों का पानी बर्फ की भाँति जम जाता है। ह्वांग हो नदी के धरातल पर दो फुट मोटी बर्फ जम जाती है। इस भाग में बर्फ की वर्षा हुआ करती है। मध्य चीन में नदी का पानी तो नहीं जमता, परन्तु छोटी छोटी झीलों पर बर्फ जम जाती है। दक्षिणी चीन में भी सर्दी बहुत पड़ती है, परन्तु बर्फ नहीं जमती।

चीन में गर्मी की ऋतु में वर्षा होती है क्योंकि यह मानसूनी भाग में स्थित है। इसके उत्तरी भाग की ओर वर्षा कम होती जाती है। मानसून के और देशों की भाँति चीनियों का मुख्य भोजन चावल है इसलिए चावल की पैदावार यहाँ सबसे अधिक

होता है। यहाँ की पैदावार में रेशम का दूसरा नम्बर है। दक्षिण और मध्य चीन में रेशम के कीड़े पालने के लिए शहतूत के पेड़ लगाये जाते हैं, परन्तु उत्तरी चीन में ये कीड़े बलूत के पेड़ों पर होते हैं। शहतूत के पेड़ पर ये कीड़े जल्दी बढ़ते हैं। जब ये कीड़े लगभग २ इंच लम्बे और उँगली के बराबर मोटे हो जाते हैं तब पत्तियाँ खाना छोड़ देते हैं और अपने ऊपर रेशम का तार लपेटना आरम्भ कर देते हैं। यहाँ तक कि रेशम के तार कोये की शक्ल के बन जाते हैं और ये कीड़े उसके अन्दर रह जाते हैं। तब यहाँ के लोग पेड़ों से गिराकर इन कोयों को पानी में उबाल लेते हैं जिससे कीड़े मर जाते हैं। यदि ऐसा न किया जाय तो कीड़े तितली बन जायँ और कोया को काटकर उड़ जावें तथा कटा हुआ कोया खराब हो जाय। वह रेशम कातने के काम का नहीं रह जाता। इन कोयों को उबालने के बाद लड़कियाँ इनके तार निकालकर रेशम का तागा तैयार करती हैं। रेशम की खेती करना और उससे कपड़े बुनना चीन का मुख्य काम है। चीन में ही संसार भर से अधिक कच्चा रेशम तैयार किया जाता है।

चीन में अधिकांश आवा-गमन और व्यापार नदियों-द्वारा होता है। यहाँ की नदियाँ बहुत घने बसे हुए भाग में से होकर पूर्व की ओर बहती हैं, इसलिए वहाँ के नदी-मार्ग प्राचीन समय से प्रसिद्ध हैं। सातवीं सदी में यहाँ एक बड़ी शाही नहर बनाई गई थी जो ह्वांगहो को याग-टिसी-क्याग नदी से मिलाती है। यह नहर उत्तरी मैदान के अत्यन्त घने बसे हुए पूर्वी भाग से होकर बड़े बड़े शहरों और हजारों गाँवों के बीच में होकर जाती है। यदि तुम यहाँ की इन नदियों में से किसी एक नदी में यात्रा करो तो लगभग हर शहर के किनारे तुम्हें इतनी अधिक नावें मिलेंगी कि उनके मस्तूलों का एक घना जङ्गल-सा दिखाई पड़ेगा। ये नावें छोटी

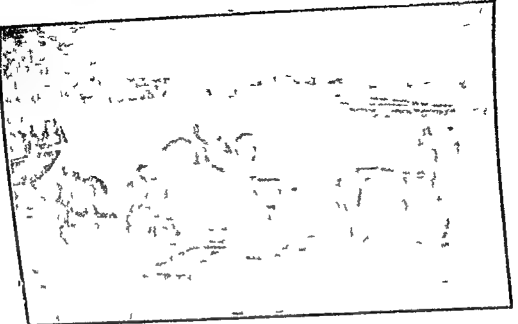


House-boats on the river at Honkow

बड़ी और भिन्न भिन्न प्रकार की होगी। लगभग हर नाव के अगले भाग पर आँखें बनी हुई पाओगे, क्योंकि चीनियों का कथन है कि बिना आँखों के नावें रास्ता नहीं देख सकती। करोड़ों चीनी नाव पर ही अपनी उम्र व्यतीत करते हैं। नावें ही उनके मकान हैं। इन्हीं पर वे रहते और अपने बाल बच्चों का पालन करते हैं। कोई कोई नाव ऐसी मिलेगी जिन पर एक ओर तख्ते पर थोड़ी सी मिट्टी की तह पर, तरकारियों का खेत बोया हुआ है और दूसरी ओर पिंजड़ों में मुर्गियाँ, बत्तख़ और बकरी या सुअर पले हुए हैं। चीनी लोग इन्हीं नावों को एक जगह से दूसरी जगह लिए फिरते और क्रय विक्रय करते हैं।

इन नदियों और समुद्रों के किनारों पर मल्लाह अधिक मिलेंगे। इनमें कोई कोई मल्लाह तो और लोगों की तरह जाल से मछली पकड़ते हैं, परन्तु बहुतेरे मछली पकड़ने के लिए एक चिड़िया पालते हैं जिसको कारमोरान्ट (Cormorant) कहते हैं। यह चिड़िया साधारणतया पानी के तल पर टकटकी लगाये रहती है और अवसर पाकर डुबकी लगाती है और मछली को बाहर निकाल लाती है। इनकी गर्दन में मल्लाह एक छल्ला पहना देते हैं, ताकि ये मछलियों को निगल न सकें। ये चिड़ियाँ फुर्तीली और होशियार होती हैं। इन्हें अच्छी तरह मालूम है कि दिन भर मिहनत करने के पश्चात यह छल्ला उनकी गर्दन से निकाल दिया जायगा और उन्हें पकड़ी हुई मछलियों में से हिस्सा मिलेगा। नदियों की यात्रा करनेवालों को हर जगह फूल अधिकता से मिलेंगे, परन्तु उन्हें यह देखकर आश्चर्य भी होगा कि वृक्ष यहाँ नहीं हैं। केवल दक्षिणी पहाड़ों के इलाक़ों में कुछ जङ्गल हैं, और जगहों के पेड़ चीनियों ने, लकड़ी जलाने के लिए, काट डाले हैं।

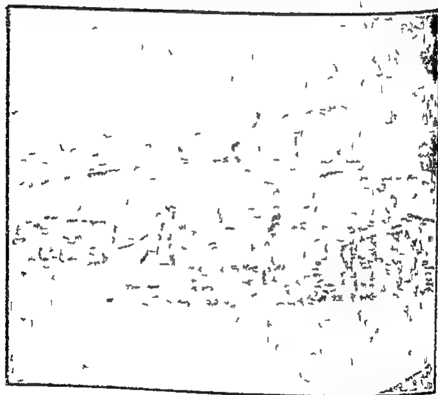
कहा जाता है कि चीन में अब लकड़ी इतनी कम रह गई है कि चीनी अपने मुर्दे जलाने के लिए चिता भी नहीं बना



These 'Cormorant' birds have been trained to catch fish

पावे। इसलिए चीनियों को कोरिया और जापान आदि देशों से अपने काम के लिए लकड़ी मँगानी पड़ती है।

चीन में जानवर भी बहुत कम हैं। उत्तरी पश्चिमी रेगिस्तानी भाग में ऊँट पाये जाते हैं। दक्षिणी मैदानों में, जहाँ वर्षा अधिक होती है, खेत जोतने के लिए भैंसे रखे जाते हैं। सुअर, घोड़े और खच्चर आदि आम तौर से हर जगह पाये जाते हैं।



A rice field in Southern China Notice the straw hats worn by the Chinese farmers

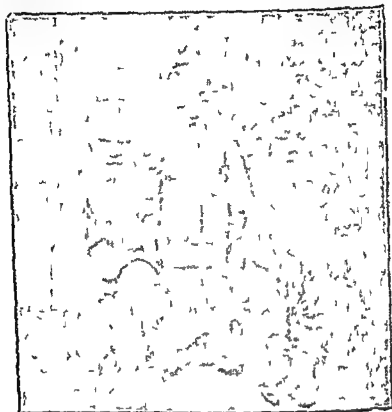
चीन हिन्दुस्तान की भाँति खेतों का देश है। हिन्दुस्तानियों की भाँति ये लोग भी उसी तरह खेती-बारी किया करते हैं

जिस तरह हजारों वर्ष पूर्व इनके बाप-दादे किया करते थे। चीन की आबादी इतनी अधिक है कि यहाँ के किसानों के पास बहुत छोटे छोटे खेत हैं। इसलिए हिन्दुस्तान के किसानों की तरह ये लोग भी गरीब हैं। किन्तु यहाँ के किसान हिन्दुस्तानी किसानों से एक बात में बढ़े हुए हैं। वह यह कि यहाँ के किसान बड़ी मिहनत से हर किस्म की खाद—गोबर, मैला, सड़ी हुई चीज—इकट्ठा करके खेत में डालते हैं जिसके कारण एक खेत से साल में तीन फसल तक पैदा करते हैं और उसी खेत को बराबर हर साल काम में लाते हैं। इससे यहाँ के खेतों की उपज हिन्दुस्तान के खेतों की उपज से बहुत अधिक होती है।

खनिज पदार्थ—चीन की मिट्टी खनिज पदार्थों से भरी हुई है। कोई समय ऐसा आवेगा जब चीन खनिज पदार्थों की पैदावार के लिए दुनिया में एक बड़ा देश गिना जायगा। उत्तरी चीन के लोयस क्षेत्रों में कोयले की एक बहुत बड़ी खान है। परंतु लोयस मिट्टी की हजारों फुट मोटी तह से दबी हुई होने के कारण इस खान से अभी कोयला नहीं निकाला जाता। मध्य चीन में कोयले की कुछ छोटी छोटी खानें हैं। चीन में लोहे की बहुत बड़ी बड़ी खानें हैं। एक बहुत बड़ी खान हांको के पास है। दक्षिण-पश्चिम के युनान (Yunnan) पठार में ताँबा और टीन अधिक पाया जाता है। कान्टन शहर (Canton) के उत्तर में भी टीन मिलता है और हांगकांग बन्दरगाह से यह दूसरे देशों में भेजा जाता है। इन खानों के अतिरिक्त चीन में सोना और चाँदी की भी खानें हैं।

यहाँ के निवासियों का रङ्ग पीला होता है। उनके बाल काले, कड़े और खड़े हुए होते हैं। आँखें तिरछी और नाक छोटी तथा चपटी होती है। इनकी दाढ़ी में बाल बिलकुल नहीं होते। इस रङ्ग के लोग चीन में तो हैं ही बल्कि जापान और

इन्डोचीन में अधिक तथा साइबेरिया के किसी किसी भाग में आबाद हैं।



These are three Chinese children of Canton

मुख्य नगर—चीन के बड़े नगर या तो समुद्रतट के बन्दरगाह हैं, या वे व्यापारिक केन्द्र हैं जो उपजाऊ मैदान और घाटियों में नदियों के किनारों पर बसे हुए हैं। इनको नक्शे में देखो। पेकिन—यह उत्तरी चीन का मुख्य नगर है और पोहू नदी (R Peiho) पर बसा है। यह बहुत पुराना नगर है। यहाँ लगभग तीन हजार वर्ष तक मुख्य चीन की राजधानी थी और

आठ सौ वर्ष के लगभग चीन राज्य की राजधानी रही। इस ज़माने में भी यह पहले स्वतन्त्र राज्य थी। परन्तु अब राजधानी यहाँ से नानकिंग (Nanking) नगर में उठ गई है। पेकिन नगर के चारों ओर आठ फुट ऊंची बहुत मज़बूत दीवार है जिसमें जगह जगह पक्के आगार और फाटक लगे हुए हैं। पहले इन फाटकों में रात के समय ताले लगा दिये जाते थे। प्राचीन काल में बड़े बड़े नगरों में शहरपनाह व फाटक बन्द कर देने का रवाज था। परन्तु अब ये फाटक बन्द नहीं किये जाते। इसी दीवार के बीच से होकर मंचूरिया को रेल गई है। इस नगर के मध्य भाग में राजभवन है। इसी नगर में अच्छी और चौड़ी इमारतें तथा पक्की सड़क हैं। परन्तु दूसरी तरफ़ के भाग की सड़क, जहाँ बाज़ार वगैरह और यात्रियों के ठहरने की जगहें हैं, तङ्ग और बहुत गन्दी हैं।

पीहू नदी के मुहाने से ४० मील के फ़ासले पर टैंटसिन (Tientsin) नगर का बन्दरगाह है, जो पेकिन का ही बन्दरगाह समझा जाता है। यहीं से सबसे बड़ी शाही नहर आरम्भ होती है। इस शहर की जन-संख्या पेकिन से भी अधिक है।

याग-टिसी-क्यांग नदी के डेल्टा पर कई बड़े नगर हैं। चीन का सबसे बड़ा बन्दरगाह शघाई (Shanghai) इसी डेल्टा की खाड़ी पर, समुद्र से तेरह मील की दूरी पर, स्थित है। इस शहर के अन्दर कारखानों और कम्पनियों का अधिकता हो गई है। इनमें सूती, ऊनी और रेशमी कपड़ा बुना जाता है। इस बन्दरगाह में यूरोप, अमरीका और हिन्दुस्तान से बड़े बड़े जहाज़ व्यापार के लिए आते हैं जिससे यह चीन का सबसे बड़ा औद्योगिक और व्यापारिक केन्द्र हो गया है। यहाँ

नानकिंग (Nanking) डेल्टा के सिरे पर है साल कुछ शहर रेशम के व्यापार के लिए बहुत प्रसिद्ध है सबसे

आशा की जाती है कि कुछ दिनो के बाद यहाँ की खेती
बहुत उन्नति हो जायगी। मंचूरिया में जापानवालों ने रेल स्थापि
कर दी है जिसके द्वारा पोर्ट आर्थर (Port Arthur)
जहाज के द्वारा बहुत सा गहूँ जापान भेजा जाता है। मचूरिया
उत्तरी मैदान मे मुख्य नगर हार्बिन (Harbin) है जो सुगा
(Sungari) नदी पर स्थित है। म नगर से ट्रास साइबेरिय
रेलवे भी जाती है जो मास्को (Moscow) से व्लाडीवोस्ट
(Vladivostok) को गई है। हारबिन से एक और रेल
दक्षिण की ओर मुकडेन (Mukden) को जाती है जो मचूरि
का मुख्य नगर और राजधानी है। यहाँ से उसकी तीन शाखा
पोर्ट आर्थर, कोरिया और चीन को चली गई हैं।

मंचूरिया के दक्षिण म मुक्डेन के पास एक पहाड़ी जमी
है जिसमें कोयले और लोहे की खानें पाई जाती हैं। य
कोयला रेल के काम में आता है और लोहा जापान के कारखा
में भेजा जाता है।

प्रश्न

१—दक्षिणी चीन, मध्य चीन और उत्तरी चीन के जलवायु का अल
अलग वर्णन करो।

२—निम्नलिखित पैदावार चीन के किन किन भागों में होती है—
चावल, गेहूँ, चाय, शहतूत के पेड़ और कपास।
इन पैदावारों के लिए किस प्रकार के जलवायु की आवश्यकता है

३—चावल और गेहूँ दोनों एक ही भाग में क्यो नहीं उगते?

४—चीन के कौन से भाग सबसे अधिक घने बसे
कौन से भाग सबसे कम बसे हैं और क्यो?

—निम्नलिखित नगरों की स्थिति बताओ और यह भी बताओ कि ये उन्नति करके बड़े शहर क्यों हो गये हैं—

हांको, पेकिन, कान्टन, हांग कांग, शंघाइ और नानकिंग।

—मंचूरिया के किस किस भाग में किन किन चीजों की खेती होती है?

—मंचूरिया में चीन और जापान से आकर कौन से लोग बसे हैं और क्यों?

अभ्यास

चीन और मंचूरिया का एक ख़ाका बनाकर उसमें निम्नलिखित दिखलाओ—

१—चार मुख्य बड़ी नदियाँ और उनके किनारे पर बसे हुए नगर तथा बन्दरगाह।

२—कोयले और लोहे की खानों को काले और लाल चिह्नों से अंकित करो।

३—चाय, रेशम, गेहूँ और चावल शब्दों को उन स्थानों पर लिखो, जहाँ ये अधिकता से उत्पन्न होते हैं।

४—लाल रेखा-द्वारा रेल की लाइनें दिखलाओ।

दसवाँ प्रकरण

जापान-राज्य

जापान-राज्य दुनिया के सबसे प्रसिद्ध देशों में है। यह राज्य कमसकटका (Kamschatka) से दो हजार मील दक्षिण की तरफ फारमूसा द्वीप तक फैला है। इस राज्य में (१) जापान नाम के चार बड़े द्वीप, (२) कोरिया, (३) फारमूसा (Formosa) का द्वीप, (४) सखालीन द्वीप का दक्षिणी आधा भाग, (५) लूचू और क्यूरायल के द्वीप सम्मिलित हैं। कोरिया को छोड़ कर यह सारा राज्य द्वीपों ही का है।

एशिया के कुल निवासियों से जापानी अधिक बुद्धिमान्, चतुर और उन्नतिशील हैं। कुछ समय पहले जापान में किसी भी देश का निवासी नहीं आ सकता था। परन्तु अब वहाँ प्राय हर एक देश के लोग दिखाई पड़ते हैं। इसी तरह पहले यहाँ के लोग बिलकुल असभ्य थे। परन्तु आज-कल पश्चिमी देशों की भाँति जापान में पार्लियामेंट की इमारत, यूनिवर्सिटियाँ, कालिज, पाठशालायें, हवाई जहाज, रेल, जहाज, बड़े बन्दरगाह, टेलीफोन, तारघर, डाकखाने और अस्पताल आदि सभी चीजें हैं।

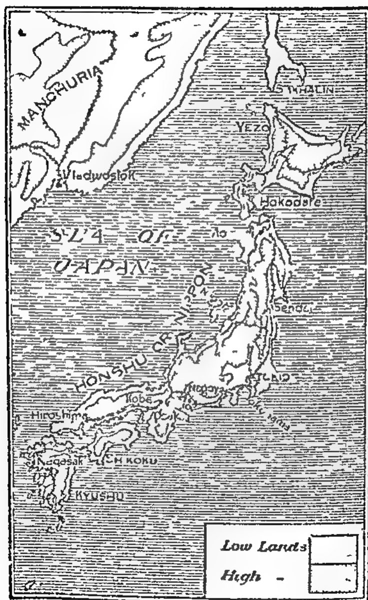
जापान-राज्य के द्वीप कमसकटका के सर्द भाग से लेकर फारमूसा के गर्म भाग तक फैले हुए हैं। इसलिए वहाँ का जलवायु भी भिन्न प्रकार का है। परन्तु एशिया के पूर्व में होने के कारण इन द्वीपों में गर्मी में बहुत वर्षा होती है जिससे ये मानसूनी हवा के प्रान्त में गिने जाते हैं।

क्यूरायल (Kurile) और सघालिन द्वीप (Sakhalin) अधिक उत्तर में होने के कारण बहुत सर्द है। इनमें सर्दी की अधिकता और वर्षा की कमी के कारण खेती नहीं हो सकती। यहाँ केवल थोड़े से मल्लाह आबाद हैं, अन्यथा यह प्राय उजाड़ सा पड़ा है।

जापान ख़ास

जापान खास में चार बड़े द्वीप सम्मिलित हैं (१) होकैडो या येजो (Hokkaido or Yezo), (२) हानश्यू (Honshiu), (३) शिकोक्यू (Shikokiu) और (४) क्यूस्यू (Kiushiu)। इनमें हानश्यू सबसे बड़ा और प्रसिद्ध है। ये सभी द्वीप पहाड़ी हैं इसलिए इनमें चीन और हिन्दुस्तान की तरह बड़े बड़े मैदान तो नहीं पाये जाते, परन्तु पहाड़ों और किनारों के बीच के भाग में छोटे छोटे मैदान हैं, जहाँ घनी आबादी है और खेती भी होती है। इन पहाड़ों से छोटी छोटी और तेज़ बहनेवाली नदियाँ बहती हैं जिनसे बिजली की ताकत पैदा की जाती है, जो बड़े बड़े नगरों में रोशनी पहुँचाने तथा कारख़ाने और रेल चलाने के काम में आती है। इसके अतिरिक्त ये नदियाँ किसी काम की नहीं हैं, क्योंकि ये न तो सिंचाई के लिए उपयोगी हैं और न इनमें नावें ही चलती हैं।

इन द्वीपों में बहुत-से ज्वालामुखी पर्वत हैं जिनके कारण यहाँ भूकम्प (भूडोल) बहुत आता है। कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब एक साधारण भूकम्प न आये। इसी से जापानी लोग बाँस या लकड़ी के मकान बनाते हैं। कारण यह है कि बाँस और लकड़ी के मकानों को भूकम्प से अधिक हानि नहीं पहुँचती। ज्वालामुखी पर्वतों में फ्यूजीयामा (Fujiyama) सबसे प्रसिद्ध है यह हानश्यू के बीच में है।



Japan—Physical.

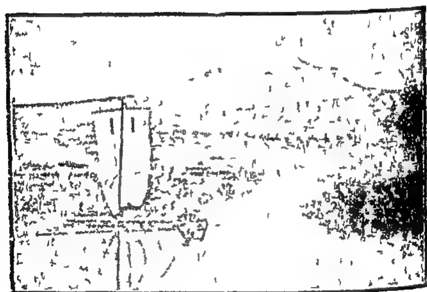
इस पहाड़ से अब उद्गार नहीं होता। आज-कल यह सर्द पड़ा हुआ है। परन्तु दो सौ बरस पूर्व इसमें भीषण उद्गार हुआ करता था। इसमें का पिघला हुआ लावा पार रात को मोटी तह पहाड़ के किनारों में चारों ओर फैल जाती थी जिससे सारे जंगल नष्ट हो गये और यहाँ के शहर बिलकुल बरबाद हो गये। यहाँ सितम्बर सन् १९२३ ईस्वी में एक बहुत भयानक भूकम्प आया था जिसके कारण योकोहामा (Yokohama) का बन्दर-



This is a road in the busy section of Tokyo

गाह बिलकुल बरबाद हो गया। राजधानी टोकियो (Tokyo) का भी एक भाग बरबाद हो गया। पृथ्वी जगह जगह से फट गई और आग लग गई। हजारों मकान जल गये और लाखों आदमी मर गये। इस भूकम्प के कारण समुद्र के पानी में भी बहुत बड़ी बड़ी लहर पैदा हुई जिससे हजारों नाव डूब गई और किनारे पर मल्लाहों के सैकड़ों गाँव बरबाद हो गये। कहा जाता है कि दुनिया में ऐसा बड़ा भूकम्प और कभी नहीं आया था।

जापान का जलवायु सर्वत्र समान है, क्योंकि यह समुद्र के बीच में है। परन्तु इसका दक्षिणी भाग और भागों से अधिक गर्म है। इसका यह कारण है कि समुद्र के पानी की एक गर्म धारा दक्षिणी किनारा से आती है, जिससे सर्दी के मौसिम में भी किनारा बर्फ़ से जमने नहीं पाता। उत्तरी किनारों से शीतल धारा आती है, इसलिए ये किनारे बर्फ़ से ढक जाते हैं। हानश्यू के उत्तरी भाग में बड़े कड़ाके की सर्दी पड़ती है और यहाँ



Mt Fujiyama in Japan

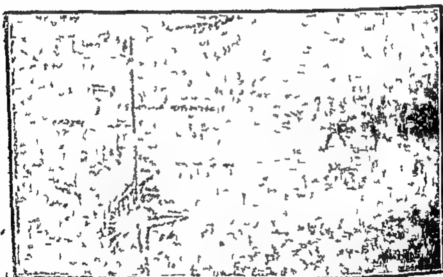
पर मेंह के सिवा बर्फ़ भी बहुत गिरती है। इससे पृथ्वी बर्फ़ से ढकी रहती है। परन्तु ग्रीष्म ऋतु में काफ़ी गर्मी भी पड़ती है जिससे सारी बर्फ़ पिघल कर बह जाता है। इस समय यहाँ गेहूँ, जौ और राई (एक क़िस्म का छोटा और काला गेहूँ) की पैदावार होती है। हानश्यू के दक्षिणी भाग में, पश्चिमी की तरह गर्मियों में गर्मी पड़ती और वर्षा भी अच्छी

वर्षा होती है। इसलिए यहाँ खेती भी अच्छी की जाती है। यहाँ की मुख्य उपज चावल, चाय और रेशम है।

जापान का अधिक भाग पहाड़ी है, अतएव वह जङ्गलों से घिरा हुआ है। यहाँ के उत्तरी जङ्गलों में नोकीली पत्तियों के पेड़ अधिक हैं। दक्षिण तथा पच्छिमी जङ्गलों के पेड़ चौड़े और गिर जानेवाली पत्तियों के हैं। इन जङ्गलों से बहुत-सी काम में आनेवाली लकड़ी बड़े नगरों में, प्रतिदिन उपयोग में आनेवाली लकड़ी की चीजें तथा मकान और कागज बनाने के लिए, पहुँचाई जाती है। जापान की चाय लंका या दार्जिलिंग की चाय से कुछ भिन्न है। यहाँ की चाय अधिकतर अमरीका भेजी जाती है। जापान के किसान बड़े परिश्रमी होते हैं। वे खेती की एक इंच भी भूमि बरबाद नहीं होने देते। वे ऐसी भूमि को बार बार जोतकर और खाद डालकर, जहाँ तक हो सकता है, उपजाऊ बना लेते हैं। यही किसान शहतूत की भी खेती करते हैं और उसके पेड़ों पर रेशम के लाखों कीड़े पालते हैं। इस प्रकार रेशम पैदा करके संसार के सारे बाजारों को भेज देते हैं। दुनिया भर में जितना सफ़ेद रेशम बनता है उसका सात प्रति सैकड़ा केवल जापान में पैदा होता है।

जापान के निवासी बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। इन लोगों ने बहुत थोड़े ही दिनों में उद्योग-धन्धा में काफी उन्नति कर ली है। इन्होंने योरप के सारे आविष्कारों को सीख लिया है। बड़े बड़े कारख़ाने खोलकर ये व्यापार के लिए तरह तरह की चीजें अधिकता से और कम लागत में तैयार करते हैं जिनके कारण जापान के बड़े बड़े शहर योरप और अमरीका के बड़े बड़े नगरों की टक्कर के हो गये हैं। यहाँ कोयले की भी कई खानें हैं जिनसे हिन्दुस्तान से कहीं अधिक कोयला निकाला जाता है परन्तु इतने कोयले से जापानियों का काम नहीं चलता, इसलिए ये लोग

मंचूरिया से भी कोयला मँगाते हैं। जापान में मिट्टी के तेल के कुएँ भी हैं, परन्तु इनसे जापानियों को केवल ख़र्चा के तेल का पाँचवाँ भाग मिलता है। यहाँ ताँबा भी अधिकता से निकाला जाता है। इन चीज़ों के अतिरिक्त कुछ भाग में खानों से सोना, चाँदी, लोहा भी निकाला जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ ज्वाला-मुखी पर्वतों से गंधक निकलती है। लकड़ी यहाँ अधिकता से पाई जाती है, इसलिए यहाँ दियासलाई के बहुत-से कारख़ाने चल रहे हैं। यहाँ के लोग बहुत प्रसिद्ध और होशियार कारीगर हैं। इसलिए धातु, चीनी मिट्टी, हाथीदाँत, रबर, रेशम और



This man is pumping water for irrigation in Japan

काग़ज़ की विचित्र और अच्छी चीज़ तैयार करते हैं। सस्ती और अच्छी होने के कारण इन चीज़ों की दूसरे देशों में बहुत माँग है। हिन्दुस्तान का छोटे से छोटा बाज़ार भी ऐसा न होगा, जहाँ जापान की चीज़ न बिकती हो।

जापानियों के मुख्य व्यवसायों में एक मल्लाही भी है। वहाँ द्वीपों के चारों तरफ समुद्र के किनारे किनारे मल्लाहों के हजारों गाँव बसे हैं और बड़े बड़े मल्लाह स्टीमर के द्वारा दूर दूर के समुद्रों से नावों में मछलियाँ पकड़कर लाते हैं जो जापान और चीन के बड़े नगरों में बिकती हैं। जापान के पास समुद्रों से मोती भी निकाले जाते हैं। आज कल तो जापानी लोग बनावटी मोती भी बनाने लगे हैं जो बहुत सस्ते बिकते हैं।

जापान का किनारा बहुत कटा हुआ है इसलिए यहाँ बहुत अच्छे बन्दरगाह हैं और इसी कारण यहाँ के लोग जहाज चलाने में बहुत उन्नति कर गये हैं। जापान के बनाये हुए दुखानी जहाज योरप, अमरीका और आस्ट्रेलिया आदि देशों में व्यापार के लिए आने-जाते हैं। इसके अतिरिक्त दुनिया में जापान सामुद्रिक शक्ति के अनुसार एक है, क्योंकि इसके पास जंगी जहाजों का एक बड़ा बेड़ा मौजूद है।

जापान के सभी बड़े बड़े नगर समुद्र के किनारे बसे हैं। दक्खिन पूर्व का किनारा बर्फ से ढका न होने के कारण अधिकतर दक्खिन-पूर्व ही में बड़े नगर पाये जाते हैं। टोकियो (Tokyo) यहाँ का सबसे बड़ा नगर है जो जापान की राजधानी भी है। यह नगर दुनिया के सबसे बड़े नगरों में गिना जाता है। यहाँ की आबादी पच्चीस लाख है। तनिक सोचो तो यह कलकत्ता की आबादी से लगभग दुगुनी है। यह नगर दस्तकारी का एक केन्द्र है। टोकियो का बन्दरगाह योकोहामा (Yokohama) है जो बहुत बड़ा नगर है। इसके अन्दर बहुत से कारखाने पाये जाते हैं। सन् १९२३ ई० के भूकम्प से यह नगर बिलकुल नष्ट हो गया था। पर अब उसकी दशा फिर पहले की तरह होती आ रही है। यही जापान का सबसे बड़ा बन्दरगाह है।

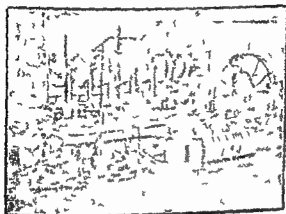
Coal
Copper
Kaolin

Minerals of Japan



Agricultural Products of Japan

ओसाका (Osaka) नगर में बड़े बड़े कारखाने सबसे अधिक हैं जिनमें अधिकतर कपड़े बुने जाते हैं। इन कारखानों के लिए अमरीका और चीन से रुई मँगाई जाती है। ओसाका के पास कोबे (Kobe) है। यह नगर जापान के बन्दरगाहों में



This man and his wife are spinning silk in their own home in Japan

दूसरे दर्जे पर है और बहुत बड़ा केन्द्र भी है। क्यूश्यू द्वीप का सबसे बड़ा नगर नागासाकी (Nagasaki) है। इस नगर के निकट कोयले की खाने हैं, इसलिए यहाँ जहाज बनाने के कारखाने हैं। जापान की मुख्य समुद्री ताक़त इसी नगर में है।

जापान में रेल की मुख्य लाइनें उत्तर से दक्षिण तक मुख्य मुख्य नगरों में से होकर गई हैं।

चीनवालों की भाँति जापान के निवासी मंगोल जाति के हैं। अब इनमें एशिया की कुछ और जातियाँ भी मिल-जुल गई हैं। जापानियों का डीलडौल छोटा, रंग कुछ कालापन लिये हुए पीला और आँखें छोटी तथा चीनियों से कम तिर्छी

होता है। इनके बाल कुछ कड़े और खड़े होते हैं। छोटे क़द के होने पर भी ये लोग बड़े मेहनती होते हैं। ये लोग बहुत सभ्य, स्वच्छ और खूबसूरत चीज़ों के पसन्द करनेवाले हैं। जापानी शहरों में सवारी के लिए ख़ास कर रिकशा काम में लाई जाती है। यह दो पहियों की बहुत हलकी गाड़ी होती है जिसको आदमी खींचते हैं। आज कल शिमला, मसूरी और नैनीताल के पहाड़ों में भी यही गाड़ी (रिकशा) सवारी के काम में लाई जाती है।



The tea-pickers in Japan are mostly women and girls

जापानी नीला रंग बहुत पसन्द करते हैं। इनके घर की छत आम तौर पर नीले रंग से रँगी रहती है। ये लोग नीले रंग का कपड़ा पहनना भी बहुत पसन्द करते हैं। इनके मकान छोटे, नीचे और बहुत सादे बने होते हैं। अधिकतर

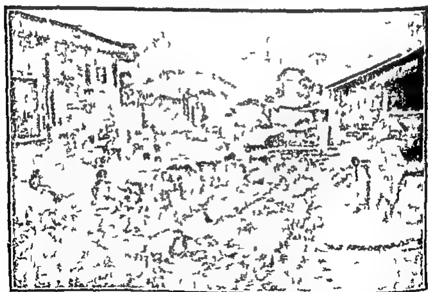
इनके घरों की चहारदीवारी ऐसी बनाई जाती है कि जब चाहे इन दीवारों को एक तरफ कर दें। घर में हवा के आने जाने के लिए कभी कभी य दीवार एक तरफ कर दी जाती है। उस समय मकान की सारी हालत बाहर से दिखाई देती है। इन घरों में मेज, कुर्सी नहीं होती। फर्श पर सफेद चटाई बिछी रहती है, जो हमेशा साफ रक्खी जाती है। भीतर से सारा मकान एक बड़े कमरे की तरह बनाया जाता है। रात में, आवश्यकता पड़ने पर, अलग होनेवाली लकड़ी को चहारदीवारी को खींचकर कई कमरे बना दिये जाते हैं और दिन में, आवश्यकता पड़ने पर, निकलने के पश्चात् फिर चहारदीवारी कर दी जाती है। इनके मकानों के भीतर आतिशदान नहीं होते। घरों को गर्म करने के लिए पीतल की अँगीठी में आग जलाई जाती है।

जापानी स्त्रियाँ अच्छे रंग के बढ़िया रेशमी वस्त्र पहनना बहुत पसन्द करती हैं। इसी तरह यहाँ के पुरुषों की पोशाक भी रेशम के लम्बे चोगे की तरह होती है। जापानी स्त्रियाँ अपने बालों को सँवारने के बाद सजावट या सुन्दरता के लिए फूल लगाती हैं। गर्मियों के दिनों में ये लोग चटाई के जूते और शरद् ऋतु में लकड़ी की खड़ाऊँ पहनते हैं। परन्तु आज-कल पढ़े-लिखे जापानी अँगरेजी ढङ्ग के कपड़े पहनते हैं।

जापानी लड़कों और लड़कियों की पोशाक भी उनके मा-बाप की तरह होती है। यहाँ की लड़कियाँ गुड़िया खेलना बहुत पसन्द करती हैं, इसलिए इनके यहाँ गुड़ियों का एक त्यौहार होता है जिसको गुड़ियों का त्यौहार कहते हैं। लड़के पतंग उड़ाना बहुत पसन्द करते हैं। इनकी पतंगें चिड़िया, तितली, मच्छड़ और मक्खी की शक्ल की बनी होती हैं। हर साल पतंग का भी एक त्यौहार होता है। रात में ये लोग घरों में रंग-बिरंगे कागजों की लालटेन जलाते हैं। जापानी कुश्ती लड़ना

बहुत पसन्द करते हैं और कुश्तीबाजों, कलाबाजों तथा मदारियों के तमाशे बड़े चाव से देखते हैं।

जापानियों को फूलों का बड़ा शौक़ होता है। यहाँ कोई भी ऐसा घर न मिलेगा जहाँ तरह तरह के फूलों से खिला हुआ एक छोटा-सा बगीचा न दिखाई पड़े। हर साल बड़े बड़े नगरों में फूलों की प्रदर्शनी की जाती है। यहाँ लकड़ी, बाँस, पीतल, शीशा, रेशम, चाँदी और चीनी की बहुत-सी अच्छी अच्छी वस्तुएँ बनती हैं और उन पर तरह तरह के बेल बूटे और तसवीरें बनाई या खोदी जाती हैं। इन कामों में दुनिया के और कारीगर इनका सामना नहीं कर सकते।



A small village in Korea

कोरिया या चोजन (Korea or Chosen)—कोरिया प्राय- ...प जापान-राज्य के अधिकार में है। इसका अधिक भाग ...ी है।

इसके पश्चिमी भाग में थोड़ा सा नीचा मैदान है। यहाँ के रहनेवालों का मुख्य पेशा खेती है। इस द्वीप के पहाड़ी भाग में सोने की खान है जिनसे सोना निकाला जाता है। स्यूल (Seoul) कोरिया का मुख्य नगर है। फ्यूशन (Fusan) दक्षिणी किनारे का मुख्य बन्दरगाह है। यहाँ के निवासी मंगोल जाति के हैं।

तैवान या फारमूसा (Taiwan or Formosa)—यह एक पहाड़ी अन्तद्वीप है। इसका अधिक भाग घने जंगलों से ढका है। इन जंगलों की मुख्य उपज कपूर है। कपूर, रबर की तरह, एक पेड़ के दूध से बनाया जाता है। दुनिया में जितना कपूर काम में लाया जाता है वह सब लगभग इसी टापू से आता है। इस टापू के पश्चिम तरफ नीचे मैदान हैं। कई स्थानों पर इन मैदानों के जंगल काटकर खेत बना लिये गये हैं, जिनमें चावल, चाय और गन्ने इत्यादि की खेती होती है। इस अन्तद्वीप में कुछ ऐसी खानें भी हैं जिनसे गंधक निकाली जाती है। यह अन्तद्वीप जापानियों के अधीन है।

मध्य एशिया का पहाड़ी भाग

हम पहले ही बता चुके हैं कि इस भाग में एशिया के ऊँचे प्लेटो स्थित हैं और पहाड़ों से घिरे होने के कारण ये प्लेटो बहुत सूखे तथा अधिकतर रेगिस्तान हैं।

इन स्थानों के जल-वायु और वनस्पति का हाल तुम पिछले पाठों में पढ़ चुके हो। इस भाग में (१) मंगोलिया, (२) चीनी तुर्किस्तान और (३) तिब्बत के सूबे हैं। ये सब सूबे चीन-राज्य के ही हिस्से माने जाते हैं, परन्तु वास्तव में ये स्वतन्त्र हो गये हैं।

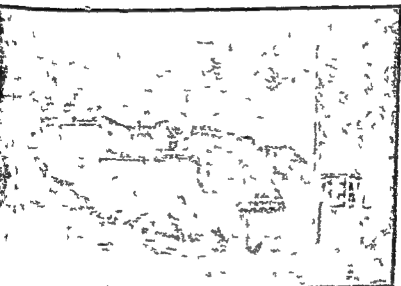
मंगोलिया (Mongolia) विस्तार में हिन्दुस्तान से बड़ा है परन्तु यहाँ आबादी बहुत ही कम है। यहाँ की कुल आबादी

बम्बई शहर की आबादी के बराबर भी नहीं है। इसका क्या सबब है? कारण यह है कि यह कुल भाग या तो अधिकतर रेगिस्तानी है या काँटों और ऊँटकटारा से घिरा हुआ है। यहाँ के निवासी अधिकतर खानाबदोश हैं। व अपने घोड़ा, भेड़ों और ऊँटों के चराने के लिए चरागाहा की खोज में इधर-उधर घूमा करते हैं। सिर्फ इस सूबे के उत्तर-पश्चिम में, कुछ उपजाऊ घाटियों में, खेती होती है। मंगोलिया का मुख्य नगर उरगा (Urga) है, जो एक छोटे-से क़स्बे के बराबर है। चीन से इस शहर तक मोटर के लिए एक सड़क बना दी गई है जिसको बने थोड़ा ही समय हुआ है।

सिनक्याग या चीनी तुर्किस्तान (Sinkiang or Chinese Turkistan) का अधिकाश भाग तारिम नदी के बेसिन (Tarim basin) में स्थित है। यह बेसिन पहाड़ों से घिरा होने के कारण बहुत सूखा और कम बसा हुआ रेगिस्तान है। केवल पहाड़ों के किनारा में कुछ खेती-बारी होती है। कारण यह है कि गर्मी के दिनों में बर्फ़ पिघल जाने पर पहाड़ी नदियाँ बहने लगती हैं। इस बेसिन के पश्चिमी भाग में पहाड़ों के किनारे पर दो नगर, काशगर (Kashgar) और यारकन्द (Yarkand), नदियों के किनारे स्थित हैं, इन्हीं नगरों से होकर पूर्व की ओर पुराने व्यापारिक मार्ग चीन की ओर गये हैं।

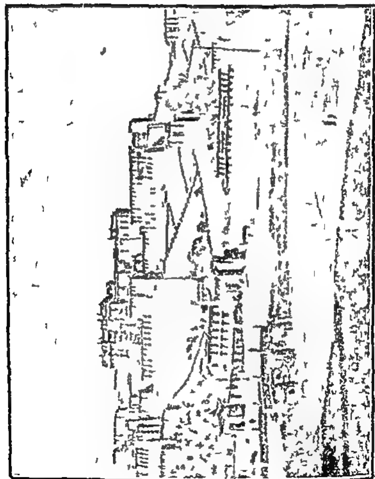
तिब्बत (Tibet) दुनिया का सबसे ऊँचा प्लेटो है। यह बिलकुल पहाड़ों से घिरा हुआ है। ऊँचा होने के कारण यहाँ बहुत कड़ी ठण्ड पड़ती है। यहाँ किसी किसी स्थान पर मीलों लम्बे-चौड़े बर्फ़ के मैदान पाये जाते हैं। इस प्लेटो के दक्षिण हिमालय पर्वत का उत्तरी भाग है, जहाँ सतलज और सांपो (R Sutlej and R Sanpo) नामक दो बड़ी नदियाँ बहती हैं।

सापो नदी की घाटी में लोगों का ख़ास पेशा खेती है। इस घाटी में ल्हासा (Lhasa) स्थित है, जो यहाँ की राजधानी और बड़ा सुन्दर नगर है। यहा बौद्ध-मत के कई सुन्दर मन्दिर हैं, क्योंकि तिब्बत के लोग बौद्ध-मत के माननेवाले हैं। इन लोगों के महन्त और गुरु दलाई लामा कहलाते हैं, ल्हासा में उनका महल देखने योग्य है।



This is a farm house in Tibet

आम तौर से तिब्बत के लोग बहुत गरीब हैं। इनका भोजन काले जौ की रोटी है। ये लोग भेड़ें, बकरियाँ और याक (Yak) पालते हैं। याक एक प्रकार का बैल है जिसके बाल बड़े बड़े होते हैं। यह इन लोगों का सबसे ज्यादा काम देनेवाला जानवर है। जिस तरह रेगिस्तानों में ऊँट होता है उसी तरह इस प्लेटो में याक माल ले जाने और ले आने के काम में आता है।



Dalai Lama's Palace in Tibet

इसकी मोटी खाल के बर्तन और तम्बू बनाये जाते हैं और इसके गर्म ऊन का कपड़ा बनता है। मादा याक का दूध भी खाया जाता है।

प्रश्न

१—जापान राज्य में कौन कौन द्वीप और द्वीपसमूह सम्मिलित हैं?

२—जापान द्वीपसमूह के जलवायु का हाल बताओ।

३—जापान में बड़ी बड़ी नदियाँ क्यों नहीं हैं? यहाँ की छोटी नदियों से लोगों को क्या लाभ पहुँचता है?

४—जापान के निवासियों के मुख्य व्यवसायों का कुछ हाल बताओ।

५—जापान की बनी हुई कुछ चीज़ों के नाम बताओ जिन्हें तुमने अपने घर या बाज़ार में देखा है।

६—जापानवाले चीन और मंचूरिया से कौन कौन सी चीज़ मँगाते हैं और क्यों?

अभ्यास

जापान का एक नक़्शा खींचो और उसमें निम्नलिखित दिखाओ—

१—वे भाग जहाँ चावल की उपज होती है।

२—टोकियो, याकोहामा, क्योटो, ओसाका और नागासाकी नगर।

३—कोयले की खानें (काले निशानों से)।

ग्यारहवाँ प्रकरण

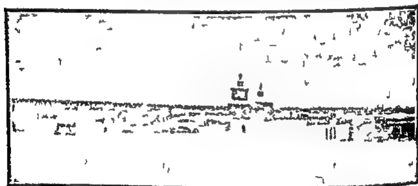
साइबेरिया

साइबेरिया चार प्राकृतिक हिस्सों में बाँटा जा सकता है।

(१) टुन्ड्रा, (२) टेगा के जंगल, (३) घास के मैदान या स्टेपीज, (४) रेगिस्तान या आधा रेगिस्तान।

१—टुन्ड्रा—पहले बता चुके हैं कि यह भाग साइबेरिया के उत्तर में आर्कटिक महासागर के तट पर एक बहुत सर्द पट्टी है।

इस भाग में जीवन व्यतीत करना इतना कठिन है कि यह बहुत कम बसा हुआ है। यहाँ के लोगों के जीवन व्यतीत करने का



This is a picture of one of the little villages in the Siberian Tundra

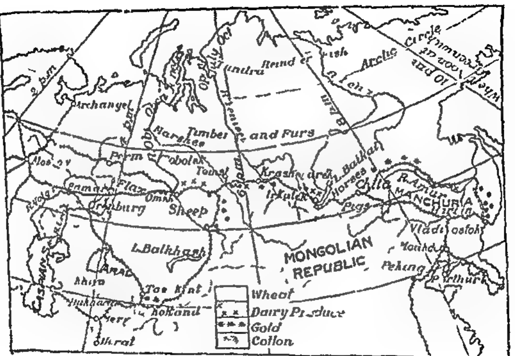
हाल सुनकर तुम समझ गये होगे कि ये लोग रहने के लिए कितनी कठिनाई से घर बनाते होंगे। ये गर्मियों के दिनों में एक स्थान से



sledges or wheel less carriages in the Tundra region

दूसरे स्थान में फिरते हैं और चमडे के बने हुए खेमो में रहते हैं। इनके खेमे इस प्रकार बने रहते हैं जो कि शीघ्र ही खडे किये और फौरन उखाड कर गिरा भी दिये जा सकते हैं। खेमे बनाने के लिए डण्डो का ढाँचा बनाकर उस पर चमडा मढ दिया जाता है। जाडे के दिनो में ये लोग, कठिन ठढक और तेज हवा से बचाने के लिए, मजबूत मकान बनाते हैं। ये मकान बिलकुल बर्फ के होते हैं। उसके भीतर जाने के लिए ये लोग एक सुरङ्ग की भाँति तङ्ग रास्ता बनाते हैं जिसके द्वारा घुटनो के सहारे मकान के भीतर घुसते हैं। इस ऋतु मे, सर्दी और तेज हवा से बचने के लिए, बर्फ के मकान खूब दृढ होते हैं, क्योंकि इन दिनो मे बर्फ बिलकुल नहीं पिघलती। मकान के भीतर फर्श पर यानी भूमि पर बारह-सिंगो की खाले बिछा देते हैं और गर्मी पाने के लिए मकान के बीच में अँगीठी भी जला लेते हैं। इस भाग में गाँव, शहर, मन्दिर और बाजार इत्यादि की तरह की कोई वस्तु नही है। आबादी भी यहाँ इतनी कम है कि यदि कोई मुसाफिर यहाँ सौ मील तक सफर करे, तो भी बहुत कठिनाई से उसे शायद कोई मकान दिखाई दे।

२—उत्तरी मैदान के जगल—टुन्ड्रा से जैसे-जैसे हम दक्षिण की ओर बढते जायँ वैसे ही वैसे हमको वनस्पति मे परिवर्तन दिखाई देगा। आरम्भ म पौदे थोडी थोडी दूर पर दिखाई देंगे, परन्तु जैसे जैसे हम दक्षिण की ओर आगे बढ़ते जायँ वैसे वैसे पौदे अधिक और बडे बडे दिखाई देंगे, यहाँ तक कि बढते बढते बडे बडे पेडों के जङ्गल दिखाई देगे। जङ्गलो का यह प्रान्त, जिसको टेगा कहते हैं, बहुत चौडी पट्टी के रूप मे टुन्ड्रा भाग के दक्षिण मे स्थित है और पैसिफिक महासागर से अटलांटिक महासागर तक चला गया है।



Siberia—Products

इन जंगलों के बीच अच्छी लकड़ी बहुत पाई जाती है। उससे कुर्सी मकान की दीवार और छत आदि तरह तरह का सामान आसानी से बनाया जा सकता है। परन्तु ये जंगल योरप और एशिया के घने बसे हुए भागों से बहुत दूर पड़ते हैं, इसलिए यहां से उन देशों के लिए लकड़ी ले जाना असम्भव-सा है। इस भाग की सभी नदियाँ उत्तर की ओर बहकर आर्कटिक महासागर में गिरती हैं। इसी कारण यहाँ की लकड़ी प्रायः लट्ठे नदियों में बहाकर भी दूसरे देशों को नहीं भेजे जा सकते।

यहाँ के जंगल इतने घने हैं कि सैकड़ों मील तक आबादी नहीं मिलती। हां, नदियों के किनारे किसी किसी स्थान पर जंगल काटकर गाँव बस गये हैं। इन गाँवों के बीच लकड़ी के मकान बनाये जाते हैं और गाँववाले कुछ जानवर भी पालते हैं। यहाँ के निवासी झीलों और नदियों में मछली मारते और जाड़े में समूरदार जानवरों का शिकार भी करते हैं। साइबेरिया के इन जंगलों के दक्षिण में जो जंगल हैं वे भी आगे बढ़ते हुए धीरे धीरे कम होते गये हैं। दक्षिणी किनारे से कुछ दूर पर रेल की सड़क बनाई गई है और इस भाग में बहुत से गाँव और नगर बस गये हैं। इस भाग में जन-संख्या जंगल की अपेक्षा अधिक है और लोग कुछ खेती तथा व्यापार भी कर लेते हैं। पूर्वी साइबेरिया का पहाड़ी भाग नर्म लकड़ी के जंगलों से ढका हुआ है। इन पहाड़ों पर खास कर अल्टाई पहाड़ों पर, सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा इत्यादि बहुमूल्य धातुओं की खानें हैं, परन्तु यहाँ की खानों से अभी ये चीजें निकाली नहीं जातीं।

२—स्टैपीज या घास के मैदान—साइबेरिया के दक्षिण में धीरे धीरे जंगल कम घने होते गये हैं। यहाँ तक कि अन्त में

[illegible]

Vladivostok Harbour

इस प्रदेश में [illegible] से [illegible] और [illegible] को [illegible] होती है, परन्तु यहाँ [illegible] कम है। इस ओर का [illegible] भाग [illegible] पड़ा हुआ है। [illegible] यहाँ इस समय [illegible] आबादी थी। [illegible] थे जो खेती करते थे। परन्तु [illegible] यहाँ [illegible] जारी पर भी है [illegible] यहाँ बस रहे हैं और [illegible] की खेती [illegible]।

ट्रान्स साइबेरियन रेलवे (Trans Siberian Railway) इसी भाग [illegible] से [illegible] तक जाती है। यहाँ [illegible] मशीनों [illegible] खेती करते हैं

और बहुत बड़े बड़े खेत जोतते बोते हैं। यहाँ से रूस के बड़े बड़े नगरों में रेल द्वारा गेहूँ भेजा जाता है। इस भाग में रेल की सड़क के किनारे साइबेरिया के मुख्य नगर स्थित हैं। इन नगरों में मक्खन के कारखाने पाये जाते हैं।

रेल की सड़क के समीप या किनारे साइबेरिया के जो बड़े नगर स्थित हैं, उनमें पहला व्लाडीवोस्टक (Vladivostok) है। यह नगर पैसिफिक महासागर के किनारे पर, ट्रांस साइबेरियन रेलवे का अन्तिम स्टेशन है। पिछले बीस वर्षों में इस नगर में ऐसी उन्नति हुई कि इसकी आबादी पहले से तिगुनी हो गई है। जाड़े में यहाँ का बन्दरगाह यद्यपि बर्फ से जम जाता है तथापि यहाँ की बर्फ पर जहाज चलाने के लिए जहाज में खास तरह के मजबूत औजार लगा दिये जाते हैं जिनसे बर्फ कट जाती है। इस तरह यह बन्दरगाह व्यापार के लिए साल भर खुला रहता है। योरप से आनेवाली चीन और जापान की डाक ट्रांस साइबेरियन रेलवे से इसी बन्दरगाह पर उतारी जाती है।

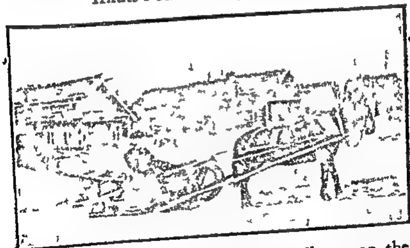
इर्कुटस्क (Irkutsk) रेल का एक बड़ा सुन्दर नगर और स्टेशन है। यह शहर झील बैकाल के पश्चिम में चालीस मील की दूरी पर है। पूर्वी साइबेरिया का यह सबसे बड़ा शहर है।

रेल की एक शाखा पर टोमस्क (Tomsk) स्थित है। यह पश्चिमी साइबेरिया का एक बड़ा शहर है। इसी शहर में एशियाई रूस की एक बड़ी यूनिवर्सिटी है।

ओमस्क (Omsk) व्यापारी मेलों के कारण प्रसिद्ध हो गया है, क्योंकि इस शहर में मेले बहुत हुआ करते हैं।



Irkutsk on the Angara River



This is a view in one of the villages on the southern edge of the Taiga The wooden houses in these villages are nearly all alike The sledge is a common means of travel in winter

रूस का अधिक व्यापार प्रसिद्ध शहरों मे मेलो के द्वारा होता है। साल म नियत समय पर लाग दूर दूर म आकर इन शहरो मे जमा हाते हैं और हर प्रकार का माल असबाव बेचते हैं। इन शहरा के मेले बहुत अच्छे और देखने लायक होते हैं।

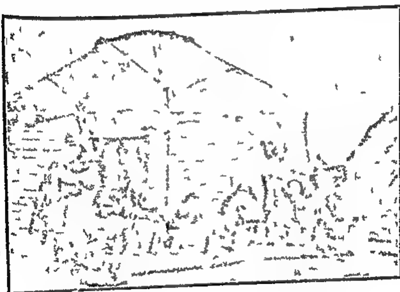
८—रेगिस्तानी और अर्धरेगिस्तानी भाग—यह भाग स्टप्स के मैदान के दक्षिण म स्थित है और इसे रूसी तुर्किस्तान कहते हैं। इस भाग के मैदान बहुत नीचे और समुद्र मे बहुत दूर हैं, इस कारण यह भाग गर्मी मे बहुत गर्म और जाडे म बहुत सर्द रहता है। यहाँ या तो वर्षा बहुत ही कम होती है, या लगभग बिलकुल नहीं होती।

इस भाग मे बालकश (L Ball ish) और अरल (L Ar il) नाम की खारे पानी की दो बडी झीले हैं। इस भाग के पूर्व की ओर के प्लेटोओ से निकलनेवाली नदियाँ इन्ही झीलो मे आकर गिरती हैं। इन झीला का पानी इसलिए खारी है कि जो नदियाँ इनमे गिरती हैं वे अपने साथ नमक का बहुत सा भाग लाती हैं। इन नदियों के कारण इन झीलो का जितना पानी मिलता है उससे अधिक पानी, वर्षा कम होने और गर्मी अधिक पडने के कारण, हर साल सूख जाता है, इसी से यह धीरे धीरे छोटी भी होती जा रही हैं। अरल मे सर (जेहूँ) और अमू (सेहूँ) दो नदियाँ आकर गिरती हैं। ये पूर्व की ओर के पहाडों की बर्फ के पिघलने से निकली हैं।

यह कुल भाग लगभग रेतीला है। कुछ भाग मे थोडी घास पाई जाती है, नहीं तो रेत, काँटे, ऊँटकटारे और झरबेरी का छोडकर इस भाग मे कुछ भी नहीं है। हाँ, पहाडों का किनारा और घाटियो का भाग खेती बारी करने लायक है। इन स्थानों पर गेहूँ, मक्का, रुई और तम्बाकू तथा कुछ फल—जैसे अगूर,

नारंगी, नाशपाती और अनार इत्यादि—पैदा होते हैं। यहाँ कुछ गाँव, कसबे और नगर बसे हुए हैं। बाकी दूसरे भागों के लोग खानाबदोश चरवाहे हैं जो घोड़े, ऊँट और जानवर पालते हैं।

यहाँ रेल की एक लाइन योरपीय रूस से, स्टेपीज के भाग में होती हुई, आई है। यह रेल जेहूँ नदी की उपजाऊ घाटी के साथ साथ ताशकन्द (Tashkend) को चली गई है जो रूसी तुर्किस्तान का सबसे प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है। ताशकन्द में



The home of a Nomad family in Bukhara

सूती कपड़ा, चमड़ा और धातु की चीजें बनाई जाती हैं। इस शहर के दक्षिण में यह लाइन समरकन्द (Samarkand), बुखारा (Bukhara) और मर्व (Merv) होती हुई कास्पियन सागर तक चली गई है। बुखारा और मर्व पुराने जमाने से प्रसिद्ध व्यापारी

नगर हैं। बुख़ारा के पश्चिम में लाइन की एक शाखा अफ़गानिस्तान के किनारे तक आई है। अब पेशावर या क्वेटा से अफ़गानिस्तान होती हुई यदि कोई रेलवे लाइन रूस की लाइन से जा मिले तो लोग रेल-द्वारा हिन्दुस्तान से योरप जाने लगें और इस यात्रा में सामुद्रिक यात्रा की अपेक्षा बहुत कम समय लगे।

साइबेरिया के राजकीय विभाग (Political Divisions)

साइबेरिया का भाग पहले रूसी राज्य के अधीन था। परन्तु योरप के महायुद्ध से रूस का राज्य बरबाद हो गया और अभी तक इसकी दशा नहीं सुधरी। सैकड़ों बरस से यहाँ बादशाह राज्य करते थे जिनकी पदवी ज़ार (Tsar) थी। अन्तिम ज़ार १९१७ में सिंहासन से उतार दिया गया और रूसी किसानों या मजदूरों का प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया। पुराने रूसी राज्य के अलग अलग जाति के लोगों में से बहुतों ने अपना अलग अलग राज्य स्थापित कर लिया है। इन स्वतन्त्र राज्यों में से आरमीनिया (Armenia), जार्जिया (Georgia), आजरबायजान (Azerbaijan) और तुर्किस्तान एशिया में हैं। इनको नक़शे में देखो। इन छोटी छोटी रियासतों का सम्बन्ध अभी तक रूसी राज्य से इक़रारनामे द्वारा स्थापित है।

बैकाल झील (Lake Baikal) से लेकर व्लाडीवोस्टक (Vladivostok) तक का देश पूर्वी साइबेरिया कहलाता है। यह भाग बिलकुल स्वतंत्र है। योरप के
मित्रता का सम्बन्ध है।

प्रश्न

१—हिन्दुस्तान की नदियों से साइबेरिया की नदियों की तुलना करो और बताओ कि साइबेरिया की नदियाँ व्यापार के काम की क्यों नहीं हैं।

२—टुंड्रा के जलवायु और निवासियों के जीवन का कुछ हाल लिखो।

३—टैगा के वनों का कुछ हाल बताओ। यहाँ के निवासियों के उद्यम का कुछ हाल लिखो।

४—स्टेप्स किसे कहते हैं? यहाँ के जलवायु, वनस्पति और निवासियों के जीवन का कुछ हाल लिखो।

अभ्यास

१—साइबेरिया का नक्शा बनाओ। उसमें मुख्य नदियाँ, शहर और रेलों को दिखाओ।

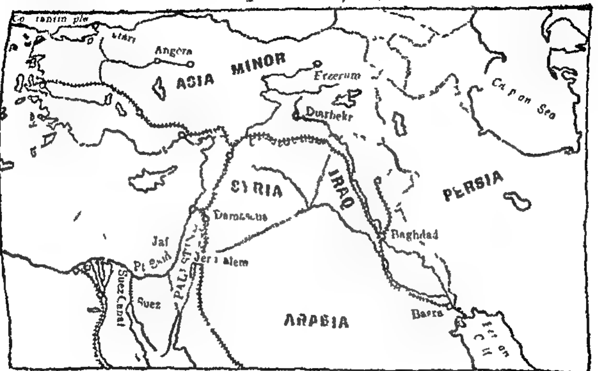
२—इसी नक्शे में साइबेरिया के प्राकृतिक भाग भी दिखाओ।

नगर हैं। बुखारा के पश्चिम में लाइन की एक शाखा अफ़गानिस्तान के किनारे तक आई है। अब पेशावर या क्वेटा से अफ़गानिस्तान होती हुई यदि कोई रेलवे लाइन रूस की लाइन से जा मिले तो लोग रेल-द्वारा हिन्दुस्तान से योरप जाने लगें और इस यात्रा में सामुद्रिक यात्रा की अपेक्षा बहुत कम समय लगे।

साइबेरिया के राजकीय विभाग (Political Divisions)

साइबेरिया का भाग पहले रूसी राज्य के अधीन था। परन्तु योरप के महायुद्ध से रूस का राज्य बरबाद हो गया और अभी तक इसकी दशा नहीं सुधरी। सैकड़ों बरस से यहाँ बादशाह राज्य करते थे जिनकी पदवी जार (Tsar) थी। अन्तिम जार १९१७ में सिंहासन से उतार दिया गया और रूसी किसानों या मजदूरों का प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया। पुराने रूसी राज्य के अलग अलग जाति के लोगों में से बहुतों ने अपना अलग अलग राज्य स्थापित कर लिया है। इन स्वतंत्र राज्यों में से आरमीनिया (Armenia), जार्जिया (Georgia), आजरबायजान (Azerbaijan) और तुर्किस्तान एशिया में हैं। इनको नक़्शे में देखो। इन छोटी छोटी रियासतों का सम्बन्ध अभी तक रूसी राज्य से इकरारनामे द्वारा स्थापित है।

बैकाल झील (Lake Baikal) से लेकर व्लाडीवोस्टक (Vladivostok) तक का देश पूर्वी साइबेरिया कहलाता है। यह भाग बिलकुल स्वतंत्र है। योरप के रूसी राज्य से इसका मित्रता का सम्बन्ध है।



Western Asia—Political

बारहवाँ प्रकरण

एशिया का पश्चिमी प्लेटो

एशिया के पश्चिमी भाग को हम इस प्रकार प्राकृतिक भागों में बाँट सकते हैं—

(१) ईरान का प्लेटो।

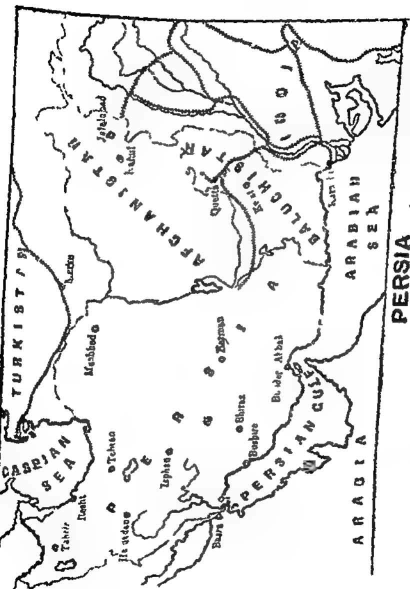
(२) मेसोपोटामिया का नीचा मैदान।

(३) एशिआई कोचक यानी टर्की और शाम देश का प्लेटो।

(४) अरब का प्लेटो।

इनमें मेसोपोटामिया को छोड़कर सब हिस्से प्लेटो हैं, परन्तु ये प्लेटो तिब्बत की भाँति ऊँचे नहीं हैं। एशिया के इस पश्चिमी भाग में बहुत से देश हैं। इनके नाम नक़शे में दिये हुए हैं। नक़शा देखने से तुमको यह भी मालूम हो सकता है कि इन प्लेटोओं पर बहुत कम और बहुत छोटी नदियाँ हैं जिससे यहाँ की आबहवा ख़ुश्क है। इन स्थानों का जलवायु सूखा होने का कारण यह है कि हिन्द महासागर से गर्मी में जो हवायें उत्तर-पूर्व की ओर चलती हैं उनकी सीमा से यह हिस्सा बाहर रह जाता है। ईरान और टर्की के पहाड़ों पर थोड़ी बहुत वर्षा, जाड़े में, होती है। टर्की के पश्चिमी भाग में भूमध्य सागर का जलवायु है जिसके कारण वहाँ अच्छी वर्षा होती है, उपजाऊ घाटियाँ पाई जाती हैं और नदियाँ भी बहती हैं।

इन प्लेटोओं में गर्मी के दिनों में बहुत गर्मी पड़ती और जाड़े में जाड़ा भी ख़ूब पड़ता है। ग्रीष्म ऋतु में जब दिन में कड़ी गर्मी


PERSIA
CASPIAN SEA
AFGHANISTAN
ARABIAN SEA
PERSIAN GULF
ARABIA

पड़ती है तो रात ठंडी हो जाती है। इन प्लेटाओं के अधिकांश भाग रेगिस्तानी हैं। कुछ हिस्सों में घास भी उगती है। इन हिस्सों के निवासी चरवाहे हैं। हाँ, पहाड़ के नीचे जहाँ छोटी छोटी नदियाँ पाई जाती हैं या जिन स्थानों पर कुओं से सिंचाई हो सकती है वहाँ लोग खेती-बारी करते और गेहूँ, जौ वगैरह बोते हैं।

ईरान का पठार या प्लेटो

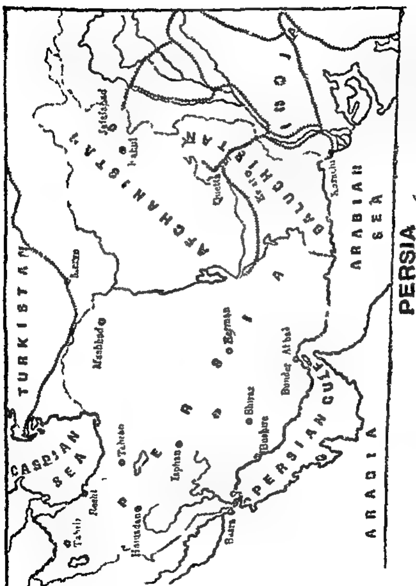
तुमको पहले ही बतलाया गया है कि ईरान का प्लेटो उन ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है जो पामीर से पश्चिम की ओर निकले हुए हैं।

पामीर से निकलकर हिन्दूकुश पहाड़ और इसके आगे अलबुर्ज पहाड़ (Elburz Mts) ईरान की उत्तरी सीमा बनाते हैं। उसकी पूर्वी सीमा सुलेमान और किरथर से और दक्षिणी पश्चिमी सीमा जागरूस (Zagros) पर्वत से बनती है। फिर ज़ागरूस और अल्बुर्ज पहाड़ की श्रेणियाँ ईरान के उत्तर-पश्चिम में आरमीनिया के प्लेटो पर मिल जाती हैं। इस तरह ईरान का प्लेटो चारों ओर ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है।

एशिया का प्राकृतिक नक़शा देखकर मालूम करो कि ईरान का प्लेटो तिब्बत के प्लेटो के बराबर ऊँचा नहीं है। इसके चारों ओर के पहाड़ छ हज़ार फीट से अधिक ऊँचे हैं और प्लेटो के बीच का हिस्सा इन पहाड़ों से बहुत ही नीचा है।

ईरान के प्लेटो में अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस और बिलोचिस्तान के मुल्क हैं। इनमें से बिलोचिस्तान भारत-साम्राज्य का एक भाग है।

जलवायु के अनुसार यह प्लेटो बहुत ही सूखा है। इसके गिर्द के पहाड़ों पर कुछ वर्षा हो जाती है। अल्बुर्ज पहाड़ की उत्तरी ढाल के हिस्से में सबसे ज्यादा वर्षा होती है, इसलिए इस पहाड़


TURKISTAN
CASPIAN SEA
AFGHANISTAN
BALUCHISTAN
ARABIAN SEA
PERSIAN GULF
ARABIA
PERSIA
Mashhad
Tehran
Ispahan
Shiraz
Bushire
Bunder Abbas
Karachi
Quetta
Kabul
Hamadan
Resht
Basra

पड़ती है तो रात ठंडी हो जाती है। इन प्लेटोओं के अधिकांश भाग रेगिस्तानी हैं। कुछ हिस्सों में घास भी उगती है। इन हिस्सों के निवासी चरवाहे हैं। हाँ, पहाड़ के नीचे जहाँ छोटी छोटी नदियाँ पाई जाती हैं या जिन स्थानों पर कुओं से सिंचाई हो सकती है वहाँ लोग खेती-बारी करते और गेहूँ, जो वग़ैर बोते हैं।

ईरान का पठार या प्लेटो

तुमको पहले ही बतलाया गया है कि ईरान का प्लेटो उन ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है जो पामीर से पश्चिम की ओर निकले हुए हैं।

पामीर से निकलकर हिन्दूकुश पहाड़ और इसके आगे अल्बुर्ज़ पहाड़ (Elburz Mts) ईरान की उत्तरी सीमा बनाते हैं। उसकी पूर्वी सीमा सुलेमान और किरथर से और दक्षिण पश्चिमी सीमा जागरूस (Zagros) पर्वत से बनती है। फिर जागरूस और अल्बुर्ज़ पहाड़ की श्रेणियाँ ईरान के उत्तर-पश्चिम में आरमीनिया के प्लेटो पर मिल जाती हैं। इस तरह ईरान का प्लेटो चारों ओर ऊँचे पहाड़ों से घिरा हुआ है।

एशिया का प्राकृतिक नक़शा देखकर मालूम करो कि ईरान का प्लेटो तिब्बत के प्लेटो के बराबर ऊँचा नहीं है। इसके चारों ओर के पहाड़ छ हज़ार फ़ीट से अधिक ऊँचे हैं और प्लेटो के बीच का हिस्सा इन पहाड़ों से बहुत ही नीचा है।

ईरान के प्लेटो में अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस और बिलोचिस्तान के मुल्क हैं। इनमें से बिलोचिस्तान भारत-साम्राज्य का एक भाग है।

जलवायु के अनुसार यह प्लेटो बहुत ही सूखा है। इसके गिर्द के पहाड़ों पर कुछ वर्षा हो जाती है। अल्बुर्ज़ पहाड़ की उत्तरी ढाल के हिस्से में सबसे ज्यादा वर्षा होती है, इसलिए इस पहाड़

PERSIA

का उत्तरी ढाल, जो कास्पियन सागर (Caspian Sea) की ओर है, जङ्गल से ढका है। जाडे में इस पहाड पर बर्फ़ जम जाती है। गर्मी में यह बर्फ़ पिघलती है। इस पहाड की बर्फ़ के पिघलने और कुछ वर्षा के कारण नदियाँ बह निकलती हैं। इन नदियो के कारण पहाडों के किनारों पर खेती होती है। जगह जगह पर पहाडो के नीचे गाँव, कसबे और शहर आबाद हो गये हैं। इसी अल्बुर्ज पहाड के दक्षिणी किनारे पर फारस की राजधानी तेहरान (Teheran) है। इसी प्रकार जागरूस पर्वत पर कुछ वर्षा हो जाती है। इस पहाड के किनारे पर भी कुछ गाँव, कसबे और शहर बसे हैं। जिस साल और वर्षो की तरह वर्षा नहीं होती उस साल यहाँ के चरमे सूख जाते हैं और अकाल पड जाता है। इसलिए किसी किसी स्थान पर नहरें बना दी गई हैं। फारसवालों ने सुरङ्ग बनाकर ये नहरे निकाली हैं। ये ऊपर से इसलिए ढकी होती हैं कि इनका पानी सूख न जाय।

ईरान की घाटियो और उपजाऊ स्थानों में गेहूँ, बाजरा, ज्वार, तम्बाकू, अफीम, रुई और अखरोट, बादाम, पिस्ता, शफ़तालू, आलूचा तथा अंगूर आदि व सूखे व हरे फल बोये जाते हैं।

जिन भागो में वर्षा होने के कारण कुछ घास जम जाती है वहाँ के निवासी ऊँट, भेड, बकरियाँ और घोड़े पालते हैं, और उनसे जानवरों की चरवाही करते हैं।

ऊनी कपडे और उम्दा क़ालीन लगभग सब नगरों में बनाये जाते हैं। इसके लिए फारस बहुत दिनो से प्रसिद्ध है।

एशिया के कुछ पश्चिमी देशो में सवारी और बोझ लादने के काम में ऊँट आता है, क्योंकि इन देशो के लिए ऊँट ही एक ऐसा जानवर है जो कई कई दिनो तक बिना चारे-पानी के सफ़र कर सकता है। इसके पैर के तलुवे में गद्दी की तरह मुलायम चपडा होता है जिससे यह बालू में नहीं धँस सकता।

इस सेटो का बाक़ी भाग रेगिस्तानी है और बहुधा बालू से ढका है। यहाँ के रेगिस्तान की बालू में नमक का अंश बहुत है। प्राचीन समय में इन रेगिस्तानो पर खारी पानी की झीलें थीं। इन झीलो के सूख जाने स ये नमक के रेगिस्तान हा गये हैं। यात्रियों को इन स्थानों से जाने मे बडी कठिनता होती है क्योंकि



This is a Persian dinner party The guests are seated on beautiful rugs and the servants stand behind, ready to serve their masters

नमक हवा में मिलकर यात्रियो और ऊँटों की नाक में घुस है जिससे दम घुटता है। इन स्थानो में जहाँ ज़मीन से पानी के सोते निकले हैं वहाँ एक छोटा-सा हरा-भरा बन गया है। उस हरे-भरे मैदान को नख़लिस्तान

कहते हैं। इन नखलिस्तानो मे खेत, फूलो और फलो के बाग, शहर, मसजिदें और सराये पाई जाती हैं।

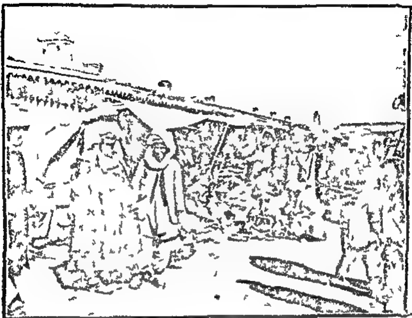
इन रेगिस्तानो से जानेवाला काफिला इन्हीं नखलिस्तानो में ठहरता और आवश्यकता के अनुसार नखलिस्तानो की चीजें खरीदता है। फारस के दो प्रसिद्ध नगर मशहद (Meshed) और शीराज (Shiraz) इन्हीं नखलिस्तानों पर स्थित हैं। फारस के बीच में जागरूस पर्वत के पूर्वी किनारे पर एक घाटी में इस्फहान (Ispahan) स्थित है। किसी समय यह नगर फारस की राजधानी था।

फारस की खाडी के उत्तरी किनारे पर बूशहर (Bushire) और बन्दर अब्बास (Bandar Abbas) नाम के दो बन्दरगाह है। इन बन्दरगाहो पर थोडी सी तिजारत होती है। उमान की खाडी (Gulf of Oman) का उत्तरी किनारा बिलकुल बजर है परन्तु उसके किनारे पर, जगह जगह, ताड के पेड पाये जाते हैं।

अफगानिस्तान के पहाडों पर भी थोड़ी वर्षा हो जाती है और बर्फ जम जाती है। इसी कारण यहाँ भी नदियाँ पाई जाती हैं। अफगानिस्तान मे काबुल नदी (R Kabul) सबसे लाभदायक नदी है। इसी नदी की उपजाऊ घाटी मे काबुल (Kabul) नगर बसा हुआ है। काबुल नदी पूर्व की ओर सिन्ध नदी में गिरती है। नक्शे मे हेलमन्द नदी (Helmand) को देखो। यह नदी कोह सफेद से निकली है और दक्षिण पश्चिम के रेगिस्तान के बीच हेलमद झील में गिरती है, जो खारी पानी की एक झील है। अफगानिस्तान के दक्षिण मे एक और प्रसिद्ध नगर कन्धार (Kandahar) है।

बिलोचिस्तान भी अफगानिस्तान की तरह एक पहाडी प्रदेश है। इसका एक बहुत बडा हिस्सा रेगिस्तान है। वर्षा की कमी

और गर्मी की अधिकता से यहाँ भी बहुत कम पैदावार होती है। पेड पौधे बहुत कम होते हैं। समुद्र के किनारे कहीं कहीं पर खजूर



This is the market place at Quetta in Baluchistan

के पेड पाये जाते हैं। इन पेडों से एक लाभ यह है कि ये रेगिस्तानो के अन्दर रास्ते की खोज में यात्रियो को सहायता पहुँचाते हैं।

मेसोपाटामिया का नीचा मैदान या इराक अजम

मेसोपोटामिया शब्द का अर्थ दोआब है। नक्शे में देखो कि यह भाग ईरान और अरब के सेटोओं के बीच का नीचा मैदान है। इस मैदान में दजला (Tigris) और फरात (Euphrates) दो नदियाँ बहती हैं। इसी कारण इस मैदान को मेसोपोटामिया का मैदान कहते हैं। गंगा और जमुना के मैदान की ही भाँति

कहते हैं। इन नखलिस्तानो मे खेत, फूलो और फलो के बाग, शहर, मसजिदें और सराये पाई जाती हैं।

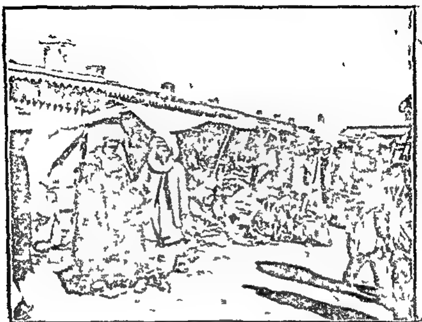
इन रेगिस्तानो से जानेवाला काफिला इन्हीं नखलिस्तानों में ठहरता और आवश्यकता के अनुसार नखलिस्तानो की चीजें खरीदता है। फारस के दो प्रसिद्ध नगर मशहद (Meshed) और शीराज (Shiraz) इन्हीं नखलिस्तानो पर स्थित हैं। फारस के बीच में जागरूस पर्वत के पूर्वी किनारे पर एक घाटी में इस्फहान (Ispahan) स्थित है। किसी समय यह नगर फारस की राजधानी था।

फारस की खाडी के उत्तरी किनारे पर बूशहर (Bushire) और बन्दर अब्बास (Bandar Abbas) नाम के दो बन्दरगाह हैं। इन बन्दरगाहो पर थोडी सी तिजारत होती है। उमान की खाडी (Gulf of Oman) का उत्तरी किनारा बिलकुल बजर है परन्तु उसके किनारे पर, जगह जगह, ताड के पेड पाये जाते हैं।

अफगानिस्तान के पहाडों पर भी थोडी वर्षा हो जाती है और बर्फ जम जाती है। इसी कारण यहाँ भी नदियाँ पाई जाती हैं। अफगानिस्तान मे काबुल नदी (R Kabul) सबसे लाभदायक नदी है। इसी नदी की उपजाऊ घाटी मे काबुल (Kabul) नगर बसा हुआ है। काबुल नदी पूर्व की ओर सिन्ध नदी में गिरती है। नक्शे मे हेलमन्द नदी (Helmand) को देखो। यह नदी कोह सफेद से निकली है और दक्षिण पश्चिम के रेगिस्तान के बीच हेलमन्द झील मे गिरती है, जो खारी पानी की एक झील है। अफगानिस्तान के दक्षिण मे एक और प्रसिद्ध नगर कन्धार (Kandahar) है।

बिलोचिस्तान भी अफगानिस्तान की तरह एक पहाडी प्रदेश है। इसका एक बहुत बडा हिस्सा रेगिस्तान है। वर्षा की कमी

ओर गर्मी की अधिकता से यहाँ भी बहुत कम पैदावार होती है। पेड पौधे बहुत कम होते हैं। समुद्र के किनारे कहीं कहीं पर खजूर

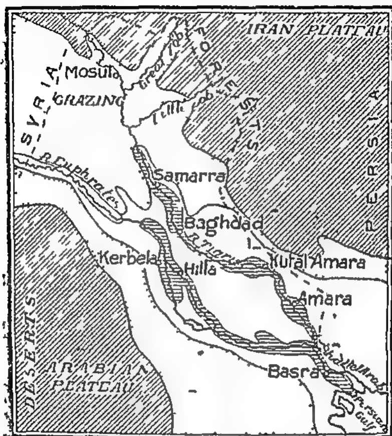


This is the market place at Quetta in Baluchistan

के पेड पाये जाते हैं। इन पेडों से एक लाभ यह है कि ये रेगिस्तानो के अन्दर रास्ते की खोज मे यात्रियो को सहायता पहुँचाते हैं।

मेसोपोटामिया का नीचा मैदान या इराक अजम

मेसोपोटामिया शब्द का अर्थ दोआब है। नक्शे में देखो कि यह भाग ईरान और अरब के सेटोओं के बीच का नीचा मैदान है। इस मैदान में दजला (Tigris) और फरात (Euphrates) दो नदियाँ बहती हैं। इसी कारण इस मैदान को मेसोपोटामिया का मैदान कहते हैं। गगा और जमुना के मैदान की ही भाँति



Land upto 500 ft high or lowlands
Uplands from 500 ft to 1500 ft high
Plateaux above 1500 ft
Land where Rice and Dates are grown

MESOPOTAMIA.
Physical features and cultivated areas

दजला और फ़रात का मैदान भी द्वाबा कहलाता है। फरात और दजला दोनों नदियाँ आरमीनिया के पहाड़ों से निकलकर इस मैदान में बहती हैं और फारस की खाड़ी के पास, एक दूसरी से मिलकर, शत्तुल अरब (Shatel Arab) बनाती तथा फ़ारस की खाड़ी में गिर जाती हैं।

मेसोपोटामिया एक बहुत ही सूखा प्रदेश है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है। गर्मी में कड़ी गर्मी और जाड़े में जाड़ा भी अच्छा पड़ता है। यहाँ का जलवायु सिन्ध-प्रान्त की भाँति है। यदि मेसोपोटामिया में दजला और फरात नदियाँ न होतीं तो यह स्थान अत्यन्त ही सूखा रेगिस्तान और ऊजड़ होता। परन्तु, नदियों की लाई हुई मिट्टी से बना होने के कारण यह मैदान बहुत उपजाऊ है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है जिसके कारण केवल नदियों के किनारे पर ही खेती होती है और बाक़ी हिस्से में कुछ नहीं उगता। नदी-किनारे के खेत नदी के पानी से सींचे जाते हैं। उनमें गेहूँ, मक्का, रुई और तम्बाकू बोई जाती है और खजूर के पेड़ भी बहुत हैं। इन नदियों के बीच की जो ज़मीन नदी से दूर स्थित है वह रेगिस्तान और ऊजड़ है।

पुराने समय में इन नदियों से बड़ी बड़ी नहरें निकाली गई थीं जिनके कारण देश के सूखे भाग में खेती होती थी। परन्तु कई शताब्दियाँ हुईं, लोगों ने इन नहरों की रक्षा करने में लापरवाही की जिससे ये नहरें बालू से भर गईं। आज कल फिर लोग सोच रहे हैं कि नहरें साफ करा दी जावें और उनके अतिरिक्त और भी नहरें बनवाई जावें जिससे देश का और भाग उपजाऊ हो जावे और यहाँ की पैदावार भी अधिक बढ़ जावे।

इस नदी के उत्तरी भाग में कुछ अधिक वर्षा हो जाती है इसलिए इस भाग में घास का मैदान है। इस भाग में

खानाबदोश लोग अपने जानवर—भेड, बकरी और ऊँट इत्यादि—चराते हैं।



Mosopotamia—Railways and routes

यहाँ गाँव, क़सबा और शहर केवल नदी के किनारे पर बसे हुए हैं। कारण यह है कि नदी-किनारे के सिवा किसी भाग में खेती-बारी नहीं होती। हर साल बरसात में जब पहाड़ों पर पानी बरसता है तो, इन नदियों में बाढ़ आ जाती है जिसके कारण कहीं कहीं नदी का पानी चौरस मैदानों में फैल जाता है। इससे इन मैदानों में दलदल बन गये हैं जो किसी लाभ के नहीं।

इस देश का मुख्य नगर बगदाद (Baghdad) दजला नदी के किनारे स्थित है। यहाँ पर दोनों नदियाँ एक दूसरी के समीप हो गई हैं। दजला इतनी बड़ी नदी है कि बगदाद तक छोटे छोटे जहाज चलाये जाते हैं। इसी जगह फारस से आनेवाले काफिलों का एक रास्ता नदी को पार करता है जिसके कारण यह नगर प्राचीन काल से व्यापार का एक केन्द्र हो गया है। पुराने ज़माने में इस नगर में राजधानी था। यहाँ के राजा खलीफा कहलाते थे और उनके समय में यह बड़ी सुन्दर जगह थी। अलिफ लैला में यहीं कहीं पर इसका वर्णन है। उत्तर की ओर काफिलों के व्यापार का एक और नगर है जिसको मोसल कहते हैं। फारस की खाड़ी के समीप, शत्तुल अरब के किनारे, बसरा एक बड़ा नगर और बन्दरगाह है। समुद्री जहाज बहुत आसानी से बसरा तक आ सकते हैं। इराक की मुख्य पैदावार खजूर यहाँ से जहाजों द्वारा दूसरे देशों को भेजा जाता है। इस शहर में मिट्टी का तेल साफ करने के कारखाने हैं। बसरा से एक रेल की लाइन बगदाद होती हुई मोसल को गई है। गंगा-जमुना के मैदानों की भाँति मेसोपोटामिया का मैदान भी दुनिया के पुराने बसे हुए और सभ्य भागों में से है। हजारों वर्ष हो गये कि यहाँ बाबुल और असीरिया के राज्य थे। इस राज्य में बड़े बड़े बादशाह राज्य करते थे। उस समय इन नगरों में बड़े बड़े बाग और भव्य इमारतें मौजूद थीं और इस मैदान में बड़ी बड़ी नहरें पाई जाती थीं। परन्तु अब बाबुल और निनवा (Nineveh) शहर के, जो असीरिया की राजधानी था, केवल खँडहर बाकी हैं। यह देश कई सौ बरस तक टर्की के अधीन रहा, परन्तु १९१४ के महायुद्ध के बाद अँगरेजों के अधिकार में आ गया। अब यहाँ अँगरेजों की देख-भाल में एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित हो गया है।

टर्की में एक प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हुआ। यहाँ के निवासी इस्लाम धर्म के माननेवाले थे। आज कल यह मुल्क बहुत उन्नति कर रहा है। बड़े बड़े शहरों में नये नये कारखाने खुलते जा रहे हैं और यहाँ के निवासी योरपवालों की रहन-सहन में मिलते जा रहे हैं। जैसे, पहले यहाँ स्त्रियाँ पर्दे में रहती थीं परन्तु अब पर्दे का रवाज बिलकुल उठ गया है। लड़के और लड़कियाँ सब पाठशालाओं और कालेजों में शिक्षा पाते हैं। मर्द और औरत दोनों दूकानों में क्रय विक्रय का काम करते हैं।

आरमीनिया (Armenia)

यह टर्की के पूर्व में एक ऊँचा पहाड़ी प्लेटो है। यहाँ चारों ओर के पहाड़ आकर मिल गये हैं। इन पहाड़ों की कोई कोई चोटियाँ बहुत ऊँची हैं जो वर्ष भर बर्फ से ढकी रहती हैं। इनमें सबसे ऊँची चोटी अरारात है। यह समुद्र की सतह से सत्रह हज़ार फीट ऊँची है।

गर्मियों में इन पहाड़ों की बर्फ पिघलने से कुछ नदियाँ बन गई हैं। इन नदियों से पहाड़ों के बीच उपजाऊ घाटियाँ बन गई हैं जिनमें कृषि होती है। यहाँ गल्ला, कपास, तम्बाकू, अगूर और दूसरे फल पैदा होते हैं। कुछ लोगों का मत है कि बाग़-अदन नाम का बाग, जहाँ हज़रत आदम पैदा हुए थे, इस प्लेटो में किसी जगह था।

यहाँ बहुत थोड़े दिनों तक गर्मी पड़ती है परन्तु बहुत ही मनोरंजक होती है। जाड़े का दिन बहुत बड़ा होता है और सर्दी भी बहुत पड़ती है। यहाँ के पहाड़ों के पश्चिमी ढालों पर वर्षा भी होती है और किसी किसी स्थान पर जंगल भी पाये जाते हैं। पहाड़ी ढालों के अधिकतर नीचे के भाग घास से ढके रहते हैं।

दरेस-रेस में एक प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हुआ। यहाँ के निवासी इस्लाम-धर्म के माननेवाले थे। आज कल यह मुल्क बहुत उन्नति कर रहा है। बड़े बड़े शहरों में नये नये कारखाने खुलते जा रहे हैं और यहाँ के निवासी योरपवालों की रहन सहन में मिलते जा रहे हैं। जैसे, पहले यहाँ स्त्रियाँ पर्दे में रहती थीं परन्तु अब पर्दे का रवाज बिलकुल उठ गया है। लड़के और लड़कियाँ सब पाठशालाओं और कालेजों में शिक्षा पाते हैं। मर्द और औरत दोनों दूकानों में क्रय-विक्रय का काम करते हैं।

आरमीनिया (Armenia)

यह टर्की के पूर्व में एक ऊँचा पहाड़ी प्लेटो है। यहाँ चारों ओर के पहाड़ आकर मिल गये हैं। इन पहाड़ों की कोई कोई चोटियाँ बहुत ऊँची हैं जो वर्ष भर बर्फ से ढकी रहती हैं। इनमें सबसे ऊँची चोटी अरारात है। यह समुद्र की सतह से सत्रह हजार फीट ऊँची है।

गर्मियों में इन पहाड़ों की बर्फ पिघलने से कुछ नदियाँ बन गई हैं। इन नदियों ने पहाड़ों के बीच उपजाऊ घाटियाँ बना दी हैं जिनमें कृषि होती है। यहाँ गल्ला, कपास, तम्बाकू, अंगूर और दूसरे फल पैदा होते हैं। कुछ लोगों का मत है कि बाग-अदन नाम का बाग, जहाँ हजरत आदम पैदा हुए थे, इस प्लेटो में किसी जगह था।

यहाँ बहुत थोड़े दिनों तक गर्मी पड़ती है परन्तु बहुत ही मनोरंजक होती है। जाड़े का दिन बहुत बड़ा होता है और सर्दी भी बहुत पड़ती है। यहाँ के पहाड़ों के पश्चिमी ढालों पर वर्षा भी होती है और किसी किसी स्थान पर जंगल भी पाये जाते हैं। पहाड़ी ढालों के अधिकतर नीचे के भाग घास से ढके रहते हैं।

इन घास के स्थानो में रहनेवालों का मुख्य पेशा भेड बकरियाँ चराना है।

आरमीनिया का मुख्य शहर अर्जरूम (Erzerum) है। यह एक नदी की उपजाऊ घाटी में बसा है। बड़ी लड़ाई से पहले आरमीनिया राज्य टर्की के अधीन था। परन्तु इस लड़ाई के बाद आरमीनिया स्वतन्त्र बना दिया गया। यहाँ के निवासी बहुत सुन्दर और स्वच्छ रंग के हैं। ये लोग बहुत दिनों से मसीही धर्म मानते हैं।

आजरबैजान (Azerbaijan)

यह एक छोटा देश आरमीनिया और कास्पियन सागर के बीच बसा है। इस मुल्क का अधिक भाग कूर नदी की घाटी में है। इसका मुख्य शहर बाकू (Baku) है। यह शहर मिट्टी के तेल के कुओं के लिए प्रसिद्ध है।

शाम या सीरिया (Syria)

यह देश अरब के पठार के उत्तर में स्थित है। इसके पश्चिम में रूम सागर है। शाम देश का पूर्वी भाग रेगिस्तानी है, लेकिन पश्चिमी किनारे पर, जो एक निचली पट्टी है, वर्षा जाड़े में होती है इसलिए यहाँ जैतून, नीबू, नारङ्गी, अंगूर, गेहूँ और जौ पैदा किये जाते हैं।

पहले शाम देश टर्की सलतनत का एक सूबा था, लेकिन महायुद्ध के पश्चात इस देश को दखरेख फ्रान्सीसियों के हाथ में आगई है। शाम का मुख्य नगर दमिश्क (Damascus) है। यह संसार के सबसे पुराने शहरों में माना गया है।

फिलस्तीन (Palestine)

शाम देश के दक्षिण में फिलस्तीन देश की रियासत स्थित है। यह यहूदियों का पवित्र देश था। इसकी राजधानी



A gateway of Jerusalem

इन घास के स्थानों में रहनेवालों का मुख्य पेशा भेड़-बकरियाँ चराना है।

आरमीनिया का मुख्य शहर अरजरूम (Erzerum) है। यह एक नदी की उपजाऊ घाटी में बसा है। बड़ी लड़ाई से पहले आरमीनिया राज्य टर्की के अधीन था। परन्तु इस लड़ाई के बाद आरमीनिया स्वतन्त्र बना दिया गया। यहाँ के निवासी बहुत सुन्दर और स्वच्छ रंग के हैं। ये लोग बहुत दिनों से मसीही धर्म मानते हैं।

आजरबैजान (Azerbaijan)

यह एक छोटा देश आरमीनिया और कास्पियन सागर के बीच बसा है। इस मुल्क का अधिक भाग कूर नदी की घाटी में है। इसका मुख्य शहर बाकू (Baku) है। यह शहर मिट्टी के तेल के कुओं के लिए प्रसिद्ध है।

शाम या सीरिया (Syria)

यह देश अरब के पठार के उत्तर में स्थित है। इसके पश्चिम में रूम सागर है। शाम देश का पूर्वी भाग रेगिस्तान है, लेकिन पश्चिमी किनारे पर, जो एक निचली पट्टी है, [illegible] जाड़े में होता है इसलिए वहाँ जैतून, नीबू, नारङ्गी, अंगूर [illegible] पैदा किए जाते हैं।

पहले शाम देश टर्की सलतनत का [illegible] महायुद्ध के पश्चात इस देश की देख रेख [illegible] आगई है। शाम का मुख्य नगर दमिश्क ([illegible] यह संसार के सबसे पुराने शहरों में माना गया [illegible]

फिलस्तीन (Palestine)

शाम देश के दक्षिण में फिलस्तीन [illegible] है। यह [illegible] का पवित्र देश [illegible]

यरूशलम (Jerusalem) है जिसको यहूदी और मसीही पवित्र नगर मानते हैं। महात्मा यीशु यहीं पैदा हुए थे ईसाई-धर्म का आरम्भ यहीं से हुआ था। फिलस्तीन का मुख्य बन्दरगाह जाफा



This is a caravan serai in Syria, showing the inner court where donkeys and camels are taking rest

(Jaffa) है। महायुद्ध से पहले फिलस्तीन टर्की के अधीन था, लेकिन लड़ाई के पश्चात् इसका प्रबन्ध अँगरेजों के हाथ में आगया। फिलस्तीन देश में होकर एक रेल की लाइन दमिश्क से पोर्ट सईद (Port Said) तक जाता है।

अरब का प्लेटो (Arabia)

यह प्रायद्वीप एक प्लेटो है और एशिया के दक्षिणी पश्चिमी में बसा है। लाल सागर और अदन की खाड़ी के कारण

यह अफ्रीका महाद्वीप से अलग है। इसका ढाल भी दक्षिणी हिन्द प्रायद्वीप की भाँति पश्चिम से पूर्व की तरफ है।

अरब का प्लेटो बिलकुल रेगिस्तान है, केवल इसके किनारे पर पहला भाग पहाडी और उसके बाद दूसरा भाग चमकता हुआ रेगिस्तानी मैदान है जहाँ पर हमेशा जलती हुई रेत दिखाई पडती है। यह भाग दक्षिण की ओर फैला हुआ है और तीसरा भाग एक बडा नखलिस्तान है, जिसमें कई चश्मे और उनकी घाटियाँ हैं। घाटियो के ढालो पर चरागाह हैं, खेती बारी भी होती है और फलो के पेड लगाये जाते हैं। इसी उपजाऊ भाग को नजद (Nejd) कहते हैं। नजद ही सारे अरब में आबाद और उपजाऊ कहा जाता है।

रेगिस्तानी स्थानो का जलवायु, जैसा हम जानते हैं, बहुत गर्म और कष्टदायक होता है। इस रेगिस्तान का जलवायु भी ऐसा ही है। लेकिन नजद में अगर दिन में गर्मी पडती है तो रात सर्द होती है। नजद के हर एक भाग में खजूर के पेड अधिक पाये जाते हैं। हर एक उपजाऊ भाग मे यहाँ खास तौर से खजूर के पेड़ बोये जाते हैं। अरब के कवि लोग खजूर के पेड को 'जङ्गल का बादशाह' कहते हैं। नजद मे अरब के प्रसिद्ध घोडे पाये जाते हैं जिनको वहाँ के लोग सब वस्तुओं से अधिक प्यारा समझते हैं।

नजद के अतिरिक्त और कई छोटे छोटे नखलिस्तान हैं जिनमे खेती बारी, फलो के बाग और खजूर के पेड़ लगाये जाते हैं। इन नखलिस्तानों के लोग हमेशा मकानो मे रहते हैं। बाकी लोग दूसरे रेगिस्तानी मुल्कों की भाँति खानाबदोश हैं और एक जगह से दूसरी जगह अपने ऊँट लिये फिरते हैं।

अरब के दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व के कोने पहाड़ी इन भागो मे कुछ वर्षा होती है और लोग गेहूँ

अरब के दक्षिण पूर्व में उमान (Oman) नाम का राज्य है और दक्षिण पश्चिम में यमन (Yemen) की रियासत है। यमन का मुख्य शहर मोखा (Mocha) कहवा के लिए प्रसिद्ध है।

अरब का क्षेत्रफल यद्यपि हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल के बराबर है लेकिन यहाँ की कुल आबादी दस लाख से भी कम है। इस समय भी यहाँ ऐसे भाग हैं जिनमें अब तक किसी मनुष्य का गुज़र तक नहीं हुआ। रेगिस्तान में आने-जाने की कठिनाइयों के कारण सारे अरब में एक ही बादशाह की हुकूमत नहीं रहती।



A part of an oasis in Arabia

अरब के निवासी, और उनमें भी ख़ास कर बद्दू नाम के जंगली, बड़े आतिथ्य-सत्कार करनेवाले होते हैं। अपने मेहमानों के आराम के लिए अपनी जान दे देना इनका

मामूली काम है। ये लोग एक सफ़ेद कुर्ता (जिस पर एक नमूना होता है) और उसके ऊपर ऊँट के बाल की एक अबा (लम्बा कपड़ा) पहनते हैं। इनके सिर पर सफ़ेद फेल्ट की टोपी होती है जिसके चारों ओर ये लोग रेशमी या सूती रस्सी लपेटे रहते हैं जिसके सिरे कंधों पर लटकते रहते हैं। हर एक जाति अथवा गुट अपने सरदार के अधीन होता है।

अरब के खंडों के पश्चिमी किनारे के क़रीब दो बड़े शहर मक्का (Mecca) और मदीना (Medina) हैं। मदीना में इस्लाम-धर्म के प्रचारक हज़रत मुहम्मद साहब की क़ब्र है। मक्का में काबा है और यही स्थान मुहम्मद साहब की जन्मभूमि है। यहाँ हर साल हर जगह के लाखों मुसलमान हज करने जाते हैं। इसी कारण यह शहर बड़ा व्यापारिक स्थान बन गया है। मक्का बहुत बड़ा मनोरंजक शहर है। इसकी सड़कें चौड़ी और इमारतें ऊँची ऊँची पत्थर की तथा हवादार हैं। हज के ज़माने में यहाँ की चहल पहल और रौनक़ देखने लायक़ होती है। हिन्दुस्तान से हज करने के लिए जानेवाले अधिकतर जहाज़ पर जिद्दा तक जाते हैं। जिद्दा (Jiddah) लाल सागर पर एक बन्दरगाह है। जिद्दा से ऊँट पर सवार होकर मक्का मदीना को जाते हैं। लेकिन उत्तर की तरफ़ से हज करने के लिए आनेवाले दमिश्क से मदीना तक रेल पर आते हैं। और मदीना से मक्का तक ऊँट पर जाते हैं। अरब के पश्चिमी भाग में हिजाज़ (Hejaz) की रियासत है। मक्का शहर उसकी राजधानी है।

अदन का मशहूर बन्दरगाह दक्षिण पश्चिमी किनारे पर, लाल सागर में जाने से कुछ पहले, स्थित है। यह बन्दरगाह अँगरेज़ों के अधिकार में है। इसका वर्णन पहले ही किया जा चुका है।

प्रश्न

१—ईरान और अरब के पठारों में वर्षा की कमी के क्या क्या कारण हैं ?

२—नखलिस्तान किसे कहते हैं ? ये रेगिस्तान के कैसे स्थानों में पाये जाते हैं ?

३—ईरान के प्लेटोओं के निवासियों के मुख्य उद्यम क्या हैं ?

४—टर्की देश या अनातोलिया वनस्पति के अनुसार किन किन भागों में बाँटा जा सकता है ? टर्की में सबसे अधिक आबादी किस भाग में है ? इस भाग के लोगों के मुख्य उद्यम कौन से हैं ?

५—नीचे लिखे स्थानों के बारे में जो जानते हो बताओ —
नजद, काबुल की घाटी, शीराज, दमिश्क, फिलस्तीन।

६—मेसोपोटामिया की मुख्य उपजों को बताओ और यह भी बताओ कि वे कहाँ कहाँ पाई जाती है।

अभ्यास

१—पश्चिमी एशिया के एक नक्शे में कुल देशों को उनकी राजधानियों के साथ दिखाओ।

२—एक दूसरे नक्शे में यह भाग इस प्रकार बाँटो—(१) रेगिस्तान, भूरे रङ्ग से, (२) पहाड़ी स्थान और जंगल, हरे रङ्ग से, (३) उपजाऊ मैदान जहाँ खेती होती है, लाल रङ्ग से, (४) घास के मैदान जहाँ चराई होती है, पीले रङ्ग से।

तेरहवाँ प्रकरण

पास पडोस की सैर

हिन्दुस्तान और एशिया के अन्य देशों का भूगोल पढ़ते समय तुम देखते आये हो कि दुनिया के सम्पूर्ण भाग मे वनस्पतियो और फसलो की उपज के लिए न तो अधिक वर्षा होती है और न हर स्थान में जमीन इस काबिल होती है कि उस पर खेती की जाय। क्योंकि वनस्पतियों के लिए नर्म मिट्टी, अधिक गर्मी तथा वर्षा के अतिरिक्त सूर्य्य की रोशनी और खाद की आवश्यकता है। जिस प्रकार मनुष्यो और जानवरो को समय पर खूराक मिलने की आवश्यकता होती है उसी प्रकार वनस्पतियो को भी एक नियत समय पर इन चीजो की आवश्यकता होती है। यदि वनस्पतियो को ठीक समय पर आवश्यकता से कम अथवा अधिक गर्मी और वर्षा अथवा खाद मिलेगी तो वे मनुष्यो की तरह दुबली पतली और कमजोर हो जायँगी।

इन सब बातों के अतिरिक्त खेती की फसलें इस कारण भी खराब हो जाया करती हैं कि वे ठीक समय पर बोई और काटी नहीं जातीं—या उस समय वर्षा हो जाती अथवा सिँचाई कर दी जाती है जब इन्हे पानी की बिलकुल आवश्यकता नहीं रहती। यदि तुम खेती अथवा कृषि-शास्त्र जानना चाहो या यह कि देहाती किसान किस होशियारी और परिश्रम से तुम्हारे लिए तरह तरह के अनाज, कपास, तिलहन और सन आदि की अच्छी फसलें पैदा करते हैं, तो तुम साल में कम में

कम से कम दो बार खेतों की सैर करने जाओ और अपनी सैर में खेतों के विषय में निम्नलिखित बातें ज्ञात करो—

(१) फसलों के बोने का उचित समय, फायदा और तैयारी की दशाएं।

(२) फसलों के सींचने और काटने का समय और इनको बाजार के लिए तैयार करने का ढङ्ग।

(३) वर्ष के भिन्न भिन्न समयों में फसलों के लायक जल वायु। खेतों की सैर करने के लिए तुम सितम्बर और मार्च के आरम्भ में और हो सके तो एक बार जुलाई के आरम्भ में भी जाओ तो अच्छा हो।

जुलाई में खेतों की सैर—यदि तुम जुलाई में खेतों की सैर करने जाओ तो तुम वर्षा के आरम्भ में किसानों को खेतों में उन फसलों को बोते हुए देखोगे जो अधिकतर गर्मी और बरसात में ही पनप सकती हैं अथवा गर्म और नर्म जलवायु में फूलती फलती हैं। इनमें से मुख्य ज्वार, बाजरा, धान, मक्का, ईख, अरहर, तिल हैं। ये सब चीजें खरीफ की फसल कही जाती हैं। अपनी सैर में इस बात को ध्यान से देखो कि इन चीजों के लिए किसानों को खेतों की तैयारी में अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता। केवल एक बार खेत जोत कर बो दिये जाते हैं। परन्तु इस बात की कोशिश और खबरदारी अवश्य करनी पड़ती है कि इनके बोने में देर न हो जाय अर्थात् पहली या दूसरी वर्षा के होते ही ये चीजें बो दी जाती हैं ताकि वर्षा का पानी सूखने से पृथ्वी की गर्मी इतनी न निकल जाय कि बीज में अखुआ ही न फूटे। किसान को इस बात का भी ध्यान रहता है कि बोने के बाद कहीं शीघ्र ही वर्षा न हो जाय जिससे खेत की मिट्टी इतनी तर हो जाय कि अँखुआ उसे फाड़ कर ऊपर न आ सके।

सितम्बर और अक्टूबर मे खेतों की सैर—सितम्बर या अक्टूबर में जब तुम दूसरी बार खेतो की सैर को जाओगे तो उन चीजो को पकी हुई पाओगे। जो आषाढ़ या जुलाई में बोई गई थीं। उनमें से केवल अरहर और ईख तैयार न होगी और इसकी तैयारी के लिए कई महीने लगेगे। कपास और अरण्ड की भी कटनी आखिर अक्टूबर तक शुरू हो जाती है। अक्टूबर का महीना हमारे मुल्क मे खरीफ के कटने का महीना है। इस महीने के अन्त तक वर्षा खतम हो जाती है। आसमान साफ दीखता है और जलवायु गर्म तथा नम हो जाता है अर्थात् जुलाई की भाँति न तो अधिक गर्मी पड़ती है और न अधिक सर्दी। इस अच्छे मौसम मे किसान फ़सलो को काट कर खलिहान में इकट्ठा कर लेते हैं और मड़ाइ करके दाना अलग कर देते हैं।

अगर तुम किसी 'अग्रिकल्चरल फार्म' अथवा कृषिकालेज के खेतों की सैर करने जाओ तो तुम देहाती किसानो के सादे हल और खेती के अन्य औजारो के अलावा नये ढङ्ग के हल देखोगे जिसमे जुताई बहुत गहरी होती है। इसके अतिरिक्त तुम वहाँ खेतो को बराबर करने, घास फूस जमा करने, जानवरो का चारा जमा करने और काटने आदि की नई नई कल मोटरो की ताक़त से चलती हुई देखोगे। इस सैर मे तुम किसानो को वे खेत तैयार करते देखोगे जिनमे गेहूँ, जौ, चना, सरसों आदि बोये जाते हैं। इसको रबी अथवा जाड़े की फसल (Winter Crop) कहते हैं। इस फ़सल के लिए खेतो की तयारी में किसानों को बहुत मिहनत करनी पड़ती है। खेतों को कई बार जोतकर मिट्टी को मुलायम, भुरभुरी करना पड़ता है। जिसमें रबी के पौधों की नरम जड़ सरलता से किसी तरह गहराई तक फैल सकें और भूमि से अपनी खुराक प्राप्त कर सके। इसके अतिरिक्त खेतो मे खाद डालकर मिट्टी को शक्तिशाली बनाना पड़ता है।